सुनहरे अक़वाल

(कथन)

मकतबा अल हसनात

सुनहरे अक़वाल

(कथन)

पढ़िये और अमल कीजिये

हिन्दी सम्पादक
एफ़० ए० मालिक

मकतबा अल हसनात

सूची

हज़रत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

(571 ई० ता 632 ई०)

महान व आख़िरी औतार, रहमतुल-लिल्आलमीन, मुहसिने इंसानियत सरवरे आलम, फ़ख़्रे मौजूदात, हादिए कुल, रसूले मक़बूल, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, पिता का नाम हज़रत अब्दुल्लाह जो आप के जन्म से पहले ही मृत्यु पा चुके थे। माँ का नाम हज़रत आमिना बिन्ते वहब। दादा अब्दुल मुत्तलिब ने आप का नाम "मुहम्मद" रखना पसंद किया।

जन्म से ले कर आख़िरी साँस तक आप के पवित्र जीवन का हर लम्हा चमकता दमकता और भरपूर है। पवित्रता, सच्चाई, अमानत अचलता (अटल रहना) दया व क्षमा, विशवास, निस्पृहता, बलिदान, शुक्र, सब्र के पैकर, आँहज़रत स० ने 63 वर्ष की उम्र इस शान से गुज़ारी कि अक़्ल दंग रह जाती है। आप स० जीवन के हर लम्हे के बारे में सबक़, अपने अमल से देने वाले थे।

आगे आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चन्द अहादीस बयान की जा रही हैं। पढ़िए और अमल कीजिए:

रसूले अकरम स० ने फ़रमाया

1. अपने भाई की मदद करो, चाहे वह अत्याचारी हो या नृशंसित (अत्याचार को सहन करने वाला)। नृशंसित की मदद यह है कि अत्याचारी से उसे छुड़ाया जाए और अत्याचारी की मदद यह है कि उसे अत्याचार से रोका जाए।
2. किसी इंसान के दिल में ईमान और ईर्ष्या इकट्ठे नहीं रह सकते।
3. जहाँ तक हो सके हर एक से नेकी करो चाहे नेक हो या बुरा।
4. जो शख़्स बिना आज्ञा अपने भाई के पत्र को देखे वह आग को देखेगा।
5. हलाल चीज़ों में से जो चाहो खाओ और पहनों लेकिन उस में दो चीज़ें न हों (1) फ़ुज़ूल ख़र्ची (2) घमंड
6. पड़ोसी का हक़ चारों तरफ़ 40-40 घरों तक है।
7. जो ईश्वर और क़यामत पर ईमान रखता है उसे कह दो कि पड़ोसी का आदर करे।
8. काफ़िर पड़ोसी का एक हिस्सा हक़ है। मुसलमान पड़ोसी का दो गुना और रिश्तेदार पड़ोसी का तीन गुना।

9. वह शख़्स जो बड़ों का आदर और छोटों पर दया नहीं करता, वह मेरी उम्मत में से नहीं है।
10. पेट से बढ़ कर कोई बुरा बरतन नहीं।
11. जो शख़्स इस बात से ख़ुश हो कि लोग उस के लिए सम्मान के तौर पर खड़े हों वह अपना ठिकाना आग में समझे।
12. दुनिया की कोई चीज़ तुम्हारे पास न हो, लेकिन यह चार चीज़ें हों तो तुम्हें कोई नुक़सान नहीं (i) बात करने का तरीक़ा (ii) अमानत की हिफ़ाज़त करना (iii) अच्छी आदत (iv) हलाल ग़िज़ा (आहार)।
13. ईश्वर के नज़दीक दो क़तरों (विन्दु) से बढ़ कर कोई क़तरा पसंन्द नहीं। पहला आँसू का क़तरा जो ख़ुदा के डर से निकले, दूसरा ख़ून का क़तरा जो ख़ुदा की राह में गिरे।
14. बाज़ार से बच्चों के लिए जो चीज़ लाओ पहले लड़की को दो फिर लड़के को।
15. तुम मेरे पास हसब व नसब ले कर नहीं कर्म ले कर आओ।
16. किसी भाई की ज़रूरत पूरी करने वाला ऐसा है कि गोया उस ने तमाम उम्र ख़ुदा की ख़िदमत में बिता दी।
17. जो शिक्षा की राह पर चलता है, अल्लाह उस के लिए स्वर्ग का रास्ता आसान कर देता है।

18. शिक्षा हासिल करना हर मुसलमाल मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है।
19. जिस ने शिक्षा का रास्ता अपनाया उस ने स्वर्ग का रास्ता अपनाया।
20. जिस ने शिक्षा हासिल करने में मृत्यु पाई गोया वह शहीद हुआ।
21. जिहालत ग़रीबी की बदतरीन शक्ल है।
22. जन्म से मौत (क़ब्र) तक शिक्षा हासिल करो।
23. शिक्षा बग़ैर कर्म के वबाल है और कर्म बग़ैर शिक्षा के तबाही है।
24. हमेशा सच्ची और हक़ बात कहो अगरचे कड़वी ही हो।
25. तीन काम ऐसे हैं जो इंसान की मौत के बाद भी जारी रहते हैं। (i) सदक़ए जारिया (ii) वह शिक्षा जिस से लोग फ़ायदा उठाएँ (iii) नेक संतान जो उस के लिए दुआ करे।
26. बुलंद हिम्मती ईमान की निशानी है।
27. वह शख़्स बेदीन है जिस में ईमानदारी नहीं।
28. बेहतरीन लोग वह हैं जो अच्छे सदाचार के मालिक हैं।
29. अपनी मेहनत की कमाई से बेहतर खाना किसी शख़्स ने कभी नहीं खाया।
30. ख़ामोशी बहुत बड़ी हिकमत है।
31. समता अख़्तियार करने वाला किसी का मुहताज नहीं

होता ।

32. कर्म नियतों के साथ हैं। हर शख़्स को उसी का बदला मिलेगा जिस की उस ने नियत की है।

33. कपटाचारी की तीन निशानियाँ हैं।

    (i) जब बोले तो झूठ बोले।

    (ii) वादा करे तो पूरा न करे।

    (iii) अमानत ले तो ख़्यानत करे।

34. हर नशे वाली चीज़ हराम है।

35. मोमिन की मिसाल खेती के पौदों की है जिसे हवा कभी झुका देती है कभी सीधा कर देती है और मुनाफ़िक़ की मिसाल सुनूबर के दरख़्त की है जो खड़ा रहता है यहाँ तक कि एक ही दफ़ा उखड़ जाता है।

36. अल्लाह तआला ने हर बीमारी की शिफ़ा भी पैदा की है।

37. दुनिया में इस तरह रहो गोया प्रदेसी हो या राह चलने वाले।

38. ईमान और कंजूसी एक जगह इकट्ठे नहीं हो सकते।

39. वह ज़लील हुआ जिस ने माँ बाप को बुढ़ापे में पाया और उन की सेवा कर के स्वर्ग न हासिल की।

40. तुम में से बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और दूसरों को सिखाए।

41. मय्यित (शव) के पीछे तीन चीज़ें चलती हैं, दो लौट आती हैं और एक रह जाती है। उस के पीछे उस के घर वाले,

उस का माल और उस के कर्म चलते हैं। घर वाले और माल लौट आते हैं मगर कर्म साथ रह जाता है।

42. आदमी के झूटा होने के लिए यही काफ़ी है कि वह सुनी सुनाई बात बग़ैर जाँचे परखे आगे बयान कर दे।
43. दुनिया मोमिन का क़ैदख़ाना है और काफ़िर की जन्नत।
44. हर गुनाह की तौबा है मगर अशिष्टी की नहीं।
45. शिर्क के बाद बदतर गुनाह ख़ुदा के बन्दों को तकलीफ़ पहुँचाना है और ईमान के बाद अफ़ज़ल तरीन नेकी ख़ुदा के बन्दों को राहत पहुँचाना है।
46. दुनिया की मुहब्बत हर ख़ता की जड़ है।
47. इंसाफ़ की बात ज़ालिम बादशाह के सामने कहना बहुत बड़ा जिहाद है।
48. सब्र ईमान से ऐसे मिला हुआ है जैसे सिर से जिस्म मिला हुआ है और सब्र ईमान की रौशनी है।
49. रिश्वत लेने और देने वाला दोनो जहन्नमी हैं।
50. जिस शख़्स ने हलाल तरीक़े से रोज़ी तलाश की और लोगों के सामने हाथ फैलाने से रुका अपने बच्चों की रोज़ी के लिए प्रयास किया और अपने पड़ोसी से अच्छी तरह से पेश आया तो अल्लाह तआला उस से इस शान से मुलाक़ात करेगा कि उस शख़्स काचेहरा चौदहवीं के चाँद की तरह चमक रहा होगा।
51. नर्क में पहुँचाने वाला काम, झूठ बोलना है।

52. जो झूठ बोल बोल कर लोगों को हँसाए उस के लिए सख़्त अज़ाब है।
53. अगर कोई बुरा काम देखे मगर मना न करे तो अल्लाह अज़ाब नाज़िल करेगा और सब को उस में घेर लेगा।
54. अल्लाह अत्याचारी को फ़ुरसत देता है मगर जब पकड़ता है तो फिर नहीं छोड़ता।
55. जो मौत को याद रखे और उस की अच्छी तरह तयारी करे वह सब से ज़्यादा अक़्लमंद है।
56. ठोकर के बग़ैर कोई सब्र करने वाला नहीं बनता, तजुर्बे के बग़ैर कोई होशयार नहीं होता।
57. अक़्लमन्द वह है जो अपने अस्तित्व (नफ़्स) की रक्षा करे और मौत के बाद के लिए अमल करे। निर्बल (कमज़ोर) वह है जो अस्तित्व का कहा माने और ख़ुदा से उम्मीद रखे।
58. अल्लाह कहता है कि तीन आदमियों का क़यामत के दिन मैं दुश्मन हूंगा।
(i) वह जो मेरे नाम पर वादा करे और फिर तोड़ दे।
(ii) जो किसी आज़ाद को बेच कर उस की क़ीमत खाए।
(iii) जो किसी को मज़दूरी पर लगाए और काम होने पर उस को मज़दूरी न दे।
59. जो दया नहीं करता उस पर दया नहीं की जाएगी।
60. ताक़तवर वह नहीं जो दूसरों को पिछाड़ दे, ताक़तवर तो

वह है जो गुस्से में अपने आप पर क़ाबू रखे।

61. मोमिन एक सुराख़ से दो बार नहीं डसा जाता।

62. मालदारी माल की कसरत से नहीं बल्कि मालदारी दिल की मालदारी है।

63. चुग़ली करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा।

64. एक दूसरे की ख़ुशामद न करो यह ऐसा है जैसे किसी को हलाक करना।

65. मोमिन को चाहिए अपने आप को ज़लील न करे जो काम ताक़त से बाहर हो उस में हाथ न डाले।

66. सादगी ईमान की अलामत है।

67. तमाम बुरी आदतों में दो सब से बुरी हैं।

(i) बहुत ज़्यादा कंजूसी।

(ii) बहुत ज़्यादा कायर्ता।

68. जब कोई मुसलमान मेवादार दरख़्त लगाता है और उस के मेवेपंछी इंसान और जानवर खाते हैं तो वह दरख़्त क़यामत तक के लिए उस शख़्स के लिए जारी रहने वाला सदक़ा बन जाता है।

69. बहुत ज़्यादा न हँसा करो, ज़्यादा हँसी से दिल सख़्त हो जाता है।

70. हसद नेकियों को ऐसे खा जाता है जैसे आग लकड़ी को और सदक़ा गुनाहों को ऐसे बुझा देता है जैसे पानी आग को।

71. हया और कम बोलना ईमान की शाख़ें हैं।

72. जो आदमी ख़ूनी रिश्तों को तोड़े वह जन्नत में दाख़िल न होगा।
73. एक आदमी बात करे और वह राज़ की बात हो तो वह अमानत है।
74. ख़रीदने व बेचने में क़सम खाने से बचे रहो। वह माल बिकवा देती है मगर फिर उसे मिटा देती है।
75. अल्लाह दो बातों को पसन्द करता है सब्र और समता।
76. दो आदतें मोमिन में नहीं होतीं कंजूसी और बुरे सदाचार।
77. मुसलमान को गाली देना पाप है और उस से जंग करना कुफ़्र।
78. मुसलमान, मुसलमान का भाई है उस पर ज़ुल्म न करे न उसे ज़लील करे न हक़ीर समझे।
79. जन्नत माँ के क़दमों तले है।
80. जो धोका दे वह हम में से नहीं।
81. रोना दिल को रौशन करता है।
82. बाप जन्नत के बड़े दरवाज़ों में से है चाहो तो उसे खो दो चाहो तो सुरक्षित कर लो।
83. अल्लाह की प्रसन्नता बाप की प्रसन्नता में है और अल्लाह का गुस्सा बाप के गुस्से में है।
84. दुनिया दौलत है और दुनिया में अच्छी दौलत नेक औरत है।
85. औरत से चार बातों कि वजह से विवाह किया जाता है।

(i) माल के लिए।

(ii) ख़ानदान के लिए।

(iii) ख़ूबसूरती के लिए।

(iv) दीन के लिए।

बेहतर है कि दीन के लिए करे।

86. मज़लूम की आह से डर कि उस के और अल्लाह के बीच कोई पर्दा नहीं।

87. इंसाफ़ की एक घड़ी सालों की इबादत से बेहतर है।

88. शरीफ़ तबीयत के लोग औरत की इ़ज़्ज़त करते हैं और कमीनों के सिवा औरत की तौहीन कोई नहीं करता।

89. सब से बड़ी नेकी अपने दोस्तों और साथियों की इ़ज़्ज़त करना है।

90. दुनिया आख़िरत की खेती है जो बोओगे वही काटोगे।

91. ज़ुबान से अच्छी बात के सिवा कुछ न कहो।

92. जो शख़्स अपना ग़ुस्सा निकाल लेने की ताक़त रखता हो और फिर सब्र कर जाए, उस के दिल को ख़ुदा सुकून और ईमान से भर देता देता है।

93. झूठी गवाही इतना बड़ा गुनाह है कि शिर्क के क़रीब जा पहुँचता है।

94. बदतरीन शख़्स वह है जिस के डर से लोग उस की इ़ज़्ज़त करें।

95. अपने किसी भाई को मुश्किल में देख कर ख़ुश मत हो, मुम्किन है अल्लाह उसे मुश्किल से निकाल कर तुम्हें मुश्किल में डाल दे।

96. खाना खिलाना और जाने अंजाने को सलाम करना बेहतरीन सलाम है।

97. सवार पैदल को, चलने वाला बैठे को और थोड़े लोग ज़्यादा लोगों को सलाम करें।

98. सलाम में पहल करने वाले को 90 और जवाब देने वाले को 10 नेकियाँ मिलती हैं।

99. जो शख़्स अल्लाह से डरता है वह बदला नहीं लेता।

100. मोमिन की जुबान दिल के पीछे होती है। यानी वह सोच समझ कर बोलता है।

101. जो शख़्स दूसरे को नेक काम की सलाह देता है तो उसे उसी के बराबर सवाब मिलता है जितना नेकी करने वाले को और जो किसी को बुरे काम की सलाह देता है उसे उसी के बराबर गुनाह होता है जितना बुरा काम करने वाले को।

102. ग़ल्ले को रोक कर बेचने वाला मलऊन (धिक्कृत) है।

103. औरतों में सब से अच्छी वह है जिसे उस का पति देखे तो खुश हो जाए।

104. खुदा के नज़दीक बेहतरीन दोस्त वह है जो अपने दोस्त का भला चाहने वाला हो।

105. नर्म मिज़ाज और नर्म आदत वाले शख़्स पर दोज़ख़ की आग हराम है।

106. जब तुझे नेकी कर के खुशी और बुराई कर के पछतावा

हो तो तू मोमिन है।

107. अपने मुसलमान भाई से मिलते वक़्त तुम्हारा मुसकुरा देना भी सदक़ा है। अच्छी बात कहना और बुराई से रोकना और भटके हुए को राह दिखाना भी सदक़ा है।

108. जिस चीज़ का मैं ने हुक्म दिया उस पर अमल करो, जिस चीज़से मना किया उस से रुक जाओ, तुम से पहली उम्मतें अपने नबियों से विरोध की वजह से हलाक हो गई थीं।

109. अपने माता पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो, तुम्हारी संतान तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करेगी।

❖ ख़ुदा उन को दोस्त रखता है जो दूसरों पर दया करते हैं, एहसान करते हैं, क्षमा करते हैं और उन की भलाई चाहते हैं।

(अलक़ुरआन)

❖ माता, पिता, रिश्तेदारों, ग़रीबों, मुसाफ़िरों से अच्छा व्यवहार करो।

(अलक़ुरआन)

हज़रत सुलेमान (अलैहिस्सलाम)

(924 ता 992 क़॰म॰)

ख़ुदा के औतार, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के बेटे। आप जिन्नात व इंसान और पंछियों के बादशाह थे और सारी मानवजाति आप के बस में थी।

1. अक़्लमन्द इल्म दोस्त और कम बोलने वाला होता है और बेवकूफ़ भी जब तक ख़ामोश रहता है अक़्लमन्द समझा जाता है।
2. वह शख़्स जो अपने गुनाहों को छुपाता है कामियाब न होगा मगर जो गुनाह को कुबूल कर के उसे छोड़ कर तौबा करता है उस पर रहमत नाज़िल होती है।
3. शिक्षा और ख़ुदा के डर से रहमत मिलती है।
4. बेहतरीन ख़ैरात शिक्षा है।
5. बेहतरीन शिक्षा सब से अच्छा जहेज़ है।
6. किसी शख़्स का पढ़ा लिखा होना उस की बेहतरीन दौलत है।
7. झगड़े को तेज़ हो जाने से पहले छोड़ दो।
8. तेरे माता पिता ने जो पुरानी सीमाएँ बाँधी हैं उन को मत सरकाओ।

9. मीठे बोल गुस्से को दूर करते हैं।
10. अक़लमन्द वह है जिसे गुस्सा देर से आता है।
11. जो ग़रीबों पर दया करता है वह ख़ुदा का आदर करता है। जो ग़रीबों पर अत्याचार करता है वह उस की तौहीन करता है।
12. बादशाह की रौनक़ प्रजा की ख़ुशहाली और प्रजा की ग़रीबी बादशाह की तबाही है।
13. अक़लमन्द वह है जो दूसरों की नसीहतें सुनता है।
14. दिल के राज़ ज़ाहिर करने वाला जाहिल और उसे आख़िर तक छुपाने वाला अक़लमन्द है।
15. बेवक़ूफ़ के हाथों पैग़ाम भिजवाना अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारने की तरह है।
16. झूटे गवाह से ख़ुदा वंद करीम नफ़रत करता है और सच्चे गवाह को सीधा रास्ता दिखाता है।
17. हसद बदन को गला देता है जबकि क़नाअत (निस्पृहता) बदन को ताज़गी बख़्शती है।
18. शरीर सीधे साधे लोगों की और बुरे नेकों की आज्ञा पालन कुबूल नहीं करते।
19. उस का मुँह कंकरों से भरा जाएगा जो दग़ा की रोटी खाएगा।
20. सच कभी झूट से शकिस्त (हार) नहीं खाता।
21. नुकताचीनी (आलोचक) करने वाला आफ़त में गिरता है।

22. पड़ोसी को कल पर मत टाल, बल्कि उस की ज़रूरत उसी वक़्त पूरी कर दे।

23. सच्चा आदमी सात बार गिरता है और फिर उठ खड़ा होता है मगर बुरा आदमी मुसीबत में गिर कर पड़ा रहता है।

24. जो शख़्स ख़ामोश रहता है वह बहुत अक़्लमन्द है क्यों कि ज़्यादा बालने से कुछ न कुछ गुनाह हो जाते हैं।

हज़रत इदरीस (अलैहिस्सलाम)

अल्लाह के औतार, कुरआन पाक की दो सूरतों में आप का ज़िक्र आया है। सुरए मरयम, और सुरए अंबिया में। मशहूर यह है कि आप हज़रत आदम और हज़रत नूह के बीच वाले ज़माने में हुए और आप का वतन बाबुल था।

1. झूटी क़सम न खाओ, न लोगों को झूटी क़समें खाने पर मजबूर करो। ऐसा करने से तुम ख़ुद भी गुनाह में साझी हो जाओगे।
2. अल्लाह के ईमान के साथ सब्र सेहतमंदी का कारण है।
3. दुनिया की याद और नेक आमाल के लिए नियत का ठीक होना ज़रूरी है।
4. नफ़्स की हिफ़ाज़त करो वर्ना बदक़िस्मत कहलाओगे।
5. अगर नेक काम और शिक्षा में कमाल हासिल करना चाहते हो तो जिहालत की बातों और बुरे कामों के क़रीब भी मत जाओ।
6. वह कभी भी निश्चिंत और संतोषी नहीं हो सकता जो ज़िन्दगी की ज़रूरतों के अलावा भी और दूसरी चीज़ों की लालच रखे।
7. ख़ुदा की नेमतें बेइन्तिहा हैं उन का शुकरिया अदा करना इंसान के बस से बाहर है।
8. रूह की ग़िज़ा और ज़िन्दगी सिर्फ़ हिकमत है।

हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम)

(तक़रीबन 4 या 8 क़॰म॰ ता 28 ई॰ या 30 ई॰)

ख़ुदा के औतार, मसीही धर्म के बनाने वाले, पवित्र किताब इंजील आप अलैहिस्सलाम पर उतारी गई, रुहुल्लाह लक़ब है।

1. बदन का चिराग़ तेरी आँख है। बस अगर तेरी आँख दुरूस्त है तो तेरा सारा बदन रौशन हो जाएगा अगर तेरी आँख ख़राब है तो तमाम बदन तारीक हो जाएगा।
2. मैं मुर्दों को ज़िन्दा करने से आजिज़ नहीं आया लेकिन मूर्ख़ और जाहिल का सुधार करने से आजिज़ आ गया।
3. दुनिया में सिर्फ़ दो चीज़ें, सुख़न दिलपज़ीर और दिल सुख़न पज़ीर ही पसंदीदा चीज़ें हैं।
4. ऊँट सूई के नाके से गुज़र जाएगा लेकिन मालदार अमीर ख़ुदा की बादशाहत में शरीक न हो सकेगा।
5. पुन्न के काम वह है जिस पर लोगों की तारीफ़ की उम्मीद न रखी जाए।
6. सफ़र दो तरह का होता है और दोनों के लिए तोशा ज़रूरी है। दुनिया के सफ़र में तोशा साथ रखो और आख़िरत के सफ़र में रवानगी से पहले भेज जाओ।

7. अगर तुम लोगों के कुसूर माफ़ करोगे तो अल्लाह तुम्हारे कुसूर माफ़ करेगा।
8. दिखावा सवाब को ग़ारत कर देता है।
9. आलिम बेअमल की मिसाल ऐसी है जैसे अंधे ने चिराग़ उठा रखा हो। लोग उस से रोशनी हासिल करें और वह ख़ुद अंधेरे में रहे।
10. पती और पत्नी दो नहीं, एक जिस्म की तरह हैं, इस लिए जिसे ख़ुदा ने जोड़ा है इंसान उसे जहाँ तक हो सके जुदा न करे।
11. इस दुनिया में नेक चलनी का रास्ता दूसरी दुनिया में निजात की सड़क है।
12. देखो! अच्छे काम लोगों को दिखाने के लिए न करो वरना ख़ुदा के यहाँ तुम्हारे लिए कोई बदला न होगा।
13. जब तुम ख़ैरात करो तो जो तुम्हारा दायाँ हाथ करता है उस की ख़ब्र बाएँ हाथ को न हो।
14. गुनाह का पश्चाताप, इबादत के घमंड से कई दरजा बेहतर है।
15. माँगोगे तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूँढोगे तो पाओगे, दरवाज़ा खटखटाओगे तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।
16. अपने लिए माल ज़मीन पर जमा न करो जहाँ कीड़ा और ज़ंग ख़राब करता है और चोर चुरा लेते हैं, बल्कि अपने लिए आसमान पर माल जमा करो जहाँ न कीड़े का डर

है न चोर का, क्योंकि जहाँ तेरा माल होगा वहीं तेरा दिल लगा रहेगा।

17. जो शख़्स यह कहे कि मैं ख़ुदा से मुहब्बत करता हूँ लेकिन वह अपने भाई से नफ़रत करता है तो वह झूटा व मक्कार है क्यों कि जो आँखों से नज़र आने वाले इंसान से नफ़रत करता है वह न दिखाई देने वाले ख़ुदा से मुहब्बत किस तरह कर सकता है। असल में मानव जाति से मुहब्बत ही ख़ुदा से मुहब्बत है।

हज़रत लुक़मान (अलैहिस्सलाम)

प्रसिद्ध औतार, (संदेश वाहक) जिन का ज़िक्र कुरआन पाक में भी आया है। आप ने वहदत (ख़ुदा का एक होना) का और ख़ुदा की बड़ाई का प्रचार किया।

1. दोस्त से राज़ की बात मत कह, हो सकता है कल को वह तुम्हारा दुश्मन बन जाए।
2. ख़ुदा के लिए जो काम करो उस में बन्दों का डर न करो।
3. जिस नेमत में शुक्र है उस को गिराव नहीं है जिस नेमत में नाशुकरी है उस को स्थिरता (पायदारी) नहीं है।
4. दोस्ती के हक़ को निजात की पूंजी ख़्याल कर कि बग़ैर पूंजी के कुछ फ़ायदा न होगा।
5. जाहिल लोगों से कम मिल वरना वह तुझे भी जाहिल बना देंगे।
6. कमीनों के मुक़ाबिले में ख़ामोश रहा करो।
7. मौत को हर वक़्त सामने रखो और दुनिया की मुसीबतों को आसान ख़्याल करो।

8. ज़्यादा सुनो और कम बोलो।
9. खाने से भूका और बुद्धि (अक़्ल) से संतुस्ट रहो।
10. आग की एक चिंगारी की तरह एक बुरी बात इंसान की हालत को तबाह कर देती है।
11. अस्तित्व के सुधार में मसरूफ़ रहो उस से बुरे गुणों के बजाए नेक गुण पैदा होंगे।
12. जुबान की बुराई से सुरक्षित रहना चाहते हो तो ख़ामोश रहो।
13. खुद नेकी करो और दूसारों को नेकी करना सिखाओ।
14. जिस महफ़िल में खुदा का ज़िक्र हो उस में हिस्सा लो और बुरों की महफ़िल से दूर रहो।
15. नमाज़ में दिल की, मजलिस में जुबान की, ग़ज़ब में हाथ की और दसतरख़्वान पर पेट की हिफ़ाज़त करो।
16. सच बात को न छुपाओ और झूट मत बोलो।
17. जिस्म कि सेहत से बेहतर कोई मालदारी और इस्तिग़ना (निस्पृहता) से बेहतर कोई नेमत नहीं है।
18. अकुलमंदों का साथ इख़्तियार करो, यह मश्किल वक़्त में तेरी मदद करेंगे।
19. दीन की नेमत ही सब से बेहतर नेमत है। दूसरे नम्बर पर हलाल माल है।
20. लालच मत करो और जितना अल्लाह ने दिया है उस पर संतोषी रहो।

21. अगर तुम बुरी आदत वाले को कोई राज़ दोगे तो वह खोल देगा। यह बुरी आदत वालों को पहचानने की निशानी है।

22. बेवकूफ़ से दोस्ती मत करो क्यों कि यह मुश्किल वक़्त में तेरी मुश्किलों में बढ़ोतरी करेंगे।

23. अगर किसी में दीन की सम्पत्ति हलाल माल, दान शीलता और शर्म हो, वह महात्मा में से होगा।

24. हर शख़्स को उस के हुनर व जौहर के मुताबिक़ जगह देनी चाहिए।

25. बुरी आदत के लोगों से बचो कि उन की संगति से सिवाए रंज के कुछ हासिल न होगा।

26. अक़्ल अदब के साथ ऐसी है जैसा कि दरख़्त फल के साथ। और अक़्ल बग़ैर अदब ऐसी है जैसा की दरख़्ते बेबर।

27. जिस तरह बारिश खुश्क ज़मीन को ज़िन्दा कर देती है उसी तरह उलमा की संगति से दिल ज़िन्दा होता है।

28. अगर लोग तुम में ऐसा गुण बयान करें जो तुम में नहीं तो मग़रूर मत हो क्यों कि जाहिलों के कहने से ठीकरी सोना नहीं बन सकती।

29. काम न करना, फ़क़ीरी लाता है और फ़क़ीरी दीन को तंग, अक़्ल को कमज़ोर और मुरव्वत को ख़त्म करती है।

30. बदगुमानी (बुरी सोच) को अपने ऊपर ग़ालिब (विजयी) मत आने दो, वरना तुम्हें दुनिया में कोई दोस्त और

हमदर्द न मिल सकेगा।

31. अगर कोई काम किसी दूसरे को सौंपना हो तो अक़्लमंद को सौंपो अगर अक़्लमंद न मिल सके तो खुद करो वरना छोड़ दो।

32. जो बात तुम नहीं जानते मुँह से न कहो और जो जानते हो, उसे मुसतहिक़ (ज़रूरतमंद) को बताने में देर न करो।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०)

(572 ई० ता 634 ई०)

जलीलुलक़द्र (महानात्मा) सहाबी, ग़ार के साथी, बारगाहे नुबुव्वत से सिद्दीक़ का लक़ब मिला। पहले ख़लीफ़ा, असल नाम अब्दुल काबा था। इस्लाम क़ुबूल करने के बाद नाम अब्दुल्लाह रखा। अबूबक्र कुन्नियत है। मर्दों में सब से पहले इस्लाम क़ूबूल करने का सम्मान हासिल है। ख़िलाफ़त की मुद्दत 2 वर्ष छः महीना दस दिन है।

1. वह काम जो बग़ैर शिक्षा के हो उसे बीमार जानो और वह शिक्षा जो बग़ैर काम के हो उसे बेकार जानो।
2. शिक्षा पैग़म्बरों की मीरास है और माल, कुफ़्फ़ार फ़िरऔन और क़ारून का।
3. याद रखो, जिहाद (धार्मिक युद्ध) को न छोड़ो जब कोई क़ौम अल्लाह की राह में जिहाद करना छोड़ देती है तो वह ज़लील हो जाती है।
4. सब्र में कोई मुसीबत नहीं और रोने में कुछ फ़ायदा नहीं।

5. वह लोग बेहतर नहीं हैं जो आख़िरत के लिए दुनिया को छोड़ देते हैं बल्कि बेहतर वह हैं जो दुनिया और आख़िरत दोनों का हक़ अदा करते हैं।
6. दुर्भागी है वह शख़्स जो ख़ुद तो मर जाए मगर उस का गुनाह न मरे यानी वह कोई ऐसा बुरा काम शुरू कर जाए जो उस के मरने के बाद भी जारी रहे।
7. बुरों की संगति से तनहाई बेहतर है और तनहाई से नेकों की संगति बहुत बेहतर है।
8. सच्ची दानशीलता यह है कि ख़ुदा के बन्दों को तकलीफ़ से बचाने के लिए ख़ुद वह तकलीफ़ उठा लो।
9. शुक्र गुज़ार मोमिन सुकून से क़रीबतर है।
10. ज़ुबान को शिकवा व शिकायत से सुरक्षित रखो, राहत नसीब होगी।
11. जो अल्लाह के कामों में लग जाता है, अल्लाह उस के कामों मे लग जाता है।
12. इबादत एक पेशा है, उस की दुकान तनहाई, असल माल तक़्वा (पारसाई) और नफ़ा जन्नत है।
13. आजिज़ तरीन शख़्स वह है जिस का कोई दोस्त न हो।
14. माँ बाप की रज़ामंदी दुनिया में दौलत बख़्शने वाली और आख़िरत में निजात का कारण है।
15. कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद, छोटा जिहाद है, जिहादे अकबर (बड़ा जिहाद) अपने अस्तित्व से जिहाद है।

16. ईमान को जिहाद, रोज़ा को सदक़ए फ़ित्रा, हज को फ़िदिया और नमाज़ को सजदए सह्व पूरा करता है।
17. शरीफ़ आदमी शिक्षा की सम्पत्ति पा कर सुशील हो जाता है लेकिन कमीना शख़्स शिक्षा हासिल कर के घमंडी बन जाता है।
18. उस दिन पर आँसू बहाओ जो तुम ने बग़ैर नेकी के गुज़ार दिया।
19. हर चीज़ के सवाब का अंदाज़ा है मगर सब्र के सवाब का अंदाज़ा नहीं।
20. आँख दिल का दरवाज़ा है उस की हिफ़ाज़त करो कि तमाम आफ़ात उस राह से बदन में दाख़िल होती हैं।
21. चोरी और ख़्यानत से बचो, यह ग़रीबी पैदा करती हैं।

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०)

(583 ई० ता 644 ई०)

जलीलुलक़द्र (महानात्मा) सहाबी, दूसरे ख़लीफ़ा, नाम उमर बिन अलख़त्ताब, कुन्नियत अबू हफ़्स और लक़ब फ़ारूक़े आज़म है। इस्लाम कुबूल करने के बाद पूरी उम्र हुज़ूरे अकरम की संगति में रहे और इस्लाम को प्रचार में भर पूर हिस्सा लिया। आप की ख़िलाफ़्त के ज़माने में मुसलमानों ने दुनिया की दो बड़ी ताक़तों ईरान और रूम को पराजय कर के अपना लोहा मनवाया। ख़िलाफ़त की मुद्दत क़मरी साल के हिसाब से दस साल छः माह और चार दिन है।

1. कम बोलना अक़्लमंदी, कम खाना सेहत और कम सोना इबादत है।
2. अगर इंसान में दस आदतें हों और उन में से नौ आदतें अच्छी और एक बुरी हो तो एक बुरी आदत नौ अच्छी आदतों को भी नष्ट कर देती है।
3. किसी शख़्स के अख़्लाक़ पर भरोसा न करो जब तक

गुस्से के वक़्त उसे आज़मा न लो! किसी की ईमानदारी पर भरोसा न करो, जब तक कि लालच के वक़्त उसे आज़मा न लो।

4. अगर ग़ैबदानी (अंतर्यामी) के दावा का ख़्याल न होता तो मैं कहता कि पाँच शख़्स जन्नती हैं।
   (i) वह मुहताज जो बाल बच्चों वाला हो मगर सब्र करने वाला हो।
   (ii) वह औरत जिस से उस का शौहर राज़ी और खुश हो।
   (iii) वह औरत जिस ने अपने शौहर का महर का हक़ माफ़ कर दिया हो।
   (iv) वह शख़्स जिस से उस के माता पिता खुश हों।
   (v) वह शख़्स जो अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करे।
5. तुम ने लोगों को क्यों गुलाम बना लिया है, हालाँकि माँओं ने तो उन्हें आज़ाद पैदा किया है।
6. दुनिया कमाने के ख़्वाहिशमंद को शिक्षा देना, डाकुओं के हाथ में तलवार बेचना है।
7. ईमान के बाद बड़ी सम्पत्ति नेक औरत है।
8. लालच करना निर्धनता, बेग़र्ज़ होना अमीरी और बदला न चाहना सब्र है।
9. तीन चीज़ें मुहब्बत बढ़ाने का ज़रिया हैं।
   (i) सलाम करना।
   (ii) दूसरों के लिए मजलिस में जगह ख़ाली करना।

(iii) जिस से बात की जाए उस को बेहतरीन नाम से पुकारना।

10. जो शख़्स अपना राज़ छुपाता है वह अपना इख़्तियार अपने हाथ में रखता है।

11. अगर कोई शख़्स अपने अन्दर कोई घमंड पाता है तो यह असल में उस के किसी एहसासे कमतरी की वजह से होता है।

12. सब से बड़ी मुसीबत कम माल और बाल बच्चों की ज़्यादती है।

13. फ़ुज़ूल ख़र्ची उस चीज़ का भी नाम है कि जिस चीज़ को इंसान की तबीयत चाहे खाए।

14. जो आदमी अपने आप को विद्यावान कहे वह जाहिल है और जो अपने आप को जन्ती बताए वह जहन्नमी है।

15. अमल की कुव्वत यह है कि आज के काम कल पर न उठा रखे जाएँ।

16. बुरे लोगों की दोस्ती से बचना ज़रूरी है, क्यों कि अगर वह भलाई करना चाहे तो भी उस से बुराई हो जाती है।

17. जो बुराई से सूचित करेगा वह दोस्त है और मुँह पर तारीफ़ करना गोया हलाक करना है।

18. अत्याचारी को माफ़ करना नृशंसित पर अत्याचार है।

19. नेकी के बदले नेकी, हक़्क़े अदाएगी है और बदी के बदले नेकी एहसान है।

20. दानवीर ख़ुदा को महबूब है अगरचे पापी हो, बख़ील ख़ुदा का दुश्मन है अगरचे नेक हो।
21. आदमी तीन क़िस्म के होते हैं, कामिल, काहिल और लाशै। कामिल वह है जो लोगों से मशवरा करे और उस पर ग़ौर करे। काहिल वह है जो अपनी राय पर चले और किसी से मशवरा न करे और लाशै वह है जो न ख़ुद राय वाला हो और न किसी से मशवरा करे।
22. दुनिया थोड़ी लो ताकि आज़ादी की ज़िन्दगी बसर करो।
23. ज़्यादा हंसने से उम्र घटती है और यह मौत से ग़फ़लत की निशानी है।
24. हर चीज़ का एक हुस्न होता है और नेकी का हुस्न यह है कि तुरन्त की जाए।
25. जब हलाल व हराम जमा हों तो हराम ग़ालिब (विजयी) होता है चाहे वह थोड़ा सा हो।

हज़रत उसमान ग़नी (रज़ि०)

(575 ई० ता 656 ई०)

जलीलुलक़द्र (महानात्मा) सहाबी तीसरे ख़लीफ़ा, नाम उसमान बिन अफ़्फ़ानं, कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह, लक़ब ग़नी और ज़ुन्नूरैन है। हुज़ूरे अकरम की दो बेटियाँ आप के निकाह में आईं, इस लिए "ज़ुन्नूरैन" कहा जाता है। सब से पहले कुरआन पाक याद करने वाले वही के लिखने वाले भी रहे। आप के ख़िलाफ़त के ज़माने में मुसलमानों ने पहली बार दरयाई फ़ौज त्यार की। ख़िलाफ़त का समय 12 साल से कुछ दिन कम है।

1. तलवार का ज़ख़्म बदन पर लगता है मगर बुरी बात चीत का रूह पर।
2. खुदा के सिवा किसी से उम्मीद न रखो और किसी से मत डरो मगर अपने पाप से डरो।
3. अगर तू पाप करने पर आमादा है तो कोई ऐसी जगह तलाश कर जहाँ खुदा न हो।

4. बदज़ुबान तीन आदमियों को ज़ख़्मी करता है। (i) अपने आप को (ii) जिस की बुराई करता है (iii) जो उस की बुराई सुनता है।
5. पाप किसी न किसी सूरत दिल को बेक़रार रखता है।
6. हक़ीर से हक़ीर पेशा हाथ फैलाने से बेहतर है।
7. सम्पत्ति को ग़लत जगह ख़र्च करना सम्पत्ति की नाशुक्री है।
8. ख़ामोशी, गुस्से का बेहतरीन इलाज है।
9. अक़्लमंद है वह शख़्स जो वक़्त को देख कर काम करता है।
10. जिस ने इंसानों का हक़ नहीं पहचाना उस ने ख़ुदा का हक़ नहीं पहचाना।
11. निर्धन का एक दिर्हम सदक़ा बेहतर है दौलतमंद के एक लाख दिर्हम से।
12. ज़ुबान की ग़लती, पाँव की ग़लती से ज़्यादा ख़तरनाक है।
13. अपना बोझ दूसरों पर मत डालो चाहे कम हो या ज़्यादा।
14. सम्पत्ति व सुकून के होते हुए ज़्यादा तलबी भी शिकवा है।
15. दुनिया को अल्लाह तआला की सराए समझ, जो आख़िरत के मुसाफ़िरों के लिए है अपना सामान ले और जो कुछ सराय में है उस की लालच न कर।
16. अल्लाह तआला को हर वक़्त अपने साथ समझना अफ़ज़ल तरीन ईमान है।
17. अगर तू अच्छे खानों का शौक़ीन है तो याद रख की आख़िर कार तूझे कीड़े मकोड़ों की ग़िज़ा बनना है।

18. ज़िन्दगी का एक मक़सद बना लो और फिर सारी ताक़त उस के हासिल करने पर लगा दो, तुम यक़ीनन कामियाब होगे।
19. आँखें खुली और रौशन हों तो हर रोज़ महशर का दिन है।
20. ज़ुबान सुधर जाए तो दिल भी सुधर जाता है।
21. आश्चर्य है उस पर जो दुनिया को अस्थाई(फ़ानी) जानता है और उस की चाहत रखता है, जो दोज़ख़ को हक़ जानता है फिर भी गुनाह करता है, जो मौत को हक़ जानता है फिर हंसता है, जो तक़दीर को पहचानता है फिर जाने वाली चीज़ का ग़म करता है।
22. दूसरों को शौक़ दिलाने की नियत से ज़ाहिरी तौर पर सदक़ा देना छुपा कर देने से बेहतर है।
23. हया के साथ तमाम नेकियाँ और बेहयाई के साथ तमाम बुराइयाँ बंधी हुई हैं।
24. कभी-कभी ग़लती को माफ़ करना, मुजरिम को ज़्यादा ख़तरनाक बना देता है।
25. उस शख़्स के सामने ज़ुबान खोल कर शरमिन्दा न हो जो निगाह की इलतिजा को नहीं समझ सकता।

हज़रत अली (रज़ि०)

(599 ई० ता 661 ई०)

जलीलुलक्द्र सहाबी, चौथे ख़लीफ़ा, रसूले अकरम स० के चचेरे भाई, नाम अली बिन अबी तालिब, कुन्नियत अबुलहसन और अबू तुराब, लकब शेरे ख़ुदा है। कम आयु में सब से पहले इस्लाम कुबूल किया। शिक्षा में आप का कोई मुकाबिल न था हुज़ूरे अकरम का फ़रमान है "मैं शिक्षा का शहर हूँ और अली रज़ि० उस का दरवाज़ा आप की ख़िलाफ़त की मुद्दत 4 साल 8 महीना और 24 दिन।

1. कहावतें और मिसालें अक़्लमंदों और नसीहत हासिल करने वालों के लिए हैं नादानों को उन से कोई फ़ायदा नहीं।
2. बेहतरीन कमाल अदब और अफ़ज़ल तरीन इबादत ख़ैरात है।
3. सब से बड़ी मुसीबत, मुसीबत में घबराना है।
4. बेवकूफ़ की अक़्ल उस की जुबान के पीछे और अक़्लमंद की जुबान उस की अक़्ल के पीछे होती है।
5. बहुत कम ऐसा होता है कि जल्दबाज़ नुक़सान न उठाए

और ऐसा कभी-कभी ही होता है कि सब्र करने वाले कामियाब न हों।

6. नेकी पर गुरूर करना नेकी का अज्र(फल) नष्ट कर देता है।
7. हर एक चीज़ की ज़कात है और अक़्ल की ज़कात यह है कि नादानों की बात पर सब्र किया जाए।
8. जिस शख़्स के दिल में जितनी ज़्यादा लालच होती है उस को अल्लाह तआला पर उतना ही कम यक़ीन होता है और जो शख़्स ख़ुद को ज़बरदस्ती मुहताज बनाता है वह मुहताज ही रहता है।
9. मौत को हमेशा याद रखो लेकिन मौत की आरज़ू कभी न करो।
10. बुरे कार्य वाले लोगों की संगति से बचो क्यों कि आदमी अपने साथियों से पहचाना जाता है।
11. वह गुनाह सब गुनाहों से सख़्त है जो करने वाले के नज़दीक मामूली हो।
12. मुसीबतों का मुक़ाबला सब्र से करो और नेमतों कि हिफ़ाज़त शुक्र से करो।
13. किसी पर एहसान करो तो उस को छुपाओ और अगर तुम पर कोई एहसान करे तो उसे ज़ाहिर करो।
14. अपनी ताक़त से बढ़ कर अपने आप पर बोझ न डालो, ऐसा न हो कि इस तरह हिम्मत हार बैठो।
15. हर चीज़ की ज़कात है अक़्ल की ज़कात नादानों की बात

पर सब्र करना है।

16. तीन चीज़ें अपने भेजने वाले का पता देती हैं।

    (i) क़ासिद (एलची) (ii) ख़त (iii) तोहफ़ा

17. अगर दुश्मन पर ताक़त हासिल हो जाए तो इस ताक़त का शुक्र इस तरह अदा करो कि उसे माफ़ कर दो।

18. आरज़ू को छोड़ना सब से बड़ी दौलत है। माफ़ी अच्छा बदला है।

19. बन्दे को चाहिए कि अल्लाह के सिवा किसी से आशा न रखे और अपने गुनाहों के सिवा किसी से न डरे।

20. जहाँ तक हो सके लालच से बचो, लालच में अपमान ही अपमान है।

21. संतोष वह दौलत है जो ख़त्म नहीं होती।

22. सब से बड़ी ख़्यानत क़ौम के साथ ग़द्दारी है।

23. झगड़े में कूदना आसान है लेकिन निकलना बहुत मुश्किल।

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि०)

(जन्म, आप स० के भेजे जाने के 4 साल बाद – ता 676 ई०)

मोमिनीन की माँ, हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ी० की बेटी, कुन्नियत उम्मे अब्दुल्लाह थी। आप रज़ि० से 2210 अहादीस संबंधित हैं। 66 वर्ष की उम्र में मृत्यु पाई।

1. मेहमान के लिए ज़्यादा ख़र्च करो क्यों कि यह फ़ुज़ूल ख़र्ची में से नहीं है।
2. कम खाना तमाम बीमारियों का इलाज है और पेट भर कर खाना बीमारी की जड़ है।
3. जब मेदा भर जाए तो कुव्वते फ़िक्र कमज़ोर पड़ जाती है और हिकमत व अक़्लमंदी की योग्यतायें गूँगी हो जाती हैं।
4. तुम्हारे लिए ख़ैर यही है कि बुराई से दूर रहो।
5. ज़ुबान की हिफ़ाज़त करो क्यों कि यह एक बेहतरीन फ़ज़ीलत है।
6. अज़मत सिर्फ़ एक फ़ीसद वदीयत (धरोहर) की जाती है और 99 फ़ीसद मेहनत व तपस्या से मिलती है।
7. सच्चाई की मशाल से फ़ायदा उठाओ और यह मत देखो कि मशाल उठाने वाला कौन है।

हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि०)

रसूल स० के साथी, पहले मजूसी (आग की पूजा करने वाले) थे। इस्लाम कुबूल करने के बाद ज़्यादा समय हुज़ूरे अकरम की संगति में गुज़ारा हज़रत उमर के ख़िलाफ़त के ज़माने में मदाइन के गर्वनर थे।

1. अगर दुनिया के तमाम दरख़्त क़लम बन जाएँ और दरिया सियाही तो फिर भी इंसान ख़ुदा की नेमतें नहीं गिन सकता।
2. शिक्षा की मिसाल दरिया की तरह है उस में से जितना चाहो पानी इस्तेमाल कर लो घटेगा नहीं।
3. हर अच्छा काम पहले नामुम्किन होता है।
4. गुनाह इंसान का सब से बड़ा दुश्मन है।
5. ख़ुशी आपस में बाँटने से इस तरह बढ़ती है जिस तरह ज़मीन में बोया हुआ बीज फ़सल बनता है।
6. मुझे उन लोगों पर रहम आता है जिन के पास मुझ से कम अक़्ल है और जिस के पास मेरे से ज़्यादा शिक्षा है। मैं उन से रश्क व हसद नहीं करता।
7. झगड़ा बढ़ने से पहले ही तुम वहाँ से निकल जाओ।
8. बहादुरों का काम माफ़ करना है। इस लिए अगर कमज़ोर आदमी तुम्हारी बेइज़्ज़ती करे तो उसे माफ़ कर दो।

हज़रत उवैस क़रनी (रह०)

मशहूर ताबई, आँहज़रत स० की ज़िन्दगी में मौजूद थे लेकिन मुलाक़ात न हुई। पूरा नाम उवैस बिन आमिर क़रनी है। आप के बारे में हुज़ूरे अकरम का कहना है "यह ताबईन में सब से बेहतर हैं"।

1. ज़रूरतें कम करोगे तो राहत पाओगे।
2. अपने थोड़े माल पर संतोषी रहो और दूसरे के माल पर बुरी नज़र मत डालो।
3. जो आदमी अच्छा खाने, अच्छा पहनने और दौलतमंदों की संगति में बैठने की ख़्वाहिश रखता है वह नर्क के निहायत क़रीब है।
4. सच बोलोगे और नियत व कार्य में भी सच्चाई रखोगे तो जवाँमर्द कहलाओगे।
5. जो कुछ तुम्हारे पास है उस पर संतुष्ट रह कर शरीफ़ हो, वर्ना ज़लील होगे।
6. अगर मेहनत करते हुए कामियाबी को सिर्फ़ ख़ुदा के हवाले करोगे तो लोगों से बेपरवाह हो जाओगे और यही हक़ीक़ी निस्पृहता है।
7. सरदारी सच्चाई में, सब्र फ़क़ीरी में, बुज़ुर्गी संतोष में, सिर बुलंदी अज्ज़ (नम्रता) में और संबंध सदाचारी में है।

हज़रत इमाम हसन (रज़ि०)

(624 ई० ता 669 ई०)

रसूल स० के नवासे, हज़रत अली और फ़ातमा ज़ुहरा के बड़े पुत्र हज़रत अली के बाद ख़िलाफ़त संभाली मगर जल्द ही ख़िलाफ़त छोड़ दी मदीना में मृत्यु हुई।

1. अक़्लमंदी में सब से ऊँचे दर्जे की दानाई पारसाई और कमज़ोरियों में सब से बड़ी कमज़ोरी बदअख़लाक़ी और बदआमाली है।
2. मोमिन वह है जो आख़िरत के लिए अच्छे कार्य जमा करे और काफ़िर वह है जो दुनिया के मज़े उड़ाने में लगा रहे।
3. बहादुर वह है जो मुसीबत के वक़्त सब्र से काम ले और वक़्त पड़ने पर पड़ोसी की मदद करे।
4. अल्लाह तआला बेहतरीन बदला लेने वाला है।
5. वह आदमी सब से बेहतरीन ज़िन्दगी गुज़ारता है जो अपनी आवश्यकताओं के लिए किसी ग़ैर पर भरोसा नहीं रखता।
6. कृपा का अर्थ हैं मांगने से पहले देना और मौक़ा व वक़्त पर एहसान व सुलूक करना।
7. ज़रूरतमन्द की जायज़ ज़रूरत पूरा करना एक महीने के एतकाफ़ (मस्जिद में तय किए गए समय के अनुसार बैठ कर इबादत करना) से बेहतर है।

हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि॰)

(626 ई॰ ता 680 ई॰)

रसूल स॰ के नवासे, हज़रत अली और हज़रत फातमा ज़ुहरा के बेटे करबला के मैदान में शहादत पाई लेकिन यज़ीद का आज्ञापालन न किया।

1. जब शरीर मौत ही के लिए है तो अल्लाह तआला की राह में शहीद होना सब से बेहतर है।
2. जल्दबाज़ी हिमाक़त है और यह बदतरीन इंसानी कमज़ोरी है।
3. सब से अच्छा माफ़ करने वाला वह है जो बदला लेने की ताक़त रखता हो मगर बदला न ले कर माफ़ कर दे।
4. जो काम तुम्हारी ताक़त से बाहर हो उस के करने की ज़िम्मेदारी हर्गिज़ अपने सिर न लो।
5. पारसाई और नेकी आख़िरत के लिए बेहतरीन कमाई है।
6. ऊँचे दर्जे का दानवीर वह है जो ऐसे लोगों से अच्छा सुलूक करे जिन से उसे कोई उम्मीद या कोई सहारा न हो।
7. नेक कार्य खुद बखुद इंसान को तारीफ़ के लायक़ बना देता हैं और अच्छा फल खुद बखुद साथ-साथ चलता है।
8. किसी चीज़ की शिद्दत से ख़्वाहिश सिर्फ़ बुरी बात नहीं बल्कि यह नष्ट करने वाली भी है।
9. लिहाज़ यह है कि जब वादा करे तो उसे पूरा करे।
10. ज़ालिमों के साथ रहना बजाए खुद जुर्म है।

इमाम अबू हनीफ़ा (रह०)

(699 ई० ता 767 ई०)

अहले सुन्नत के चार फ़िक़ः के लिखने वालों में फ़िक़हे हनफ़ी के संस्थापक, असल नाम नोमान बिन साबित, कुन्नियत अबू हनीफ़ा।

1. लालच करना निर्धनता, बेग़र्ज़ होना अमीरी और बदला न लेना सब्र है।
2. वह इल्म दिल में घर करता है जो नफ़ा व नुक़सान के बग़ैर सिखाया जाए।
3. जिस तरह शरीर रूह के बग़ैर बेकार है उसी तरह इल्म बग़ैर अमल के बेकार है।
4. मुसीबतों को बरदाश्त करो क्यों कि यह तुम्हारे गुनाहों की वजह से ही आती हैं।
5. रोटी का टुकड़ा और मामूली लिबास इज़्ज़त के साथ मिलता रहे तो यह उस ऐश से बेहतर है जिस के बाद निदामत व शर्मिन्दगी का सामना करना पड़े।
6. जो इल्म को दुनिया कमाने की ग़र्ज़ से हासिल करता है इल्म उस के दिल में जगह नहीं पाता।
7. तुम्हारे साथ कोई नेकी करे या बदी लेकिन तुम हर एक के साथ एहसान करो।

हज़रत इमाम शाफ़ई (रह०)

(767 ई० ता 820 ई०)

अहले सुन्नत के चार फ़िक्: के लिखने वालों में शाफ़ई फ़िक्: के संस्थापक। असल नाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इदरीस है। "किताबुर्रिसाला" और "किताबुल-उम्म" प्रसिद्ध पुस्तकें हैं।

1. जब सही हदीस मिल जाए तो मेरी कही हुई बातों को भूल जाओ।
2. अगर नाक़ाबिल को ज्ञान सिखाओगे तो ज्ञान बेकार होगा और अगर क़ाबिल को न सिखाओगे तो यह ज़ुलम होगा।
3. गुनाह का पता होने पर भी गुनाह करने वाला सब से बड़ा जाहिल है।
4. विद्यावान, मूर्खता को जिहालत कहते हैं और जाहिल ज्ञान को।
5. दिल ज़ुबान की खेती है उस में अच्छी बुवाई करो। सारे नहीं तो एक दो दाने ज़रूर उग आएँगे।
6. बड़ी ग़लतियों को माफ़ करने वाला दोस्त मुझे महबूब है।
7. मुरव्वत वालों के लिए दुनिया को चाहना या दुनिया में आराम चाहना ठीक नहीं क्यों कि मुरव्वत वाले तो मुसीबतों में फंसे हुए रहते हैं।
8. तनहाई में नसीहत करना शराफ़त है और सुधार का ज़रिया है जबकि सब के सामने नसीहत बेइज़्ज़ती है।
9. उस में कोई भलाई नहीं जो इल्म की मुहब्बत नहीं रखता।

हज़रत इमाम जअफ़र सादिक़ (रह॰)

(699 ई॰ ता 765 ई॰)

इमाम बाकिर के बेटे और इस्ना अशरा वर्ग के छठे इमाम, हदीस और फिक़: के आलिम। पूरा नाम अबू अब्दुल्लाह जअफर सादिक रह॰ है।

1. पाँच लोगों की संगति से हमेशा बचो
   (i) झूटा जो तुम्हें हमेशा धोके में रखेगा
   (ii) बेवकूफ़, जो अगरचे तुम्हें फ़ायदा पहुँचाना चाहेगा मगर अपनी बेवकूफ़ी से नुक़सान कर देगा
   (iii) कंजूस, जो अपने मामूली फ़ायदा के लिए तुम्हारा बड़ा नुक़सान कर देगा
   (iv) बुज़दिल, जो मुश्किल वक़्त में तुम्हें छोड़ जाएगा
   (v) बुरा काम करने वाला, जो एक निवाले (ग्रास) के बदले तुम्हें बेच देगा।
2. शान्ति इसी में है कि अच्छे कामों में जुटे रह कर उन के फल को खुदा पर छोड़ दो। बला यह है कि हक़ का लिहाज़ न रख कर अपने कारोबार को सिर्फ़ नफ़्स की

चाहत पर करो। शान्ति स्वर्ग और बला नर्क है।

3. जो अपनी ज़ुबान को क़ाबू में नहीं रखता वह शर्मिन्दा होता है।
4. बुद्धिमान वह है जो अच्छाई व बुराई में तमीज़ करे और हक़ीक़त में बुद्धिमान वह है जो दो नेकियों और दो बुराइयों में तमीज़ करे ताकि दो ख़ुबियों में से बेहतर को इख़्तियार करे और दो बदियाँ पेश आएँ और उन से बचना मुम्किन न हो तो बुराई को छोड़ दे।
5. तौबा करना आसान है लेकिन गुनाह छोड़ना मुश्किल।
6. बदले की ताक़त रखते हुए गुस्सा पी जाना बहुत बड़ा जिहाद है।
7. ख़ुशामदी घमंड का बीज है।
8. मुसीबत व आज़माइश हलाकत (बध) के लिए नहीं बल्कि इम्तिहान के लिए आती है।
9. शिकायत को छोड़ना सब्र है।
10. खुली दुश्मनी बेहतर है कपटाचारी दोस्ती से।
11. दूसरों के माल की तमन्ना न रखना भी दानशीलता है।

❖❖❖

❖ जिस पर नसीहत असर न करे समझ लो उस का दिल ईमान से ख़ाली है।

❖ जो विद्यावान अमीरों के पास जाएँ वह ख़ुदा के दुश्मन हैं और जो उमरा विद्यावान के पास आएँ वह ख़ुदा के दोस्त हैं।

- अपने ज़ाहिर व बातिन को यकसाँ रखो।
- इंसाफ़ हर एक के लिए बेहतर है लेकिन अमीरों के लिए बेहतरतर है।
- नेक के लिए मौत राहत है और बद की मौत दुनिया के लिए राहत है।
- दुश्मन एक भी बहुत है और दोस्त ज़्यादा भी थोड़े हैं।
- ख़्वाहिश परस्ती एक ऐसे साथी की तरह है जो हलाक कर देता है और बुरी आदत एक ताक़तवर दुश्मन की तरह है।

ग़ौसुल-आज़म हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०)

(1077 ई० ता 1176 ई०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, सिलसिलए कादरिया के बानी (संस्थापक) "फ़ुतूहुलग़ैब" और "ग़नियत्युतु-त्तालिबीन" प्रसिद्ध पुस्तकें हैं।

1. तेरे सब से बड़े दुश्मन तेरे बुरे साथी हैं।
2. कार्य बे इख़लास और क़ौल बेअमल, नाक़ाबिले कुबूल है।
3. नेक कार्य वह है जिस पर लोगों की तारीफ़ की उम्मीद न रखी जाए।
4. शुरू करना तेरा काम है और पूरा करना खुदा का काम है।
5. खुदा का क़रीबी बनना चाहते हो तो मानवजाति पर दया करो।
6. बदगुमानी तमाम फ़ायदों को बन्द कर देती है।
7. अकेला आदमी सुरक्षित है और हर गुनाह की पूर्ती दो से होती है।
8. बेअदब खुदा और मानवजाति दोनो का क्रोधभागी है।
9. अस्तित्व की तमन्ना पूरी न कर वरना बरबाद हो जाएगा।

10. ज़रूरतमंद भिखारी ख़ुदा का हदिया है जो ख़ुदा की तरफ़ से भेजा जाता है।
11. तमाम ख़ूबियों का मजमूआ (समाहार) इल्म सीखना और अमल करना और फिर दूसरों को सिखाना है।
12. पुरानी व टूटी फूटी क़ब्रों पर ग़ौर करो कि कैसे कैसे हसीनों की मिट्टी ख़राब हो रही है।
13. इतराने और गुस्सा करने वाले की गिन्ती ज्ञान वालों में नहीं।
14. मौत को याद रखना नफ़्स की तमाम बीमारियों का इलाज है।
15. बेहतरीन काम दूसरों को देना है न कि दूसरों से लेना।
16. मोमिन अपने परिवार को अल्लाह पर छोड़ता है और कपटाचारी अपने माल व दौलत पर।
17. जब कोई आदमी तुम्हें किसी दूसरे आदमी से संबंधित कर के दुख देने वाली बात सुनाए तो उसे झिड़क दो और कहो कि तुम उस से भी बुरे हो कि उस ने मेरे पीछे यह बात कही और हमें नहीं सुनाई और तुम ने सुना दी।
18. जो तुम्हारी बुराई करता है वह तुम्हें फ़ायदा पहुँचाने वाला है कि अपने अच्छे आमाल तुम्हारे नामए आमाल में लिखाता है।
19. रोज़ी का वह विस्तार जिस पर शुक्र न किया जाए और जीविका (रोज़ी) की वह तंगी जिस पर सब्र न किया जाए फ़ितना बन जाती है।

20. हसद (ईर्ष्या) ऐसी बुरी चीज़ है जो ईमान को कमज़ोर और अल्लाह की रहमत से दूर कर देती है।
21. अक्लमंद पहले दिल से पूछता है फिर मुँह से बोलता है।
22. खुदा तआला की उपासना को लाज़िम कर, न किसी से ख़ौफ़ खा न लालच रख, सारी ज़रूरतें खुदा तआला के सामने बयान कर, उसी से माँग और उस के सिवा किसी पर भरोसा मत कर।
23. उस वक्त तक तुम्हारी गिन्ती ज्ञान वालों में नहीं हो सकती जब तक तुम में घमंड और गुस्सा करना बाक़ी रहे।

हज़रत जुनैद बग़दादी (रह०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, पूरा नाम अबुलकासिम बिन मुहम्मद बिन जुनैद नहाविन्दी है। हज़रत सरी सकती (रह०) के भान्जे और शागिर्द थे ताऊसुल उलमा और उम्दतुलमशाइख़ कहे गए।

1. ज्ञान बिला क़ीमत नहीं देना चाहिए। उसकी क़ीमत यह है कि ऐसे शख़्स को दो जो उसे अच्छी तरह रखे, दूसरों तक पहुँचाए और उस का बोझ उठा सके।
2. जो कुरआन को याद करने वाला और हदीस का पूरा विद्यावान न हो उस की उपासना मत करो।
3. जो मुहम्मद स० के रास्ते पर चलता है वह मंज़िल तक पहुँच जाता है क्यों कि बाक़ी सब राहें बन्द हैं।
4. मुहब्बत ख़ुदा की अमानत है जो मुहब्बत किसी बदले पर हो, वह नष्ट हो जाती है सिर्फ़ वही मुहब्बत बाक़ी रहने वाली है जो ख़ुदा की ख़ातिर हो।
5. मिलनसारी चार चीज़ों में है। दानशीलता, प्रेम, नसीहत, और दया।
6. मुझे झूटे आदमी से बदकार सच्चे की संगति ज़्यादा पसंद है।
7. जब वक़्त गुज़र जाए तो हरगिज़ वापस नहीं आता। इस लिए वक़्त से ज़्यादा क़ीमती चीज़ और कोई नहीं।
8. तौबा के तीन अर्थ हैं। (1) पहले पश्चाताप, फिर उस को

छोड़ने का पक्का इरादा, तीसरे ज़ुल्म व दुश्मनी से बाज़ रहना।

9. अल्लाह तआला तुम्हें नेमत से नवाज़े तो उस का शुक्र यह है कि उस नेमत की वजह से ख़ुदा की नाफ़रमानी (अवज्ञा) न करे। और उस नेमत को नाफ़रमानी का ज़रिया न बनाए।
10. ऐसे शख़्स को दोस्त रखो जो नेकी कर के भूल जाए।
11. सच्चा वह है जिस की सच्चाई, बातों, कर्मों, और हालात में हमेशा क़ायम रहे।
12. मर्द की सीरत देखो उस की सूरत पर न जाओ।
13. विद्यावानों का तमाम ज्ञान सिर्फ़ दो बातों पर सीमित है (1) अक़ीदे (विश्वास) का सुधार (2) ख़िदमत में सिर्फ़ हक़ का लिहाज़ रखना।

❖ अस्तित्व (वुजूद) की चाहतों पर विजयी रहने वाला फ़रिशतों से भी बेहतर है क्यों कि फ़रिशता महज़ अक़्ल है उस को ख़्वाहिश नहीं और जो ख़्वाहिश से पराजित हो जाए वह जानवर से बदतर है क्यों कि वह सिर्फ़ ख़्वाहिश है अक़्ल नहीं रखता।

(हज़रत वहब बिन वर्द रह०)

हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी (रह०)

(1187 ई० ता 1236 ई०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, कुतबुल अक़्ताब "लक़ब" बख़्तियार नाम, ख़्वाजा काकी उर्फ़ है। हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिशती के ख़लीफ़ा और बाबा फ़रीदुद्दीन शगर गंज के धर्मगुरू थे। तसव्वुफ़ पर मशहूर किताब "फ़वायदुस्सालिहीन" लिखी।

1. जिस दिल में दुनिया का लालच, जलन, माल की मुहब्बत और आने वाले कल का ग़म हो उस में बुद्धि कैसे आ सकती है।
2. फ़क़ीरी (दुर्वेशी) पर्दापोशी के बग़ैर नामुम्किन है।
3. दुनिया वालों की संगति दुर्वेश के दिल को परेशान कर देती है।
4. जो आदमी दुआएँ न माँगे वह बदक़िस्मत है और उस की दुआ भी कुबूल नहीं होती।
5. ख़ुदा का ख़ौफ़ बेअदब बन्दों के लिए ताज़ियाना (चाबुक) है ताकि वह उस के कारण गुनाहों से बचते रहें। और नेक रास्ता पर रहें।
6. जिस की आँखों में इश्क़ का सुर्मा लगा हो उस की निगाहों में अर्श से तख़तुस्सुरा तक कोई पर्दा बाक़ी नहीं रहता।
7. जो मुसीबत दोस्त की तरफ़ से आए उसे सब्र के साथ बरदाशत करना चाहिए।

हज़रत दाता गंज बख़्श (रह०)

(1009 ई० ता 1072 ई०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, असल नाम सय्यद अली हजवेरी और कुन्नियत अबुलहसन थी। "गंज बख़्श" लक़ब है। "कशफुल-मअजूब" प्रसिद्ध पुस्तक है।

1. सूफ़ी कहलाने का हक़दार सिर्फ़ वह है जो एक हाथ में कुरआन और दूसरे में रसूल स० का सुन्नत रखे और जिस का चरित्र और बात चीत एक हो।
2. कोई काम नफ़्सानी ग़र्ज़ से किया जाए तो उस में से बरकत निकल जाती है।
3. इल्म उस हद तक सीखो जिस से आमाल ठीक हो जाएँ।
4. काहिल फ़क़ीर, ग़ाफ़िल अमीर और जाहिल दिर्वेश की संगति से बचो।
5. प्रसन्नता की दो क़िस्में हैं। बन्दे का ख़ुदा से और ख़ुदा का बन्दे से ख़ुश होना।
6. तसव्वुफ़ (आत्मवाद) के कई मक़ामात हैं। पहला तौबा, दूसरे अल्लाह की तरफ़ लौटना, तीसरा ज़ुहूद यानी दुनिया

से परहेज़, चौथा तवक्कुल यानी अल्लाह का सहारा।

7. जब किसी मुल्क का हाकिम बग़ैर इल्म, आलिम बेअमल और ग़रीब लोग बेभरोसा हों तो उस मुल्क का ख़ुदा ही हाफ़िज़ है।
8. ज्ञान बहुत से हैं और कोई इंसान सारे ज्ञान एक ही समय में नहीं सीख सकता और न तमाम ज्ञान का सीखना इंसान पर फ़र्ज़ है।
9. गुस्सा अक़्ल को खा जाता है। झूट रोज़ी को खा जाता है।

हज़रत बायज़ीद बिस्तामी (रह०)

(745 ई० ता 874 ई०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, पूरा नाम अबू ज़ैद तैफ़ूर बिन ईसा है। हज़रत को "शतारियों का इमाम" भी कहा जाता है। हज़रत जुनैद बग़दादी के कहने के मुताबिक़ आप तमाम औलिया (अल्लाह के नेक बन्दों) पर ऐसे ही फ़ज़ीलत (विद्वत्ता) रखते हैं जैसे फ़रिश्तों में हज़रत जिबराईल।

1. इंसान को चार चीज़ें दूसरो से ऊँचा करती हैं। सब्र, इल्म, कृपा और अच्छी बात चीत।
2. अमल के बग़ैर जन्नत की चाहत करना भी गुनाह है।
3. अगर कोई तुम पर एहसान करे तो अल्लाह का शुक्र अदा करो फिर उस शख़्स का क्यों कि ख़ुदा ने उसे तुझ पर दयावान किया है।
4. कोई गुनाह तुम्हें इतना नुक़सान नहीं पहुँचाता जितना दूसरे मुसलमान की बेइज़्ज़ती करना और उसे कमतर समझना।

5. बुरे काम अल्लाह तआला से खुले तौर पर दुशमनी के बराबर हैं।
6. दोस्ती की निशानी तीन चीज़ें हैं। दरिया की तरह दानशीलता, सूरज की तरह दया और ज़मीन की सी सत्कार।
7. जो गिन कर नेकियाँ करता है उसे फल भी गिन कर मिलेगा।
8. तवक्कुल (निसपृहता) यह है कि ज़िन्दगी को एक दिन का समझे और कल की फ़िक्र न करे।
9. जब इंसान नेक हो ज़ाता है तो उस का हर काम भी खुद बख़ुद एक नेकी बन जाता है।
10. इंसाफ़ के बग़ैर मुल्क वीरान और उजाड़ हो जाते हैं।
11. एक विद्यावान की ताक़त एक लाख जाहिलों के बराबर होती है।
12. अस्तित्व ही वह एक चीज़ है जो हमेशा असत्य की तरफ़ रुख़ करती है।
13. हर बच्चे का जन्म इस बात का एलान है कि खुदा अभी बन्दे से मायूस नहीं हुआ।
14. सौभाग्य शाली वह है जो नेकी करे और डरे और दुर्भागी वह जो गुनाह करे और मान्य की उम्मीद रखे।
15. अच्छी आदत वैसे तो मामूली चीज़ है लेकिन उस का फल बहुत बड़ा है।
16. नेकों की संगति में बैठना नेक काम करने से बेहतर है

बदों से संगति बुरे कामों से बदतर है।

17. ख़ुद को ऐसा ही ज़ाहिर करो जैसे तुम हो, या वैसे बन जाओ जैसा ख़ुद को ज़ाहिर करते हो।

❖ दुनिया में सिर्फ़ एक चीज़ ऐसी है जो हर हाल में इंसान के लिए मुनासिब है और वह है अच्छी किताब, जो बचपन, जवानी, बुढ़ापे, ख़ुशी और ग़म, हर वक़्त फ़ायदा पहुँचाने वाली है।

❖ नेक दिल शख़्स गाय की तरह है जिसे घास दो तो दूध देती है और गुनहगार शख़्स साँप की तरह है जिसे दूध भी पिलाओ तो डंक ही मारता है।

हज़रत शफ़ीक़ बल्ख़ी (रह०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, शिक्षा का तरीक़ा, हज़रत इब्राहीम अदहम रह० से हासिल किया। बहुत सी किताबें लिखीं।

1. दिल की सफ़ाई चाहते हो तो आँख संसार से बन्द रखो। यही वह छेद है जहाँ से ग़ुबार अन्दर आता है।
2. नेकी करने में देर न करो और बदला लेने में जल्दी न करो।
3. ख़ुदा सब से ज़्यादा धनवान है। उस के होते हुए इंसान को फ़िक्र नहीं करनी चाहिए।
4. शफ़ीक़ बलख़ी बग़दाद गए तो हारून रशीद ने बुलाया और कुछ नसीहत करने को कहा। आप ने फ़रमाया तुम दोज़ख़ की सराय के दरबान हो और तीन चीज़ें तुम्हें दी गई हैं। माल, कोड़ा और तलवार। ज़रूरतमंदों को माल दो, सर्कश को कोड़ा दो और क़ातिल को तलवार से उस के किए की सज़ा दो।
5. इल्म का फ़ायदा तीन बातों में है, वरना यह बेकार है।

(i) दुनिया से मुहब्बत न रखे कि यह मुसलमानों का घर नहीं है।

(ii) शैतान को दोस्त न रखे कि यह मुसलमानों का दोस्त नहीं है।

(iii) किसी मुसलमान को तकलीफ़ न दे कि यह मुसलमानों का काम नहीं है।

6. जो शख़्स एहसान करे उसे चाहिए कि चुप रहे लेकिन जिस पर एहसान किया गया हो उसे बोलना चाहिए।

7. लोग चार बातों को जुबान से मानते हैं लेकिन काम उस के विरुद्ध करते हैं।

(i) कहते हैं हम अल्लाह के बन्दे हैं और काम आज़ादों जैसे करते हैं।

(ii) कहते हैं अल्लाह हमें रिज़्क़ देने वाला है मगर दिल से संतुष्ट नहीं रहते।

(iii) कहते हैं आख़िरत दुनिया से बेहतर है मगर दुनिया के लिए दिन रात माल जमा करते रहते हैं।

(iv) कहते हैं हमें ज़रूर एक दिन मरना है मगर काम ऐसे करते हैं गोया मरना ही नहीं।

8. किसी ने कहा कि बाज़ार में गोश्त बहुत महंगा हो गया है। फ़रमाया ध्यान न दो और खाना छोड़ दो खुद बखुद सस्ता हो जाएगा।

9. ख़ुदा की प्रसन्नता चार बातों में है। (i) जितनी रोज़ी उपलब्ध हो उस में संतोष रखे (ii) काम में इख़लास (नःस्वार्थना) रखे (iii) बुरी बातों से नफ़रत रखे (iv) मौत की तयारी रखे।

❖ जब किसी बरतन में कोई चीज़ डाली जाए तो वह भर जाता है और उस में और गुंजाइश नहीं रह जाती लेकिन इल्म का बरतन कभी नहीं भरता यानी इंसानी सीना उस में जितना इल्म डालो यह उतना ही फैलता जाता है।

हज़रत शैख़ मअरूफ़ क़रख़ी (रह०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, हज़रत शैख़ सरी सक़ती के उस्ताद। पहले आतिश परस्त (आग की पूजा करने वाले) थे। हज़रत अली बिन मूसा रिज़ा के हाथ पर इस्लाम कुबूल किया। मज़ार शरीफ़ बग़दाद में है।

1. वह कड़वाहट जिस का फल मीठा हो, सब्र है।
2. मौत के लिए हर समय तयार रहो और मौत को याद किया करो।
3. मुहब्बत तालीम व तरबियत से नहीं बल्कि हक़ के देने से हासिल होती है।
4. हर काम करने से पहले डरो कि खुदा तुम्हें हर वक़्त देख रहा है।
5. दूसरे की ज़रूरत देख कर बग़ैर उस के सवाल के उस की मदद करो।
6. ऐश ऐसी बला है जिस से लोगों को भागना चाहिए।
7. दुनिया की मुसीबतों की दवा लोगों से दूर रहना है।
8. दुर्वेशी यह है कि किसी चीज़ का लालच न करे। जब कोई बेमांगे लाए तो मना न करे और जब ले ले तो जमा न करे।
9. खुदा की उपासना के बग़ैर उस की कृपा की आशा करना जिहालत और बेवक़ूफ़ी है और बग़ैर रसूल के तरीक़े की उपासना के सिफ़ारिश की उम्मीद धोका है।

हज़रत सरी सक़ती (रह०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, हज़रत मअरूफ़ करख़ी रह० के आज्ञाकारी थे। मरने की तिथि 30 रजब 253 हिजरी है।

1. इंसान की जुबान दिल की तरजुमान और चेहरा दिल का आईना है।
2. अमीर पड़ोसियों, बुरे विद्यावानों और बाज़ारी क़ारियों से दूर रहो।
3. दूसरे भाईयों के ग़म में बराबर के शरीक रहो और उन का ग़म देख कर ख़ुश मत हो।
4. अच्छी आदत यह है कि लोगों को रंज न पहुँचाओ और उन का रंज उठाओ और इस मआमले में बदले का ख़्याल न करो।
5. हर काम कहने के मुताबिक़ करो। क्यों कि ज़्यादा तर ऐसे लोग हैं जो कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं।
6. मर्द वह है जिस का चरित्र उस की बात के मुताबिक़ हो।
7. काश सब लोगों का दुख मुझे मिल जाए और बाक़ी सब ख़ुश रहें।
8. जिस नेमत की क़द्र न की जाए वह ख़त्म हो जाती है।
9. इंसान की सब से बड़ी ताक़त यह है कि वह अपने अस्तित्व पर विजयी हो जाए।

हज़रत जुन्नून मिस्री (रह०)

(796 ई० ता 859 ई०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, असल नाम सौबान बिन इब्राहीम है।

1. शरीर की सेहत थोड़ा खाने में और रूह की सेहत थोड़े गुनाह करने में है।
2. जिस दिल में अल्लाह तआला का डर है उस में किसी और का डर नहीं समा सकता।
3. जो चीज़ ख़ुदा से ग़ाफ़िल कर दे वह दुनिया है।
4. जिस शख़्स ने अपनी जुबान की रक्षा की वह हर बुराई से सुरक्षित रहा।
5. ख़ूराक से भरे मेदे में बुद्धि की बात नहीं आ सकती।
6. जो वक़्त बीत गया उस पर मत पछताओ, जो वक़्त आने वाला है उस का अंदेशा न करो, जो वक़्त मौजूद है उस की क़द्र और हिफ़ाज़त करो।
7. बीमार दिल की चार निशानियाँ हैं:-

   (i) उपासना में मिठास महसूस न करे।

   (ii) उस में ख़ुदा का डर न रहे।

   (iii) दुनिया की चीज़ों को नसीहत की निगाह से न देखे।

   (iv) जो इल्म सुने उसे समझे नहीं।

हज़रत हसन बसरी

(643 ई॰ ता 728 ई॰)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, ख़्वाजा ख़्वाजगान" लक़ब है।

1. इस्लाम धर्म सब नेकियों का निचोड़ है।
2. हिकमत से ख़ाली बात आफ़त है। हिकमत से ख़ाली ख़ामोशी ग़फ़लत है। हिकमत से ख़ाली नज़र अपमान है।
3. दुनिया में तुम्हारे नफ़्स से ज़्यादा ऐसा कोई नटखट जानवर नहीं जो सख़्त तरीन लगाम के लायक़ हो।
4. दुनिया का अज़ाब यह है कि तेरा दिल मुर्दा हो जाए।
5. मुसीबत या ख़ुशी के वक़्त नाहक़ बात से बचो और हक़ बात पर डटे रहो।
6. जन्नत के मुक़ाबिले में बड़ी से बड़ी नेमत हक़ीर है और दोज़ख़ के मुक़ाबिले में बड़ी से बड़ी मुसीबत आसान और बरदाश्त के क़ाबिल है।
7. अक़्लमंद बोलने से पहले सोचता है और बेवकूफ़ बोलने के बाद सोचता है।
8. झूटा शख़्स सब से ज़्यादा अपने आप को नुक़सान पहुँचाता है।

9. दुनिया को अपनी सवारी जानों अगर तुम उस पर सवार रहे तो यह तुम्हें मंज़िल तक ले जाएगी। और अगर तुमने इसे ख़ुद पर सवार कर लिया तो तुम्हारे लिए ज़िल्लत व हलाकत है।
10. जो कुछ तुम अपने और अपने माता पिता और बीवी बच्चों के खाने पीने में ख़र्च करते हो तुम्हें उस का हिसाब देना होगा लेकिन जो कुछ तुम मेहमानों और दोस्तों के खाने पीने के लिए ख़र्च करते हो उस का हिसाब न होगा।

हज़रत इब्राहीम अदहम (रह०)

(795 ई० ता 894 ई०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, पहले बल्ख़ के बादशाह थे। फिर दुनिया छोड़ कर के ख़ुदा की राह में लग गए। हज़रत जुनैद बग़दादी के कहने के अनुसार आप फुकरा (दुर्वेशी) के तमाम ज्ञान व भेदों की कुंजी हैं"।

1. जब गुनाह का इरादा करो तो ख़ुदा की बादशाहत से बाहर निकल जाओ।
2. मेरे पास तीन सवारियाँ हैं।
   (i) मुसीबत व आफ़त के वक़्त सब्र व शुक्र की सवारी पर सवार होता हूँ
   (ii) उपासना के वक़्त निःस्वार्थना (अख़लाक़) की सवारी पर सवार होता हूँ।
   (iii) गुनाह हो जाए तो तौबा की सवारी को काम में लाता हूँ

(3) ख़ुदा तुम्हारी दुआएँ इस लिए कुबूल नहीं करता कि :-
   (i) तुम ख़ुदा को मानते हो मगर उस की इबादत (पूजा) नहीं करते।

(ii) रसूल स० को मानते हो मगर उन की उपासना नहीं करते।

(iii) कुरआन पाक पढ़ते हो मगर उस पर अमल नहीं करते।

(iv) अल्लाह की दी हुई नेमतें खाते हो मगर उस का शुक्र अदा नहीं करते।

(v) यह जानते हो कि जन्नत आज्ञा पालन करने वालों के लिए है फिर भी आज्ञा पालन नहीं करते।

(vi) यह जानते हो कि आज्ञा पालन न करने वालों के लिए दोज़ख़ है मगर उस से दूर नहीं रहते।

(vii) शैतान को अपना दुश्मन मानते हो मगर उस से दुश्मनी नहीं करते।

(viii) मौत को हक़ीक़त मानते हो मगर उस का सामान नहीं करते।

(xi) रोज़ाना अपने माता पिता और रिश्तेदारों को क़ब्र में दफ़न करते हो मगर नसीहत नहीं पकड़ते।

इमाम सुफ़ियान सौरी (रह०)

(715 ई० ता 778 ई०)

फ़क़ीह व मुहद्दिस, प्रसिद्ध पुस्तकें "जामे-उलकबीर" "अलफ़राइज" और "अलजामे-उस्सग़ीर" हैं।

1. पहली इबादत तनहाई और इल्म का हासिल करना है। बाद में उस पर अमल और आख़िर में उस को फैलाना है।
2. बीमार की तीमारदारी और ग़रीब की मदद लाज़िम है।
3. जो अपने आप को दूसरों से बेहतर समझे वह घमंडी है।
4. हराम माल का सदक़ा देना गंदे कपड़े को ख़ून से धोने की तरह है।
5. बदतरीन आलिम वह है जो बादशाह के साथ उठे बैठे और उसे इल्म न सिखाए।
6. बेहतरीन बादशाह वह है जो इल्म वालों के साथ उठे बैठे और उन से इल्म भी हासिल करे।

हज़रत यूसुफ़ असबात (रह०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, बड़े नेक, अल्लाह से डरने और बुराइयों से दूर रहने वाले थे।

1. दुनिया एक दरिया है जिस के मुसाफ़िर 'लोग' जिस का किनारा 'आख़िरत' और जिस की कशती 'तक़वा' है।
2. ऐसे काम करने से बचो जिन पर माफ़ी माँगने की नौबत आए।
3. आँख, ज़ुबान, कान, और पेट की हिफ़ाज़त करो ताकि लापरवाही से रूस्वाई न हो।
4. कम खाना, कम सोना और कम बोलना ज़िन्दगी के बेहतरीन उसूल हैं।
5. नियत नेक हो तो छोटे काम का फल भी बड़े काम के बराबर हो जाता है।
6. गुस्से को बर्दाशत कर जाओ और ख़ुदा की तरफ़ ध्यान रखो।
7. जो तुम से नीचा हो उस से नर्मी और जो ऊँचा हो उस का आदर करो।
8. सुकून नफ़्स की चाहतों से बचने का नाम है।
9. ऐसी हालत में फंसने से बचो जिस में पछतावा हो और ऐसी बात मत कहो जिस पर अपमानित होना पड़े।
10. सब से बड़ा और बेहतर काम वह है जो ज्ञान के साथ जुड़ा हो।

हज़रत बशर हाफ़ी (रह०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, "मर्व" में पैदा हुए लेकिन बग़दाद में रहते थे। इल्मे उसूल और फ़ुरूग़ के बड़े विद्यावान थे।

1. सब से मुश्किल मगर ऊँचे काम तीन हैं। (i) तनहाई में अल्लाह का डर (ii) ग़रीबी में दानशीलता (iii) जिस से डर हो उस के मुँह पर हक़ बात कहना।
2. अपना हाल ख़ुदा के सिवा किसी और पर मत ज़ाहिर करो।
3. अस्तित्व की चाहत को अपना दुश्मन जानो और उन के विपरीत काम करो।
4. दुनिया में इज़्ज़त तीन चीज़ों में है। (i) किसी से कोई काम न चाहो (ii) किसी को बुरा मत कहो (iii) किसी के मेहमान के साथ मत जाओ।
5. वह शख़्स हरगिज़ आख़िरत की लज़्ज़त को नहीं पा सकता जो दुनिया में शुहरत इज़्ज़त और मरतबा चाहने वाला हो।

6. बुरे लोगों की संगति नेक लोगों से बदगुमानी पैदा कर देती है। जब कि नेक लोगों की संगति बुरे लोगों के लिए भी अच्छी सोच पैदा कर देती है।
7. अल्लाह तआला का शुक्र सिर्फ़ ज़ुबान से अदा करना कम शुक्र है, क्यों कि आँख का शुक्र यह है कि अगर उस से कोई अच्छी चीज़ देखे तो याद रखे, कान का शुक्र यह है कि जो नेक बात सुने उसे याद रखे, हाथों का शुक्र यह है कि उन से जो ले दे वह हक़ हो। पेट का शुक्र यह है कि उस को हलाल रोज़ी और इल्म व सब्र से भरे, पाँव का शुक्र यह है कि नेक काम ही की तरफ़ चले।

हज़रत हातिम असम्म (रह०)

सूफी बुज़ुर्ग, हज़रत शफ़ीक़ बल्ख़ी रह० के मुरीद थे।

1. जब कोई काम करो तो याद रखो कि ख़ुदा देख रहा है, जब बात करो तो याद रखो कि ख़ुदा सुन रहा है, जब ख़ामोश हो तो याद रखो कि ख़ुदा जानता है कि क्यों चुप हो।
2. जल्दबाज़ी बहुत बुरी चीज़ है लेकिन पाँच चीज़ों में अच्छी है। (i) मेहमान के सामने खाना रखने में (ii) मय्यत की तजहीज़ व तकफ़ीन (अन्तिम संसकार) करने में। (iii) बालिग़ लड़की का निकाह करने में। (iv) क़र्ज़ अदा करने में। (v) गुनाह से तौबा करने में।
3. घमंड, लालच और ख़ुद पसंदी की हालतों में ख़ुदा से डरो।
4. चार जगह नफ़्स की हिफ़ाज़त करो:-

(i) नेक काम करो तो दिखावा को दाख़िल न होने दो।
(ii) बात चीत करो तो लालच को नज़दीक न आने दो।
(iii) किसी की मदद करो तो एहसान जताने का इरादा

न रखो।

(iv) रूपया ख़र्च करो तो कंजूसी से बचो और अच्छे मक़सद में ख़र्च करो।

5. तुम्हारे लिए काफ़ी है:-

अगर दोस्त चाहते हो तो खुदा, अगर साथी चाहते हो तो किरामन कातिबीन (दो फ़रिश्ते जो हमेशा इंसान के साथ रहते हैं), अगर नसीहत चाहते हो तो मौत, अगर इबरत चाहते हो तो दुनिया, दोस्त और हमदर्द चाहते हो तो कुरआन पाक।

अबूबक्र बिन दाऊद

(1380 ई० ता 1452 ई०)

धर्म के ऊँचे ज्ञानी, पूरा नाम अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र बिन दाऊद अद्दिमशक़ी अस्सालेह। कई पुस्तकों के लेखक थे।

1. गुनाह का आरम्भ मकड़ी के तार की तरह कमज़ोर होता है लेकिन अंजाम जहाज़ के रस्से की तरह मज़बूत और हार न मानने वाला होता है।
2. अगर मुझ से खुदा का तसव्वुर छीन लिया जाए तो मैं पागल हो जाऊँगा।
3. अपनी चाहतों पर क़ाबू न रखने वाला सब से ज़्यादा कमज़ोर है और सब से ज़्यादा ताक़तवर वह है जो बर्दाश्त की कुव्वत रखता हो।
4. तजुर्बे और जज़्बात के इकट्ठा होने का नाम नज़रिया है।
5. अगर तन्दुरूस्ती चाहते हो तो नेक बनों। नेक बनना चाहते हो तो अक़लमंद बनों, अक़लमंद बनना चाहते हो तो धर्म का अध्ययन करो और खुदा से डरो क्यों कि खुदा

का डर ही अक़्लमंदी की जड़ है।

6. बेवक़ूफ़ के साथ जन्नत में बैठने से अक़्लमंद के साथ क़ैदख़ाने में बैठना बेहतर है।

7. न तो अच्छी ज़िन्दगी से मुहब्बत करो और न ही नफ़रत, लेकिन तुम जो ज़िन्दगी गुज़ार रहे हो उसे अच्छी तरह से गुज़ारो चाहे वह कितनी ही लम्बी या थोड़ी क्यों न हो।

हज़रत अबूबक्र वर्राक़ (रह०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, बल्ख़ में रहते थे। आप को "मुवद्दबुल औलिया" (बुज़ुर्गों का अदर करने वाला) भी कहा जाता है।

1. अक़्लमंदों की संगति उन की उपासना से करो, ज़ाहिदों के साथ उन की ख़ातिर मदारत से और जाहिलों की उन के साथ सब्र से।
2. बदअख़्लाक़ हराम खाने की तरह है। इस लिए उस से बचो।
3. माल की कमी में दुनिया और आख़िरत का फ़ायदा है और माल की ज़्यादती में नुक़्सान।
4. हिकमत की पहली निशानी ख़ामोशी है और सिर्फ़ ज़रूरत के मुताबिक़ बात करना।
5. खुदा अपने बन्दों की जुबान से दो चीज़ें चाहता है तौहीद (खुदा को एक मानना) पर इक़रार और लोगों से नर्म बात चीत करना।
6. खुदा अपने बन्दों के अंगों से दो चीज़ें चाहता है खुदा की

उपासना और मुसलमानों की मदद।

7. नुबुव्वत के बाद हिकमत के सिवा और किसी चीज़ का दर्जा ऊँचा नहीं है।
8. हिकमत तमाम कामों में सही फ़ैसला कर के हुक्म लगाना है।
9. ज़ुबान से बुरी बात न करो, कान से बुरी बात न सुनो, आँख से बुरी चीज़ न देखो, हाथ से बुरी चीज़ न छुओ और पाँव से बुरी जगह न जाओ और दिल से अल्लाह को याद करो।

हज़रत अबूबक्र सय्यद लानी (रह०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, असल वतन फ़ारस था मगर नेशापुर में मृत्यु हुई।

1. जो हक़ बात कहने में हिचकिचा कर चुप रहे वह गूँगा शैतान है।
2. इल्म इख़्तियार करने वाला आज्ञा व रुकावट की पाबन्दी करता है।
3. मख़लूक़ से वह शख़्स आज़ाद हो जाता है जो अपने और अल्लाह के बीच सच्चाई इख़्तियार करे।
4. इंसान को अल्लाह या उस के बन्दे की संगति इख़्तियार करनी चाहिए, क्यों कि अल्लाह तक पहुँचने का सिर्फ़ यही रास्ता है।
5. सब से अच्छा आदमी वह है जो दूसरों में ख़ूबियाँ देखे और अपनी खुबियों को भूल जए।
6. जो हक़ तआला को अपने अस्तित्व पर इख़्तियार करे वह दानवीर है।
7. जो हक़ तआला पर अपने आप को कुर्बान करने को तयार हो कुर्बानी देने वाला है।
8. हक़ के लिए अपनी ख़्वाहिशों को छोड़ कर के यहाँ तक कि अपने नेक इरादों से गुज़र जाना और कुरबान हो जाना भी कुर्बानी है।

9. जो हक़ तआला को अपने दिल के मुक़ाबिले में बड़ा माने वह दानवीर है।
10. बादशाहों का गुस्सा शेरों की तरह और राय बच्चों की तरह होती है। इस लिए उन की संगति से बचो।
11. दुनिया एक हिकमत ख़ाना है और हर शख़्स अपनी ताक़त और दैवज्ञान (ज़ाहिर होना) के अनुसार फ़ायदा हासिल करता है।
12. दौलतमंदों की आवभगत दुर्वेशों के साथ ईमानदारी है और दौलतमंदों के साथ दुर्वेशों की आव भगत बेईमानी है।
13. फ़रिश्ते ज्ञान हासिल करने के लिए अपने पर बिछाते हैं। इस लिए ज्ञान की चाहत अपने दिल में पैदा करो।
14. दुआ हमेशा आख़िरत की ख़्वाहिश के लिए करो।

❖❖❖

❖ एक चवन्नी फ़ुज़ूल ख़र्च होने को कुछ नहीं समझा जाता लेकिन ख़र्च करने वाला यह भूल जाता है कि सीसे के उस छोटे से टुकड़े से ख़रीदी, माचिस की तीलियाँ महीना भर उस के चूल्हे को रौशन रख सकती हैं।

❖ फ़ुज़ूल ख़र्च की जवानी ऐैश में, घर ग्रिहस्थी का ज़माना परेशानी और तंगदस्ती में और बुढ़ापा मातम और निराशा में गुज़रता है।

हज़रत यहया मुआज़ुर्राज़ी (रह०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग, ऊँचे दर्जे के उपदेशक थे और इस कारण लोग आप को "यहया वाइज़" कहते थे।

1. मुसलमानों के तुम पर तीन हक़ हैं (i) अगर फ़ायदा नहीं पहुँचा सकते तो नुक़सान भी न पहुँचाओ (ii) अगर खुश नहीं कर सकते तो दुखी भी मत करो (iii) अगर उस के बारे में अच्छी बात नहीं कह सकते तो बुरी भी मत कहो।
2. जो ज़ाहिर में कुछ और अन्दर से कुछ हों उस के दोस्त कम होते हैं।
3. नेक आमाल से नेक गुमान और बुरे आमाल से बुरा गुमान पैदा होता है।
4. ज़्यादा खाने से नफ़्स मोटा होता है और इबादत में कमी होती है।
5. तौबा के बाद एक गुनाह बदतर है। बनिस्बत 70 गुनाहों के जो तौबा से पहले हों।
6. जो शख़्स नसीहत क़ुबूल नहीं करता वह निरीक्षण से भी नसीहत हासिल नहीं करता।

7. वह दोस्त किस काम का जो ख़ुद तुम्हारी मदद न करे और तुम्हें माँगना पड़े।
8. दुनिया ख़्वाब है और आख़िरत बेदारी। अगर आदमी ख़्वाब में रोए तो बेदारी में हंसता है इसी तरह दुनिया में रोए तो आख़िरत में हंसेगा।
9. सब्र करने वाले की हक़ीक़त, मुसीबत आने के बाद मालूम होती है।
10. सोचे समझे बग़ैर बात मत करो, वरना पछताओगे।
11. रूपया पैसा बिच्छू की तरह हैं। उन में हाथ डालने से पहले उन का मंत्र याद कर लो, वरना ज़हर से नष्ट हो जाओगे और मंत्र यह है कि उन्हें हलाल तरीक़े से हासिल करो और हक़ तरीक़े पर ख़र्च करो।

हज़रत राबिआ बसरी (रह०)

(713 ई० ता 801 ई०)

नेक ख़ातून, जिन्हें "मरियम सानी" कहा जाता है। अच्छी शायरा भी थीं।

1. दिल को क़ाबू में रखना और इख़्तियार होने पर नाजायज़ ख़्वाहिशों से बचना ही मर्दानगी है।
2. जिस तरह मोम अपने आप को जला कर दूसरों को रौशनी पहुँचाती है उसी तरह तुम भी अपने आप को जलाओ।
3. जिस तरह सूई नंगी रह कर दूसरों के तन ढाँकने का सामान करती है उसी तरह तुम भी दूसरों के काम आओ।
4. आप ने फ़रमाया कि मुझे रहमान की दोस्ती से फ़ुरसत नहीं मिलती कि शैतान से दुशमनी करूँ।
5. अच्छे कामों में लगे रहना जिन से लोगों की भलाई हो, बुज़ुर्गी है।
6. औरतों की फ़ज़ीलत के एक मुबाहिसे में फ़रमाया कि कोई औरत नबी नहीं हुई तो किसी औरत ने ख़ुदाई दावा भी नहीं किया, फिर अंबिया, औलिया, सिद्दीक़, शहीद उसी की गोद में प्रवरिश पा कर बड़े हुए।

हज़रत मुजद्दिद अलिफ़ सानी (रह०)

(1563 ई० ता 1624 ई०)

सूफ़ी बुज़ुर्ग और विचारक, असल नाम शैख़ अहमद सरहिन्दी है। अकबर बादशाह के दीने इलाही के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई और मुसलमानों को गुमराही से निकालने के लिए महत्वपूर्ण काम किये।

1. कुफ़्र के बाद सब से बड़ा गुनाह दिल दुखाना है चाहे मुसलमान का हो या काफ़िर का।
2. इंसान तमाम मख़लूक़ात (मानव जाति) में सब से ज़्यादा मुहताज है।
3. शर्मिन्दगी गुनाह के बाद भी तौबा में दाख़िल है।
4. अज्ज़ का ज़ाहिर करना, इबादत है।
5. नर्म आदत वाले और सुशील के लिए जहन्नम हराम है।
6. बेअमल आलिम पारस पत्थर की तरह है जो दूसरों को सोना बताता है और ख़ुद पत्थर का पत्थर रहता है।
7. अपने मुख़ालिफ़ों से बहेस न करो और जो नेक बात हो उसे दोस्तों को भी सुनाओ।

8. सब से बड़ी और अच्छी सदुपदेश यह है कि नबी स० की उपासना करो।
9. सब से अच्छे लोग वह हैं जो दूसरों की ज़रूरत को अपनी ज़रूरत से आगे रखें।
10. कमज़ोर पर हमला करना कायर्ता है। बराबर पर बुरी आदत है और ज़बरदस्त पर बेहयाई है।
11. आख़िरत का काम आज कर, दुनिया का कल पर छोड़ दे।
12. बच्चों को प्यार करना भी ख़ुदा को ख़ुश करना है।
13. दुनिया की मुसीबतों को बरदाश्त कर क्यों कि यह तेरी तरक़्क़ी का कारण बनेंगी।
14. दोस्त के नाराज़ होने के ख़्याल से उसे हक़ बात न बताना दोस्ती का हक़ नहीं है।
15. जिस किसी शख़्स के पास बीवी, घर, नौकर और सवारी हो वह बादशाह है।
16. सब से ज़्यादा मुश्किल नफ़्स पर धर्म मार्ग और नेकी की पाबंदी है।
17. ज़ाहिर असल में पोशीदा का नमूना है।
18. दुनिया में आराम का चाहने वाला बेवकूफ़ और कम अक़्ल है।
19. सब से ज़्यादा अज़ाब आलिम बेअमल पर होगा।
20. दिल आँख के बस में है। आँख बिगड़ेगी तो दिल की रक्षा मुश्किल है और दिल बिगड़ेगा तो शर्मगाह की हिफ़ाज़त

मुश्किल तर है।

21. औरत की नामहरम (अपरिचित) से नर्म तरीक़े से बात चीत करना भी पाप है।

❖ बहादुर की परिक्षा जंग के मैदान में, दोस्त की मुश्किल वक़्त में और अक़्लमंद की गुस्से की हालत में होती है।

❖ एक मर्द को शिक्षा देना सिर्फ़ एक शख़्स को शिक्षिक बनाना है और एक औरत की शिक्षा एक ख़ानदान को शिक्षिक बनाना है।

इब्ने जौज़ी (रह०)

(1116 ई० ता 1200 ई०)

इतिहास कार व मुहद्दिस, जिन्हें कुरआन पाक का पहला मुफ़स्सिर कहा जाता है। "तारीख़ुल मुलूक वलअइम्म" और "किताबुलयाकूत" प्रसिद्ध पुस्तकें हैं।

1. असल कमाल, इल्म और अमल को जमा करने में है।
2. जिस ने दुनिया के मुक़ाबिले में आख़िरत से मुँह मोड़ा वह महरूम (वंचित) रहा और जिस ने अपनी कामनाओं को छोड़ा उस के हिस्से में नेकी आती है।
3. जिस इल्म से दिल में हमदर्दी, दर्द, नर्मी, रंगीनी व रोशनी पैदा न हुई उस का मुताला (अध्ययन) बेकार है।
4. कमीनों के मुक़ाबिले में सिर्फ़ ख़ामोशी से मदद माँगो। (यानी ख़ामोश रहो)
5. बुरा न होना भी नेकी है।
6. अच्छे लोगों की संगति इख़्तियार करो इस से तुम्हारे काम

अच्छे हो जाएँगे।

7. दुनिया में ज़िन्दगी की साँसें बहुत कम हैं और क़ब्र की ज़िन्दगी बहुत लम्बी है।
8. वक़्त को बरबाद मत करो इस की अहमियत को महसूस करो।
9. साँस एक ख़ज़ाने की तरह है। तुम्हारा कोई साँस बेकार न जाए वर्ना क़यामत के दिन तुम्हें अपना ख़ज़ाना ख़ाली देख कर पछतावा और अफ़सोस होगा।

इब्ने अरबी

(1165 ई० ता 1240 ई०)

सूफी बुज़ुर्ग, असल नाम शैख़ अबूबक्र मुहम्मद बिन अली मुहियुद्दीन। 300 के करीब पुस्तकें लिखीं जिन में तसव्वुफ के विषय पर उन की लिखी हुई "अलफुतूहातुल-मक्किया" बहुत प्रसिद्ध है।

1. ऊँचे दर्जे की ख़ूबी यह है कि अपने दुश्मनों के साथ नर्म दिली का व्यवहार करो।
2. इबादत की जान नम्रता (गिड़गिड़ाना) है जिस तरह हड्डी का गूदा अंगों की मज़बूती का कारण है उसी तरह नम्रता के गूंदे से इबादत में जान पड़ती है।
3. जहां तक हो सके शक व शुबहा से बचो।
4. उन लोगों से होशयार रहो जो उलमा की तहरीरों (लिखावट) को तोड़ मरोड़ कर पेश करते हैं।

❖❖❖

❖ कोई आईना इंसान को इतनी हक़ीक़ी तसवीर पेश नहीं करता जितनी उस की बात चीत।

❖ क़ैदी वह है जिस का दिल उस के ख़ुदा की तरफ़ से बन्द हो जाए और क़ैदी वह है जिसे कामनाएँ चारो तरफ़ से घेर लें।

(इब्ने तैमिया)

इमाम ग़ज़ाली (रह०)

(1059 ई० ता 1111 ई०)

धर्म के विधावान और विचारक, पूरा नाम अबू हामिद मुहम्मद बिन हामिद अलग़ज़ाली और लकब "हुज्जतुल-इस्लाम" है। कई पुस्तकें लिखी हैं जिन में "अहयाउल-उलूम-उ-द्दीन" बहुत प्रसिद्ध है।

1. जो दोस्त मुश्किल वक़्त में काम न आए उस से बचो क्योंकि वह तुम्हारा सब से बड़ा दुश्मन है।
2. दिल की गंदगी को ज़ाहिर करने वाली तीन चीज़ें हैं (i) हसद (ii) दिखावा (iii) अहंकार, ख़ुद को बड़ा और दूसरों को हक़ीर समझना अहंकार है।
3. अपने आप को सब से बेहतर समझना जिहालत है बल्कि हर शख़्स को अपने से बेहतर समझो।
4. दुनिया यानी माल व दौलत और शान व शौकत की कामना रखना, समंदर का पानी पीने की तरह है कि जिस क़द्र पिया जाए प्यास ज़्यादा लगती जाती है।
5. भूक के बग़ैर खाना नापसंदीदा है। खाने में कमी मत निकाला करो, अगर पसन्द न हो तो मत खाओ।
6. सब से ऊँचे दर्जे की दौलत अल्लाह का ज़िक्र करने वाली जुबान, उस का शुक्र करने वाला दिल और उपासना करने वाली औरत है।

7. कामना पर विजयी होना फ़रिश्तों का गुण है और कामना से हारना चौपायों का गुण है।
8. तकल्लुफ़ बहुत बढ़ जाए तो यह मुहब्बत में कमी का कारण बन जाता है।
9. ज़ुबान जिस्म का नर्म तरीन और बग़ैर हड्डी का अंग है। अगर बात चीत भी नर्म हो तो ज़ुबान है वरना नुक़सान है।
10. किसी शख़्स का उस के पीछे ऐसा ज़िक्र करना जिसे अगर वह सुने तो दुख हो, ग़ीबत (बुराई) है।
11. ज़ालिम की मौत पर ग़म करना भी ज़ुल्म में शामिल है।
12. कुत्ते से पाँच गुण सीखो। (i) भूका होता है मगर अपने मालिक का दरवाज़ा नहीं छोड़ता। (ii) तमाम रात जागता है और मालिक के घर की चौकीदारी करता है। (iii) ख़्वाह कितना ही मारें किसी दूसरे के दरवाज़े पर नहीं जाता। (iv) उस का कोई मकान नहीं होता। (v) उस के पास कोई माल नहीं होता।
13. लोगों की नेकियों को ज़ाहिर करना चाहिए और बुराइयों को छुपाना चाहिए।
14. बच्चों का सुधार स्कूल में है और औरत का घर में।
15. जितनी चाहे नमाज़ें पढ़ो और रोज़े रखो उस वक़्त तक फ़ायदा नहीं पा सकते जब तक हराम माल से प्रहेज़ न करोगे।
16. हराम माल से सदक़ा देना ऐसा ही है जैसे नापाक कपड़े को पेशाब से धोया जाए।

मौलाना जलालुद्दीन रूमी (रह०)

(1207 ई० ता 1272 ई०)

बड़े सूफ़ी शायर, जिन की मसनवी बहुत प्रसिद्ध है।

1. शहवत (काम वेग, इच्छा) का साँप शुरू ही में मार डालो वरना यह कभी अज़दहा बन जाएगा।
2. अगर कामियाबी हासिल करना चाहते हो तो बराबर मेहनत करो।
3. वह झूट जिस में कोई गुण छुपा हुआ हो उस सच्चाई से बेहतर है जिस से लड़ाई झगड़ा की आशा हो।
4. जब कोई ग़म देखो तो माफ़ी चाहो क्यों कि ग़म तो ख़ुदा की तरफ़ से आता है। तुम अपने काम में लगे रहो।
5. ज़िन्दगी को हमेशा अमानत समझो क्यों कि यह जल्द ही चली जाएगी।
6. बुरा वह शख़्स होता है जो बेअदब हो, क्यों कि अदब में नेकियाँ ही नेकियाँ हैं।
7. बुरा शख़्स नेक लोगों से कपट व हसद रखता है उस से बचो।

8. अगर किसी धर्म से तुम्हें सुधार हासिल हो सकता है तो वह सिर्फ़ इस्लाम है।
9. सिर्फ़ ख़ुदा की इबादत करो और उसी से अपनी ज़रूरतें बयान करो।
10. मानव जाति की सेवा सिर्फ़ ख़ुदा को प्रसन्न करने के लिए करो। लोगों के कुबूल करने से तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।
11. शमा बनने के दावे से प्रवाना बन जाना ज़्यादा गर्व के लायक़ है।

शैख़ सअदी (रह०)

(1184 ई० ता 1291 ई०)

फ़ारसी ज़ुबान के मशहूर शायर, नाम शरफुद्दीन, लक़ब मुसलिहुद्दीन और तख़ल्लुस सअदी था। उन की पुस्तकें "बोस्ताँ" और "गुलिस्ताँ" की गिनती विश्व के कलासीकी साहित्य में होती है।

1. ज़ालिम आदमियों से तो बोझ उठाने वाले गधे और बैल ही अच्छे हैं जो काम तो आते हैं।
2. दूसरों के ग़म से बेख़बर रहने वाला आदमी नहीं हो सकता।
3. तू उन से संबंध न जोड़ जो तुझ से संबंध जोड़ना नहीं चाहते।
4. मतलबी और ख़ुदग़र्ज़ न तो भाई है और न रिश्तेदार।
5. दूसरों के ऐबों का ताना न दो, क्यों कि हर शख़्स अपना बोझ उठाए हुए है।
6. दुश्मन के साथ इस तरह बात करो कि कल को तुम्हें शर्मिन्दा न होना पड़े।
7. इल्म अमल के बग़ैर बेकार है।

8. सूरत पर मत जाओ बल्कि चरित्र को देखो।
9. हक़ को भूलने वाला कुत्ता नाशुक्र गुज़ार इंसान से बहुत अच्छा है।
10. लोगों के साथ ज़्यादा सख़्ती करो और न बहुत नर्मी, क्यों कि दोनों में तेरा नुक़सान है।
11. कमज़ोर पर दया करोगे तो ताक़तवरों के अत्याचार से बच जाओगे।
12. वह झूट जिस में कोई गुण हो उस सच्चाई से बेहतर है जिस से फ़साद का डर हो।
13. इंसान की ज़ुबान से उस के ऐब और ख़ुबियों का पता चलता है।
14. साँप के बच्चे भी साँप ही होते हैं, इस लिए उस के बच्चे की हिफ़ाज़त करना बेवक़ूफ़ी है।
15. सियाह दिल को नसीहत न करो क्यों कि पत्थर में लोहे की सलाख़ भी नहीं धंसती।
16. अच्छा दोस्त वह है जो मुसीबत में काम आए।
17. ख़ुदा के मानव जाति से नेकी कर ख़ुदा तुझे माफ़ कर देगा।
18. घमंड करने वाला सिर के बल गिरता है।
19. किसी से माँगने के बज़ाए भूक से मरना अच्छा है।
20. आहिस्ता-आहिस्ता लेकिन बराबर चलना कामियाबी की ज़मानत है।

21. पापी आदमी बार-बार बुलाने से भी नेकी की तरफ़ नहीं आता।
22. हुनरमंद आदमी जहाँ जाता है इज़्ज़त पाता है। बेहुनर हमेशा ज़लील होता है।
23. अक़्लमंद आदमी कभी भी कोई बड़ा काम नातजर्बाकार को नहीं सौंपते।
24. बेकार बोलने से मुँह बन्द रखना बेहतर है।
25. ज़ालिम पर रह्म करना मज़लूमों पर जुलम है।
26. जो तू नहीं जानता वह किसी से पूछ ले क्यों कि यह तेरे लिए बहुत बेहतर है। वरना ज़लील व अपमानित होगा।
27. जो आदमी ताक़त के दिनों में नेकी नहीं करता वह कमज़ोरी के दिनों में कष्ट उठाता है।
28. अक़्लमंदों के नज़दीक अपनों से वफ़ा न करने वाला दोस्ती के क़ाबिल नहीं।
29. ऐ भाईयो तुम्हें मिट्टी ही में जाना है, इस लिए तुम मिट्टी होने से पहले मिट्टी हो जाओ।

फ़िरदौसी

(940 ई० ता 1020 ई०)

प्रसिद्ध ईरानी शायर। पूरा नाम अबुलक़ासिम हसन फ़िरदौसी है। मशहूर रचना "शाहनामा" है। जिस में 60 हज़ार अशआर हैं और जिस की गिनती संसार की साहित्य की पुस्तकों में होती है।

1. उस शख़्स से बचने की कोशिश करो जो मजलिस से बेइज़्ज़त हो कर निकले।
2. शेर का बच्चा शेर और गीदड़ का बच्चा गीदड़ ही होगा चाहे उस का पालन पोषण कहीं भी हुआ हो।
3. मेरा वंश तालिका न पूछ, मेरी तलवार खुद मेरे ख़ून से तुझे सूचित करेगी।
4. बादशाहों से मत डरो, डरना है तो बादशाहों के बादशाह से डरो।
5. आलिम बग़ैर पानी के भी संतुष्ट हो जाता है जबकि जाहिल दरिया में रह कर भी प्यासा रहता है।
6. हक़ीक़ी इश्क़ तो वह है जो काम के जज़्बे को और तेज़ कर दे।
7. सच पर चलने वालों का हर क़दम शैतान के सीने पर होता है।

हाफ़िज़ शीराज़ी (रह०)

(1325 ई० ता 1388 ई०)

फारसी ज़ुबान के प्रसिद्ध शायर, असल नाम ख़्वाजा शमसुद्दीन मुहम्मद है।

1. ज़माना, किताबों से बेहतर अध्यापक है।
2. हर शख़्स में कोई न कोई ऐब ज़रूर होता है। अक़्लमंद वह है जो अपना ऐब ख़ुद महसूस करता है, दुनिया महसूस नहीं करती, और बेवकूफ़ वह है जो अपना ऐब ख़ुद महसूस नहीं करता बल्कि दुनिया महसूस करती है।
3. उस से बड़ा कमीना कोई नहीं जो अपने पर कृपा करने वाले को कमीना समझे।
4. किसी को देने में जो बात है वह किसे से लेने में नहीं है।
5. ख़ुदा का आज्ञा पालन न करने का अंजाम बहुत भयानक होता है।

❖❖❖

❖ जिस ने किसी के आगे हाथ फैलाया, गोया वह मर गया लेकिन उस से पहले वह मरा जिस ने हाथ फैलाने वाले से "नहीं" कहा। (अब्दुर्रहीम ख़ानख़ानान)

❖ अगर तुम ने हर हाल में ख़ुश रहने का फ़न सीख लिया तो यक़ीन कर लो कि ज़िन्दगी का सब से बड़ा फ़न सीख लिया। (ख़लील जिबरान)

हकीम बूअली सीना

(980 ई० ता 1037 ई०)

प्रसिद्ध वैद और विज्ञानी, पूरा नाम बूअली अलहुसैन बिन सीना है। "मुस्लिम दुनिया का अरस्तू" का लकब दिया गया। कई किताबें लिखीं जिन में अलकालून, और अल-शिफा बहुत प्रसिद्ध है।

1. इतना खाओ जितना हज़्म कर सको इतना पढ़ो जितना जज़्ब कर सको।
2. तलवार, तोप और बदूंक से इतने लोग नहीं मरते जितने ज़्यादा खाने से मरते हैं।
3. बेहतर बात ज़िक्र है, बेहतर काम इबादत और बेहतर आदत इल्म है।
4. दुनिया से अलग रहने वाला पारसा है और अपनी किसमत पर शुक्र अदा करने वाला भी पारसा है।
5. ज़िक्र से ख़ाली बात बेअर्थ है। इबरत से ख़ाली नज़र खेल है और फ़िक्र से ख़ाली ख़ामोशी भूल है।

6. हक़ीक़ी खुबसूरती का चश्मा दिल है। अगर यह सियाह हो तो चमकती आँखें कुछ काम नहीं देतीं।
7. जहाँ तक मुम्किन हो माल की कामना करने वाला न बन।
8. जो शख़्स बदला लेने के तरीक़ों पर ग़ौर करता रहता है। उस के ज़ख़्म हमेशा ताज़ा रहते हैं।
9. ज़िन्दगी में तीन चीज़े बहुत सख़्त हैं (i) मौत का डर (ii) सख़्त बीमारी (iii) क़र्ज़ की रुस्वाई।

निज़ामुल-मुल्क तूसी

(1017 ई० ता 1092 ई०)

नामवर अक्लमंद और ईरान के बादशाह मलिक शाह सलजूकी का वज़ीरे आज़म। बग़दाद में मदरसा निज़ामिया बनाया। "सियासत नामा" प्रसिद्ध रचना है।

1. दोस्त हज़ार हों तब भी क़म हैं और दुश्मन एक हो तब भी ज़्यादा है। यानी दुश्मन कम और दोस्त ज़्यादा बनाओ।
2. दुर्भागी वह है जो गुस्से की हालत में अपने अस्तित्व का मालिक न रहे।
3. लोग माल से मुहब्बत करते हैं जिस किसी के पास होगा सब उस की इज़्ज़त करेंगे जब हाथ से चला जाएगा तो कोई उस का सलाम भी कुबूल न करेगा।
4. पाँच चीज़ें इंसान मेहनत से हासिल कर सकता है। (i) ज्ञान (ii) आदर (iii) बहादुरी (iv) जन्नत (v) दोज़ख़ के अज़ाब से रिहाई। और पाँच चीज़ें ऐसी हैं जिन में इंसानी कोशिश कारगर नहीं होती। (i) बीवी मुवाफ़िक़ चाहना (ii) औलाद पैदा करना (iii) माल का पाना (iv) ऊँचा स्थान पाना (v) लम्बी उम्र हासिल करना।

ख़लीफ़ा मामून रशीद

(786 ई० ता 833 ई०)

अब्बासी ख़ानदान का सातवाँ ख़लीफ़ा, असल नाम अब्दुल्लाह था। उस के राज्य के ज़माने में शिक्षा व कारीगरी ने बहुत तरक्क़ी की।

1. गुनाह इतने करो जिन की तुम ताब ला सको, यानी जितनी तुम सज़ा भुगत सको।
2. अपने कामों की बुनियाद क़हर व ग़ज़ब के बजाए मुहब्बत व दोस्ती पर रखो।
3. गुस्से का बेहतरीन हल ख़ामोशी है।
4. दोस्त वह है जो अकेले में तुझ से तेरे ऐब बता दे, और तेरी ग़ैर मौजूदगी में तेरी तारीफ़ करे और मुश्किल वक़्त में तेरे साथ हो।
5. आमदनी के मुताबिक़ रूपया ख़र्च करो, ऐसा करने से कभी मुहताज न होगे।
6. ऐसी सच्चाई से बचो जो किसी को फ़ायदा न पहुँचाए और लोगों का दिल दुखाए।
7. कम कहना और ज़्यादा करना। कहना और न करने से बहुत बेहतर है।

8. सच्चा शख़्स अगर किसी भलाई के लिए झूठ भी बोले तो लोग उस को सच समझेंगे और झूठा अगर सच भी बोले तो लोग उस को झूठ समझेंगे।
9. जो तुम्हारे बस में हों उन पर ज़ुल्म न करो। हो सकता है कि कल तुम उन के बस में हो जाओ।
10. ऐसे फ़ायदे से बचो जिस से दूसरों का नुक़सान हो।
11. माल जमा करना आसान है लेकिन संभालना बहुत मुश्किल है।
12. अच्छे अख़लाक़ और मीठी बातों वाले से ख़ुद बख़ुद मुहब्बत हो जाती है।
13. जिस शख़्स को दूसरों की बुराई करते पाओ उसे अपने दोस्तों में से निकाल दो।
14. अपनी ज़ुबान से अपनी तारीफ़ करना लोगों की अपने बारे में राय ख़राब करना है।

❖❖❖

❖ माँ की सेवा नफ़ली इबादत से बेहतर है।

❖ माँ की ख़िदमत करने से जन्नत मिलती है जबकि माँ की नाराज़गी से दोज़ख़।

❖ सच्चाई यह है कि जो बात दिल में हो वही कहो।

❖ चार चीज़ें चार चीज़ों से ज़्यादा रखो (i) रोना हंसने से (ii) जागना सोने से (iii) ख़ामोश रहना बोलने से (iv) कम खाना, बहुत खाने से।

यहया बरमकी

अब्बासी ख़लीफ़ा हारून रशीद का मशहूर वज़ीर।

1. जो भी अच्छी बात सुनों उसे लिख लो फिर याद कर लो और फिर आगे बयान करो।
2. सच्चाई से नेकी की, मुताला (अध्ययन) से ज्ञान की, नेकरवी से हुस्न की, नेक तरीक़े से ख़ानदान की, नाप तौल से ग़ल्ला की और सादा लिबास से औरत की हिफ़ाज़त होती है।
3. जिस शख़्स में दानशीलता और इल्म घमंड के साथ हो उस से यह कहीं बेहतर है कि उस में बख़ीली और जिहालत सब्र के साथ हो।
4. जो शख़्स अपना क़ीमती वक़्त बेकार नहीं ख़र्च करता और जिस को ख़्यालात पर क़ाबू होता है वही शख़्स विद्यावान होता है।
5. बेहतरीन इंसान वह है जो मालदारी के ज़माने में ख़ुदा का शुक्रगुज़ार हो और ग़रीबी के वक़्त सब्र से काम ले।

6. आलिम व अक़्लमंद वही है जो रोज़गार की घटनाओं से ऐसा ही बेपरवाह हो जैसे दरिया अपने में कंकर पत्थर फेंके जाने से होता है।
7. सच्चा दोस्त वह है जो ख़ुद बख़ुद या किसी की सिफ़ारिश पर नफ़ा पहुँचाए।
8. जिस तरह शहद की मक्खी फूल को बाक़ी रख कर उस से सिर्फ़ शहद लेती है उसी तरह शासक को ज़रूरी है कि प्रजा की हैसियत को क़ायम रख कर उन से लगान वसूल करे।
9. कुदरत के क़ानून से फिरने वाला कभी सज़ा से सुरक्षित नहीं रह सकता।
10. उम्र के किसी हिस्से में भी औरत को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ नहीं छोड़ना चाहिए।
11. जिस चीज़ के देने का इरादा कर लिया गया हो फिर उस के देने में देरी करना इन्तिहाई दर्जे की कंजूसी है।
12. चोर और जुवारी तौबा कर लेते हैं लेकिन कोई झूटा सच नहीं बोल सकता।
13. एक बार कहा, मैं ने यक़ीन किया। दूसरी दफ़ा कहा, शक हो गया। क़सम खाई झूट समझा।
14. ज्ञान हासिल करना चाहते हो तो फिर सख़्तियाँ बरदाश्त करना सीखो।
15. अक़्लमंद की पहचान किताब (मकतूब) तहदीद और

रसूल (मुराद सफ़ीर) से होती है।

16. नफ़सानी कामनाओं को तरक़्क़ी देने वाला किसी क़िस्म का बोझ अपने कंधों पर नहीं उठा सकता।

17. इंसान में मौजूद हवासे ख़मसा (देखने,सुनने,सूंघने,चखने,और छूने) में से अगर एक भी बेक़ाबू हो जाए तो दिमाग़ में मौजूद तमाम ख़ूबियाँ नष्ट हो जाती हैं।

18. रागनी वह है जिस से तबीयत में आनंद या नर्मी पैदा हो या रंज व ग़म का असर महसूस हो। बाक़ी सब मुसीबत और सिर का दर्द है।

वारिस शाह

(1821 ई० ता 1904 ई०)

सूफी बुज़ुर्ग, पंजाबी ज़ुबान के मशहूर शायर और "हीर" के ख़ालिक़, पूरा नाम हाफ़िज़ सय्यद वारिस अली शाह है।

1. औरत, तलवार, फ़क़ीर और घोड़ा, चारों किसी के दोस्त नहीं।
2. लेन देन में धोका दूसरे को नहीं खुद तुम्हें नुक़सान पहुँचाता है।
3. उस रास्ते पर चलो जो बन्दे को ख़ालिक़ से मिलाता है।
4. मोहताजी का दूसरा नाम उपासना है उस से बरकत बढ़ती है।
5. जो क़ौम अपनी बेटियों को क़त्ल करती है वह कभी कामियाबी नहीं पाती।
6. जिस तरह बादलों की छावँ आनी जानी है बिल्कुल उसी तरह इंसान की ज़िन्दगी है।
7. तमीज़दार (सभ्य) औरत घर के दीपक की तरह होती है।
8. अच्छे काम किया करो, इस से दिल खुश होता है।
9. जिस के काम रब बनाता है बन्दे उस का काम कैसे बिगाड़ सकते हैं।

10. बड़े से बड़ा और छोटे से छोटा हम सब राज्य के मुलाज़िम और सेवक हैं।
11. चरित्र, अख़लाक़ और हिम्मत पर इंसानी ज़िन्दगी की सारी इमारत खड़ी है।
12. हमें कभी भी तहज़ीब और शराफ़त को हाथ से नहीं छोड़ना चाहिए।
13. जब तक कारीगरों की पूरी हमदर्दी और एक साथ काम करना न हो, मशीन भी सही काम नहीं करती।
14. कुदरत हालात के मुताबिक़ ऐसा आदमी पैदा कर देती है जिस की वक़्त और हालात को ज़रूरत होती है।
15. ऐ नवजवानों! सेवा हिम्मत और बरदाश्त के सच्चे मनोभाव को ज़ाहिर करो और ऐसी शरीफ़ाना और बलंद मिसालें क़ायम करो कि आप के ज़माने के लोग और आने वाली पीढ़ीयाँ आप की उपासना करें।
16. अगर कोई शानदार काम अंजाम देना चाहते हो तो मुल्क की क़ौमी ज़िन्दगी में अपना सही मक़ाम हासिल करने के लिए, सेवा, तकलीफ़ और कुरबानी देना सीखो।
17. हुकूमत का पहला कर्तव्य मुल्क में शान्ति क़ायम करना है ताकि राज्य की तरफ़ से प्रजा को उस की ज़िन्दगी, धन और धार्मिक विशवास के रक्षा की पूरी पूरी ज़िम्मेदारी हासिल हो।

क़ाइदे आज़म मुहम्मद अली जन्नाह

(1876 ई० ता 1948 ई०)

महान लीडर और पाकिस्तान के बनाने वाले। हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने इन की रहनुमाई (नेतृत्व) में अंगरेज़ों और हिन्दुओं से टक्कर ले कर अपने लिए एक आज़ाद मुल्क हासिल किया। एक सच्चे, उसूल पसन्द और बाहिम्मत लीडर।

1. मैं आप को काम में लगे रहने की चेतावनी देता हूँ, काम और सिर्फ़ काम।
2. बराबरी और भाईचारा हो तों जुमहूरियत बनती है।
3. सियासत और धर्म को अलग अलग नहीं किया जा सकता।
4. सब से बेहतर मुक्ति का ज़रिया यह है कि सच्चाई के लिए शहीद की मौत मर जाए।
5. कम ख़र्ची एक क़ौमी कर्तव्य है।
6. ज्ञान तलवार से भी अधिक शक्तिशाली है। इस लिए ज्ञान को अपने मुल्क में बढ़ाएँ।

7. एक दूसरे पर भरोसा ही एक दूसरे की मदद करने को बढ़ाता है।
8. हमें ना उम्मीद, निराशा और हत्साहस नहीं होना चाहिए।
9. मेहनत करो, काम करो और ईमानदारी और ख़ुलूस (निष्कपटता) के दामन को मज़बूती से थाम लो।
10. इस्लामी धर्म के लोग एक जिस्म की तरह हैं और मुसलमान चाहे कहीं हो उस के अंग व अज़्व हैं।
11. मुहज़्ज़ब (सभ्य) लोग कभी इंसानियत और सदाचार के वस्त्र को उतार कर हैवानियत के वस्त्र को नहीं ओढ़ते।

अल्लामा इक़बाल (रह०)

(1877 ई० ता 1938 ई०)

शायर और विचारक, पाकिस्तान का सिद्धान्त पेश किया और अपनी शायरी से हिन्दुस्तान के मुसलमानों को जगाया। मशहूर किताबें 'बाले जिबरील' 'बाँगे दिरा' 'ज़रबे कलीम' 'अरमग़ाने हिजाज़' और पयामे मशरिक़ हैं।

1. मुसलमानों के लिए शरण की जगह सिर्फ़ कुरआन पाक है।
2. कुरआन करीम का सिर्फ़ अध्ययन ही न करो, बल्कि उस को समझने की भी कोशिश करो।
3. रसूल स० से मुहब्बत दीन का सिर भी है और दुनिया का वसीला भी। इस के बग़ैर इंसान न दुनिया का है न दीन का।
4. ज्ञान की तलाश जिस रंग में भी की जाए इबादत की एक शक्ल है।
5. इस्लाम ही हमारा वतन है और इस्लाम ही हमारी नस्ल है जैसा कि हज़रत सलमान फ़ारसी ने फ़रमाया था। मुसलमान इब्ने इस्लाम इब्ने इस्लाम।
6. दुनिया एक बहुत महत्वपूर्ण स्थान है और उस से सही लाभ उठाने के लिए हमें पूरे तौर पर इंसान बनने की

कोशिश करना चाहिए।

7. सिफ़ारिश खुददारी के बिल्कुल विरुद्ध है।
8. एक सोचने वाले ज़िन्दा इंसान के ख़यालात में परिवर्तन होता रहता हैं। परिवर्तन नहीं होता तो पत्थर में।
9. एक ही मक़सद की लगन वाला आदमी ही सियासी और समाजी इंक़िलाब पैदा करता है, राज्य क़ायम करता है और दुनिया को नियम देता है।
10. अस्तित्व को बरदाश्त करने की ताक़त लोगों में हो तो ख़ानदानों का निर्माण होता है। क़ौमों में हो तो राज्य क़ायम होता है।
11. यक़ीन एक बड़ी ताक़त है।
12. इंसाफ़ एक अनमोल ख़ज़ाना है लेकिन हमें लाज़िम है कि उसे दया की लूटमार से सुरक्षित रखें।
13. मुसीबत ख़ुदा की तरफ़ से एक दान है, ताकि इंसान पूरी ज़िन्दगी का मुशाहिदा (अवलोकन) कर ले।
14. इतिहास एक तरह का भारी भरकम ग्रामूफ़ून है जिस में क़ौमों की पुकार सुरक्षित हैं।
15. मेरा विश्वास है कि इंसानी गिरोहों के मालियती बीमारियों का बेहतरीन इलाज कुरआन से निकाला गया है।
16. विरोधी को भी नर्मी से समझाओ। दिल की फ़ितरत ही ऐसी है कि वह मुहब्बत से क़ाबू में आ सकता है। विरोध और दुश्मनी से क़ाबू में नहीं आ सकता।

17. अगर तुम्हारे दिल में इस आदेश का सच्चा मनोभाव (जोश) मौजूद है कि हम इज़्ज़त व आबरू की ज़िन्दगी बसर करें तो एकता की सूरत पैदा करो।
18. इंसान की रूह की असली हालत ग़म है। खुशी एक थोड़ी देर रहने वाली चीज़ है।
19. ज़िन्दगी का राज़ यही है जहाँ रहो, जिस हालत में रहो, खुश रहो और संतुष्ट रहो।
20. माल जमा करने की सिर्फ़ एक ही सूरत जायज़ है और वह यह है कि जमा करने वाले की नियत दीन की राह में ख़र्च करने की हो।
21. आज कल शिक्षा ज़्यादा है लेकिन ज्ञान नहीं। पहले ज़माने में ज्ञान ज़्यादा था और शिक्षा कम।
22. ज्ञान का प्रारम्भ अनुभूत से होती है।
23. ग़रीबी की पहली मंज़िल हलाल तरीक़े से कमाना है। ईमान की रोशनी भी हलाल कमाई ही से पैदा होती है।
24. मेहमान नवाज़ी पैग़मबरों का गुण है।
25. इस्लाम की नज़र लोगों की ज़ाती शराफ़त पर है धन व ख़ानदान पर नहीं है।
26. इंसान को हमेशा इस आदेश का एहसास रहना चाहिए कि नेक काम कभी बरबाद नहीं जाता। यह ख़्याल ग़लत है कि उस का फल सिर्फ़ आने वाली ज़िन्दगी में मिलेगा।
27. काम मेरी निगाह में ऐसा ही पवित्र है जैसे इबादत।

28. याद रखो इंसान के बाक़ी रहने का राज़ इंसानियत के आदर में है।
29. सब्र मुसलमान के लिए सब से बड़ी चीज़ है।
30. हर बात में खुदा पर भरोसा रखना मुसलमान का काम है।
31. गुलामी और हुकूमत बहुत बड़ी धिक्कार है।
32. यह आदेश बड़ा अफ़सोसनाक है कि किसी शख़्स का ज्ञान व दया या आदर हमें हक़ बात कहने से रोके रखे।
33. गुलामी बहुत बड़ी धिक्कार है, गुलामी जुबान से वह सब कुछ कहलवा सकती है जो इंसान नहीं कहना चाहता।
34. एक बड़े उस्ताद और अध्यापक की हैसियत सूरज की सी होती है जो अपनी रोशनी और गर्मी हर चीज़ तक थोड़ा बहुत पहुंचा सकता है।
35. विरुद्ध कुव्वतों से हरगिज़ न डरो। उन से पराक्रम जारी रखो क्यों कि पराक्रम में ज़िन्दगी का राज़ छुपा है।

ख़ुशहाल ख़ाँ ख़टक

(1613 ई० ता 1689 ई०)

पशतू ज़ुबान के महान शायर, लगभग 40 हज़ार अशआर (कविताएँ) अपनी यादगार छोड़े।

1. सच्चे लोगों के मुख पर बहार की सी ताज़गी और झूटों के मुख पर पतझड़ की सी उदासी छाई होती है।
2. मेरे सच बोलने की वजह से मेरे गाँव में मेरा कोई भला चाहने वाला नहीं।
3. बीमारी से मर जाओ लेकिन एहसान की दवा मत खाओ।
4. इंसान का कमाल तो यह है कि वह बादल की गरज व बिजली भी हो और तूफ़ान भी।
5. नामर्द, ख़ानदान पर और मर्द अपने नये संसार के निर्माण पर गर्व करता है।
6. ग़ैरतमंद या तो दुनिया में कामियाब होता है या फिर कुरबान होता है।
7. सहर (प्रातःकाल, सवेरा) के समय मोमिन (ईशवरवादी) की आँख से गिरने वाले आँसू जहन्नम की आग भी बुझा सकते हैं।
8. बुद्धिमान वह है जो अपनी कमियाँ देखे। और मूर्ख है वह जो अपनी अच्छाइयों पर घमंड करे।
9. मुझे उस इंसान की आज़ादी बेफ़िक्री और ख़ुशी पर रश्क आता है जो न तो ज़र (दौलत) रखता है न ज़मीन।

सुक़रात

(399 क़० म० ता 469 क़०म०)

महान यूनानी विचारक और सुधारक, सच्चाई और ईमानदारी का प्रेमी, जिसे एथींज़ की अदालत ने सज़ाए मौत दी, और सुक़रात ने हंसी ख़ुशी ज़हर का प्याला पी लिया।

1. बुरे कामों पर शर्मिन्दगी का इज़हार न करना दूसरी ख़राबी है।
2. दौलत से गुण व नेकी पैदा नहीं होती बल्कि गुण और नेकी से दौलत में बढ़ोतरी होती है और हमेशा याद रखो कि विजय ताक़त की नहीं बल्कि सच्चाई की होती है।
3. जवानी में आधा खाओ और आधा बचाओ कि जवानी के वक़्त जमा किया हुआ बुढ़ापे में काम आता है।
4. ज्ञानी, दीन का डाक्टर होता है और माल, दीन का मर्ज़ अगर डाक्टर ख़ुद मर्ज़ में फंस जाए तो दूसरों का इलाज किस तरह कर सकता है।
5. जिस चीज़ का ज्ञान नहीं, उस के बारे में कुछ मत कहो।
6. जिस चीज़ की ज़रूरत नहीं उस की तलाश मत करो।
7. जो रास्ता मालूम नहीं उस पर सफ़र मत करो।
8. अच्छी बात जो भी कहे ध्यान से सुनों क्यों कि ग़ोता ख़ोर के ज़लील होने से मोती की क़द्र व क़ीमत में कोई कमी

नहीं होती।

9. तिर्याक़ की मौजूदगी का यह मतलब हरगिज़ नहीं कि उस की उम्मीद पर ज़हर खा लिया जाए।
10. जो खुदा से नहीं डरता वह सब से डरता है और जो खुदा से डरता है वह किसी और से नहीं डरता।
11. नेक चलन होना ऊँचे दर्जा की ख़ूबी है।
12. मर्द आँख है तो औरत उस की बीनाई है। मर्द फूल है तो औरत उस की खुशबू है।
13. लिखावट एक ख़ामोश आवाज़ है और क़लम, हाथ की ज़ुबान है।
14. जिन की ज़रूरतें कम होती हैं वह खुदा के क़रीब होते हैं।
15. जटिल और नामालूम रास्तों पर मत चलो अगरचे वह लम्बे न हों और सीधे रास्ते के लम्बे होने का डर न करो।
16. खुदा की नेमत (सम्पत्ति) के बदले के लिए तीन चीज़ें ज़रूरी हैं

    (i) ज़्यादा शुक्र (ii) फ़र्ज़ इबादत (पूजा) (iii) गुनाह से तौबा।
17. बेवकूफ़ शख़्स वह है जो दबे हुए झगड़े को उभारे और जो काम अच्छे तरीक़े से हो सकता हो उसे लड़ाई झगड़े तक पहुँचा दें।
18. खुदकशी,(आत्महत्या) बहुत बड़ा पाप है।

अफ़लातून

(347 ता 427 क़॰म॰)

यूनानी विज्ञानी, सक़रात का शागिर्द और अरस्तू का उसताद। असल नाम "अरस्तू क्लीस" था। "दी पब्लिक" प्रसिद्ध रचना है।

1. जाहिल की ज़िन्दगी और अक़्लमंद की मौत पर दुनिया हमेशा आँसू बहाती है।
2. जिस जगह अक़्ल होगी, वहाँ लालच व बुराई कम होगी।
3. अपने आप को विजय करना ही सब से बड़ी विजय है।
4. ज़िन्दगी जब तक नेक कामों का ज़रिया न हो अच्छी नहीं कही जा सकती।
5. बुराई को भलाई का ज़रिया न बनाओ।
6. ज्ञान हासिल करने में शर्म उचित नहीं क्यों कि जिहालत शर्म से बुरी है।
7. बुरी आदत वाला वह है जो लोगों की बुराइयाँ तो ज़ाहिर करे लेकिन अच्छाइयाँ छुपाए।
8. गुस्से की मात्रा बात चीत में इतनी होनी चाहिए जितना

आटे में नमक।

9. ख़ामोश रहने में ही इंसान की सुरक्षा है।
10. ज़्यादा सदुपदेश भी आरोप का कारण बनती है।
11. ऐसे शख़्स की बिप्ता सुनो जो किसी मुसीबत में गिरिफ़्तार हो। शर्त यह है कि वह मुसीबत बुरे काम की वजह से न हो।
12. अपने भेद को न छुपा सकने वाला सब से ज़्यादा कमज़ोर शख़्स है।
13. वह शख़्स अक़्लमंद नहीं जो संसार के आनन्द से ख़ुश और मुसीबतों से घबरा जाता है।
14. जिस शख़्स को सोच विचार की आदत है वह अपनी रूह से आमने सामने बात करता है।
15. हर रोज़ आईने में मुँह देखा करो। अगर सूरत बुरी लगे तो बुरे कामों से बचो कि इकट्ठी दो बुराइयाँ बुरी हैं। अगर सूरत अच्छी है तो बुराई कर के उसे ख़राब मत करो।
16. वह शख़्स हकीम कहलाने का हक़दार है जिस की बात व काम में फ़र्क़ न हो।
17. ज्ञानी की परिक्षा ज्ञान की ज़्यादती से नहीं होती बल्कि देखना यह है कि उपद्रवकारी (शरारती) बातों से वह किस तरह बचते हैं।
18. ज्ञान से मुहब्बत करना चतुर से मुहब्बत करना है।

19. बात करने से पहले सोच लो वरना पछताना पड़ेगा।
20. कम उम्र और लम्बा काम, चतुर वह है कि उम्र को ज़रूरी कामों में बिताए।
21. राजा एक दरिया की तरह है और प्रजा छोटी नदियाँ। अगर दरिया का पानी मीठा होगा तो नदियाँ भी मीठा पानी देंगी और अगर दरिया का पानी कड़वा होगा तो ज़रूर नदियों का पानी भी कड़वा होगा।
22. अपने कहने पर अमल न करने वाला शख़्स उस अंधे की तरह है जिस के पास चिराग़ तो हो लेकिन रास्ता न देख सके।

अरस्तू

(322 ता 387 क़०म०)

मशहूर यूनानी फलसफी (विज्ञानि), गणित और फलकियात का माहिर, अफलातून का छात्र और सिकंदरे आज़म का अद्धयापक था। इल्मे तबीआत, फलसफ़ा, नफसियात, हयातियात और शायरी पर किताबें लिखने वाला पहला विचारक माना जाता है। "बाबाए हयातियात" लकब है।

1. गुस्सा हमेशा बेवकूफ़ी से शुरू हो कर पछतावे पर ख़त्म होता है।
2. जो बात मालूम हो उस को बताने में शर्म न करो।
3. किसी बात से निराश न हो क्यों कि इस से उम्र घट जाती है।
4. जो मौत से न डरे वह बहादुर और मौत से डरने वाला सब से बड़ा कायर है।
5. किसी के ऐब मत तलाश करो, वरना हो सकता है कि दूसरे तेरे ऐब तलाश करें।
6. जवाब देने में जल्दी न करो वरना आख़िर में शर्मिन्दगी होगी।
7. लालच को दिल में जगह न दे कि तेरी कुव्वत दूसरों से ज़्यादा नहीं है।
8. सूरत बग़ैर चरित्र के एक ऐसा फूल है जिस में खुशबू कम

और काँटे ज़्यादा हों।

9. मौत एक चीता है कमीनगाह में कि जिस के नीचे से रिहाई नामुम्किन है।
10. आदत तबीयत को कमज़ोर कर देती है और उस के ख़िलाफ़ काम करवाती है।
11. इंसान के ज़ाहिरी कारणों में इज़्ज़त का मरतबा सब से ऊँचा है।
12. ज़िन्दगी की सब से बड़ी जीत नफ़्स पर विजय पाना है।
13. लगन के बग़ैर किसी में भी बड़ी प्रतिभा पैदा नहीं होती।
14. जो चीज़ हमारी आदत से दूर हैं वह अक़्ल से भी दूर हैं।
15. अच्छे अख़्लाक़ से ज़िन्दगी सुकून व आराम से बसर होती है इस को सब संसकारों से आगे रखो।
16. दोस्ती जितनी पुरानी हो उतनी ही उम्दा, मज़बूत होती है।
17. रश्क से बचो मगर जिस रश्क में सुधार की उम्मीद हो उसे ज़रूर अपनाया करो।
18. अगर कोई तेरे हक़ में बुरा करे या तू किसी से नेकी करे तो दोनों को भूल जा।
19. जो शख़्स ज्ञान हासिल करने के लिए तकलीफ़ो को नहीं उठा सकता उसे जिहालत की सख़्तियाँ उम्र भर झेलना पड़ती हैं।
20. बुराई को बुराई से ख़त्म करना अगरचे सही बात है मगर बुराई को अच्छाई से ख़त्म करना बेहतर है।
21. लोगों पर अत्याचार न करना भी दानशीलता है।

22. अत्याचारियों से संबंध न रख कि बदले के दिन उस की पूछ ताछ तुझ से होगी।
23. गुरबत, इंक़लाब व जुर्म की माँ है।
24. मुसीबतें और दुख हमें कम हिम्मती की वजह से भयानक दिखाई देती हैं।
25. औरत की तरक़्क़ी या पस्ती पर क़ौम की पस्ती या तरक़्क़ी का दारोमदार होता है।
26. अपने मुलाज़िम से राज़ कहना उसे मालिक बनाने की तरह है।
27. सब से आसान और अच्छा फ़ायदेमंद काम कम बोलना है।
28. सब से बुरा इंसान वह है जो इस बात की परवाह न करे कि लोग उसे देख रहे हैं।
29. सिर्फ़ शिक्षा से इंसानी शराफ़त को हासिल करना ऐसे है जैसे कि कीमिया के ज्ञान से ताँबे को सोना बनाना।
30. तमाम कामों में सावधानी पसंदीदा है, सिवाए उन कामों में जो ग़म से छुटकारा दिलाएँ।
31. गुज़रे हुए कामों पर अफ़सोस न करो, वरना तुम्हें और अफ़सोस का सामना करना पड़ेगा।
32. बुलंद ज़िन्दगी की चार निशनियाँ हैं। (i) अच्छा बोलना (ii) अच्छा कर्म व चरित्र (iii) अच्छी नियत (iv) अच्छी संगति।
33. ऐसे शख़्स से संगति की कामना करना जो तुम से दूर रहना चाहे, नफ़्स का अपमान करने की तरह है।

34. दानशीलता उसे कहते हैं कि ज़रूरतमंदों को उन की ज़रूरत के अनुसार दें उस से बढ़ कर फ़ुज़ूल ख़र्ची की हद तक पहुँचना दान शीलता नहीं बल्कि फ़ुज़ूल ख़र्ची में शामिल है।
35. अपना कर्तव्य दया को बनाओ कि यह इंसान की बेहतरीन हालत है।
36. अपने अंगों को मेहनत व मुशक़्क़त का आदी बनाओ। चाहे सेवा करने वाले मौजूद हों। ज़माने की घटनाओं से अगर वह न रहें तो तुम बग़ैर आथ पाँच के रह जाओगे।
37. कंजूस चाह धनी हो अपमानित होगा और दानवीर चाहे ग़रीब हो इज़्ज़तदार होगा।
38. किसी शख़्स की बात चीत ही उस की चरित्र की पहचान और अच्छे अख़लाक़ के ज़ाहिर करने का सब से बड़ा ज़रिया है।
39. तरक़्क़ी की मन्ज़िल तय करने में देर लगती है जबकि पस्ती में गिरते देर नहीं लगती जैसे एक पत्थर नीचे को तीज़ी से आता है।
40. सिर्फ़ बातें न करना चाहिए बल्कि बाअमल होना चाहिए क्यों कि बग़ैर अमल के दूसरे पर कोई असर नहीं पड़ सकता।
41. जवाब देने में जल्दी मत करो, ताकि बाद में पछताना न पड़े।

बुक़रात

(399 - ता - 469 क़०म०)

प्रसिद्ध यूनानी विज्ञानी और हकीम-"बाबाए तिब" लक़ब है। उस ने बीमारियों के कारण मालूम किए और तावीज़ गंडों और मंत्रों से इलाज का विरुद्ध किया। बुक़रात अपने छात्रों से वफ़ादारी की क़समें लिया करता था और यह क़सम अब भी मेडिकल की तालीम पाने वालों को लेनी पड़ती है।

1. दोस्तों के साथ इतना ख़ुलूस रखो कि मामूली बदलाव पर पतनशील न हो।
2. बेवक़ूफ़ किसी की सदुपदेश नहीं सुनता।
3. अगर ज़माने की मुसीबतों से सुरक्षित रहना चांहता है तो औरत के कहने पर कभी काम न करो।
4. उस शख़्स को अस्तित्व मारने से पहले मार देता है जिस शख़्स का दोस्त "हसद" हो।
5. सब्र करना बेहतरीन नेकी है।
6. जिस बात के न जानने से शर्मिन्दगी हो उस को ज़रूर

जानना चाहिए।

7. दुनिया को सराय और मौत को मेज़बान समझो, जो मिले वह खा लो जो ले लिया जाए उसे मत मांगो।
8. पहले अपने ऐब दूर करो फिर दूसरों के ऐब पर आलोचक करो।
9. इंसाफ़ से काम लोगे तो दोस्त ज़्यादा और दुश्मन कम बनेंगे।
10. किसी के ऐब तलाश मत करो। हो सकता है कोई दूसरा तुम्हारा ऐब तलाश करे।
11. बग़ैर ज़रूरत मत बोलो और नेक संगति रखो।

हकीम बतलीमूस

(दूसरी शताब्दी ईसवी में गुज़रा है)

प्रसिद्ध विज्ञानी, गणित, फलकियात और जुग़राफ़िया में माहिर। कई किताबें लिखीं जिन में "अलमुजसती" और "जुग़राफ़िया बतलीमूस" प्रसिद्ध हैं।

1. एक ज्ञानी से एक घंटा की बात चीत दस वर्ष के अध्ययन से ज़्यादा लाभदायक होती है।
2. हिकमत एक दरख़्त है, जो दिल में उगता है और जुबान से फल देता है।
3. दूसरों की घटनाओं से सदुपदेश हासिल करो वरना कोई दूसरा तुम्हारी घटनाओं से सदुपदेश हासिल करेगा।
4. हराम रोज़गार अगरचे तुम्हारे घरों और जेबों को भर देगा लेकिन तुम्हारे दिलों से ईमान ख़ाली कर देगा।
5. अगर कोई चीज़ क़ब्ज़े से निकल कर दूसरे के पास चली जाए तो यह मत कहो कि मेरा माल मेरे पास से चला गया, क्यों कि वास्तव में यह तेरा माल होता तो तेरे पास से जाने के बजाए दूसरों के पास से तेरे पास आता।
6. गुस्सा मत कर, जब तक तेरी राय गुस्से से पराजय है, उस वक़्त तक अपने आप को इंसान मत समझ।
7. उस वक़्त तक नाव के डूब जाने की फ़िक्र न कर जब तक

वह चल रही है।

8. ज़िन्दगी की ज़रूरतों को कम कर देना सब से ज़्यादा मालदारी है।
9. झूट बोलने में यह नुक़सान है कि झूटे की सच्ची बातों का भी विश्वास जाता रहता है।
10. ज़िन्दगी बग़ैर मेहनत के मुसीबत है और बग़ैर अक़्ल के हैवानियत है।
11. rhu vkneh esjsnksLr gSa (i) जो मुझ से मुहब्बत करता है (ii) जो मुझ से नफ़रत करता है (iii) जिसे मुझ से कोई वास्ता नहीं। क्यों कि पहला मुझे मुहब्बत का, दूसरा सावधानी का और तीसरा स्वयं भरोसे का पाठ सिखाता है।
12. पालीसी, बाज़ू की कुव्वत से ज़्यादा काम करती है।
13. दुनिया में इंसानी ज़िन्दगी उस दीपक की तरह है जो हवा में रखा हो।
14. जाहिल के लिए सब से बेहतर बात ख़ामोश रहना है।

फ़ीसा ग़ौरस

(500 – ता 582 क़०म०)

प्रसिद्ध यूनानी फलसफी (विज्ञानी), गणित और फलकियात में माहिर, ज्योमेट्री के कई नियम बनाए।

1. वह शख़्स जो तुम्हारे ऐबों से तुम्हें ख़बरदार करे, उस से बेहतर है जो तुम्हें ख़ुशामद करने से घमंडी बना दे।
2. पशुओं पर ज़्यादा तर बेजुबानी और इंसानों पर ज़ुबान की वजह से बलाएँ आती हैं।
3. इस बात की कोशिश करो कि बुरे कामों का तेरे दिल में ख़्याल तक न गुज़रे।
4. जिस का दीन ईमान ठीक नहीं वह ज़िन्दा रहने पर भी मुर्दे की तरह है।
5. आत्म प्रशंसा निहायत पसंदीदा मगर बुरा काम है।
6. ख़ुदा के नज़दीक बातों से ज़्यादा हुकमा के कार्य विश्वस्त हैं।
7. नेक और सदाचारी आदमी मरने के बाद भी ज़िन्दा रहता है।
8. जो तुम चाहो वह काम न करो बल्कि वह काम करो जो तुम्हें करना चाहिए।
9. गाली का जवाब न दो कि कबूतर, कव्वे की बोली नहीं बोल सकता।
10. पवित्र अस्तित्व अकेले में महफ़िल की निसबत अपने आप से ज़्यादा शर्म करता है।

देवजान्स कलबी

(323 - ता - 412 क़०म०)

यूनानी विज्ञानी जो फ़लसफ़ए कलबियत का अनुयायी था। इस फ़लसफ़े के मानने वालों का विश्वास था कि दुनिया में नेकी सब से बेहतर है और ज़िन्दगी भर उस को हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। कहते हैं कि देवजान्स कलबी दिन में चिराग़ हाथ में लिए ईमानदार आदमी की तलाश में शहर में घूमा करता था।

1. अक़लमंद वह है जो लोगों के डर से नहीं बल्कि सिर्फ़ ख़ुदा के डर से गुनाह से बचे।
2. खाने पीने के समय यह हैं कि जिन लोगों को यह हासिल और सामान मुहय्या हैं, उन को जब भूक लगे खाएँ और जिन लोगों को यह हासिल नहीं उन को जब मिले खाएँ।
3. एक धनवान और निर्धन की दोस्ती निहायत मुश्किल है।
4. अच्छे कामों से सवाब हासिल करो।
5. आप से पूछा गया तुम्हें कलबी (कुत्तों वाला) क्यों कहा जाता है, जवाब दिया इस लिए कि मैं हक़ बात को सख़्ती

से ग़लत लोगों के मुँह पर कहता हूँ। और जाहिलों पर आवाज़ें कसता हूँ।

6. जो किसी का न बन सका उसे तू भी न अपना क्यों कि वह तेरा भी न बन सकेगा।
7. ज्ञान एक ऐसा ख़ज़ाना है जिसे कोई भी चुरा नहीं सकता।
8. बादशाह वह है जो अपने दिल को क़ाबू में रखे।

अक़लीदस

यूनानी विज्ञानी और गणित में माहिर। जिसे "बाबाए गणित" माना जाता है। उस की किताब "एलमेन्ट्स" गणित के ज्ञान की पुरानी पुस्तक है।

1. ज्ञान रखने वाला अगर उस पर अमल न करे तो वह एक बीमार की तरह है जिस के पास दवा है लेकिन वह प्रयोग नहीं करता।
2. दो भाईयों में दुश्मनी न डालो क्यों कि उन में तो मेल हो ही जाएगा और फिर तुम्हें बुरा ठहराया जाएगा।
3. कम खाओ इस से तुम्हारा अस्तित्व पराजित हो जाएगा।
4. आलिम बे अमल और नेक बेपहचान उस चक्की की तरह है जो दिन रात चले लेकिन यह न जाने कि किस हाल में है।
5. जो अपने आप को दूसरों से कमतर समझे वह बहुत बड़ा ज्ञानी है।
6. जो चीज़ें नुक़सान पहुँचाएँ उन से बचने वाले थोड़े और शिफ़ा पाने वाले ज़्यादा हैं।
7. नौकर रखने में अमानत और काम की पूरी जानकारी के सिवा किसी की हरगिज़ सिफ़ारिश कुबूल न करो।
8. अपने माँ बाप के साथ नेकी करो।
9. जो शख़्स किसी ऐसी चीज़ की तारीफ़ करे जो तुम में न हो वह

ऐसी बुराई से भी संबंधित करेगा जो तुम में न होगी।

10. बुद्धिमान वह है जो कम बोले और ज़्यादा सुने और जो दिन रात के आने जाने से तंगदिल न हो।
11. बेइंसाफ़ बादशाह पर, उस दानवीर पर जो माल बेमौक़ा ख़र्च करे और उस धनवान पर जो अच्छे उपचार न रखता हो अफ़सोस करो क्यों कि जल्द ही यह बरबाद हो जाएँगे।
12. उस वक़्त नेकी पूर्णता को पहुँच जाती है जब आदमी अपने बुरा चाहने वालों का भी अच्छा चाहता है।
13. जब किसी आदमी को उस की ताक़त से ज़्यादा दुनिया मिल जाती है तो वह लोगों से बुरा सुलूक करता है।
14. अपने नफ़्स को अपने क़ाबू में रखो।
15. दूसरों के माल पर नज़र मत रखो।

❖❖❖

❖ दुनिया में किसी से दुश्मनी न करो क्यों कि उस से ज़्यादा सख़्त चीज़ कोई और नहीं है।
❖ ख़ुदा पाक व साफ़ लोगों को पसन्द करता है।
❖ ऊँचे इरादे से सिवाए ख़ुदा वंदी के हर चीज़ हासिल होती है।
❖ दुनिया से मुँह फेर लो, दुनिया तुम्हारी ग़ुलाम बन जाएगी।
❖ ऐसा विद्यावान जो नेक न हो या ऐसा नेक हो विद्यावान न हो। धर्म को इन दो लोगों से शैतान से ज़्यादा फ़साद का डर होता है।

गौतम बुद्ध

(483 क़॰म॰ - ता - 560 क़॰म॰)

बुद्धमत के प्रवर्तक, असल नाम सिद्धार्थ गौतम था।

1. सारे दुखों परेशानियों और मुसीबतों का कारण ख़ुदग़र्ज़ी, जिहालत और ठीक रास्ते से दूर रहना है इन बुराइयों को छोड़ कर तुम दुखों से मुक्ति हासिल कर लोगे।
2. नफ़्स को क़ाबू में रखो इसी में बड़ाई है।
3. इंसानी ज़िन्दगी दुखों से भरी पड़ी है। अगर उन से मुक्ति चाहते हो तो ज्ञान में दिल लगाओ।
4. इंसानियत का दूसारा नाम मुहब्बत है।
5. सुख हासिल करना चाहते हो तो संतुष्ट रहो क्यों कि संतोष सब से बड़ा सुख है।
6. अगर सात समुन्द्रों का पानी इकट्ठा कर लिया जाए और इंसानों की आँखों का पानी जमा किया जाए तो इंसानों के आँसुओं का पानी सात समुन्द्रों के पानी से ज़्यादा होगा।
7. अच्छे लोगों की निशानी मीठी बात चीत है। बुरी बात चीत तो जानवरों तक को पसन्द नहीं आती।
8. सब्र सब से बड़ी और उम्दा दुआ है।
9. नफ़रत को मुहब्बत से कम करो क्यों कि नफ़रत, नफ़रत से कभी कम नहीं होती।

10. लगन से इल्म हासिल करो। लगन की कमी से इल्म खो जाता है।
11. इंसानों की सेवा करना और वह भी सच्ची, इंसानियत की सीढ़ी है।
12. हर काम करने से पहले सोच लो और वह काम करो जिसे करने के बाद पछताना न पड़े।
13. जो चीज़ जुल्म और बेइंसाफ़ तरीक़े से हासिल हो वह ज़हर की तरह है।
14. गुनाह हो जाए तो न उसे दुहराओ न उसे छुपाओ। गुनाह का जमा करना ही तमाम दुखों की जड़ है।
15. किसी बेजान देवता के आगे सौ साल इबादत करने से बेहतर है कि कुछ घड़ियाँ किसी नेक आदमी की संगति में गुज़ार लो।
16. क़त्ल, चोरी और ज़िना, यह तीनों शारीरिक गुनाह हैं। झूट, बुरा बोलना और बकवास यह जुबान के गुनाह हैं। और दौलत की कामना, दूसरों का बुरा चाहना, सख़्ती व बेरहमी, यह ज़ेहनी गुनाह हैं।
17. इंसान पर तमाम मुसीबतें नफ़्सानी (रूह की) कामनाओं की वजह से आती हैं। इंसान को चाहिए कि उन पर क़ाबू पाए और उस का तरीक़ा यह है कि इंसान कहने, करने और इरादा व काम में नेक और सच्चा हो।

कन्फ़्यूश्स

(479 क़०म० – ता – 551 क़०म०)

चीनी फलसफी व धर्मगुरु। पाँचवीं शताब्दी कब्ल मसीह में चीन में उस के सिद्धातं का ज़ोर था।

1. एक अंधा अगर दूसरे अंधे को रास्ता बताएगा तो दोनों गड्ढे में गिरोंगे।
2. सावधान लोगों की तरह काम करो क्यों कि वह ग़लतियाँ कम करते हैं।
3. हर बुद्धिमान और अच्छा शख़्स निष्कपट होता है।
4. आँख वाला वह है जो अपने आप को देखे।
5. मीठी आवाज़ें और हसीन चेहरे गुनाह की तरफ़ बुलाते हैं।
6. सच्चाई इंसान को और इंसान सच्चाई को महान बनाता है।
7. लोगों की नज़रों में एक अत्याचारी शासक शेरों से ज़्यादा ख़तरनाक होता है।
8. इ़ज़्ज़त और दौलत नेकी के बग़ैर बेकार है।
9. अपने चरित्र को इतना ऊँचा कर लो कि छोटी छोटी तकलीफ़ें तुम्हें प्रभावित न कर सकें।
10. शिक्षा का उद्देश मिसाली इंसान की पूर्णता है।

11. इंसान सिर्फ़ कोशिश कर सकता है कामियाबी तो ख़ुदा के हाथ में है।
12. ग़लती को ग़लती जान कर भी उस का सुधार न करने वाला एक और ग़लती कर रहा है।
13. लोगों की दिल व जान से सेवा करो और उन के सामने अपना काम पेश करो, बातें नहीं।
14. जैसा तुम दूसरों से व्यवहार करोगे, वैसा ही व्यवहार, लोग तुम्हारे साथ करेंगे।
15. ख़ुद ख़ुशी का एहसास करने के बजाए हम दूसरों को इस बात का यक़ीन दिलाते हैं कि हम ख़ुश हैं।
16. माली तौर पर अपने से बेहतर लोगों के साथ दोस्ती न करो।
17. जो दूसरों की भलाई करना चाहता है, उस ने करने से पहले ही अपने लिए भलाई कर ली।

❖❖❖

❖ ख़ुदा की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह मत जाओ, बल्कि उसे अपने दिल में तलाश करो।

❖ अपने ख़ुदा से परिचित बनो क्यों कि जब मुसाफ़िर किसी शहर में पहुँचता है तो पहचान वाले की मौजूदगी उसे बहादुर और निडर बना देती है।

बाबा गुरू नानक

(1449 ई० ता 1538 ई०)

सिख धर्म के प्रवर्तक, पंजाबी ज़ुबान के एक अच्छे शायर थे। उन की लिखी हुई पुस्तक "गुरू ग्रन्थ साहब" सिखों की पवित्र पुस्तक है।

1. नेकी मेरा धर्म है।
2. अगर तुम दुनिया में मानव जाति की सेवा करोगे तो ईश्वर के यहाँ ऊँचा मर्तबा और इज़्ज़त पाओगे।
3. बदज़ुबानी मत करो क्यों कि बदज़ुबान आदमी का ठिकाना नर्क है और उस पर धिक्कार की जाएगी।
4. पहले अपने आप को सुधारो फिर तुम कोई बुराई न करोगे।
5. पवित्र लोग वह हैं जो ज़ाहिरी बदन के बजाए दिल को पवित्र रखें और ईश्वर से डरें।
6. ऐ जाहिल नादान! अपने ख़ानदान पर घमंड न कर, उस के फल बहुत बुरे हैं।
7. किसी दूसरे को बुरा न कहो, इस से तुम ख़ुद बुरा कहलाओगे।
8. जो दूसरों से कीना व नफ़रत रखता है उस का दिल कभी साफ़ नहीं हो सकता वह दिन रात चाहे जितने भी काम करे उन्हें चैन नहीं मिलता।
9. नेक काम ही तेरे काम आएँगे जिन के लिए फिर इस दुनिया में मौक़ा न मिलेगा।

10. एकता में बड़ी ताक़त होती है इस लिए एकता से नेक फ़ल मिलते हैं।
11. जिन लोगों ने प्रसन्नता और स्वीकृति को पसंद किया उन्हों ने ही अपने मालिक का भेद पाया।
12. सच्चाई, संतोष और ईमान का सिंगार करो। इस से अपने मालिक के प्यारे कहलाओगे।
13. मिल कर रहने में इतनी ख़ूबी है कि बयान में नहीं आ सकती।
14. ऐ भाई दूसरों का बुरा चाहना छोड़ दे।
15. अगर दिल मैला है तो सब कुछ नापाक है। शरीर धोने से दिल पवित्र नहीं होता।
16. जो गुनाह करे उसे आदमी समझो जो गुनाह कर के शर्मिन्दा और लज्जित हो असे वली जानों और जो गुनाह कर के इतराए उसे शैतान समझो।

❖❖❖

❖ जो चीज़ों का ज्ञान रखता हो वह विद्यावान नहीं। विद्यावान वह है जो अपने आप का ज्ञान रखता हो।

❖ बेकारी और सुस्ती इंसान को नष्ट कर देती है।

❖ जिस शख़्स ने सुब्ह से लेकर शाम तक किसी मोमिन को तकलीफ़ न दी। गोया उस ने वह दिन ख़ुदा के रसूल के साथ गुज़ारा।

❖ जो लोगों पर दयालू न हो, वह ख़ुदा की दोस्ती का दावेदार न हो।

ज़रतशत

(583 – ता – 660 क़०म०)

ईरानी विचारक और धर्मगुरु। पारसी धर्म का संस्थापक। पुस्तक "ज़न्द" लिखी जिसे पारसियों की पवित्र पुस्तक का दरजा मिला है।

1. मौत का फ़रिश्ता सिर्फ़ बदन ख़त्म करता है रूह हमेशा क़ायम रहती है।
2. प्राकर्मी और मेहनती कभी भी भूका नहीं सोता।
3. अगर इंसान कामिल है तो शैतान को भी यह ताक़त हासिल नहीं कि वह इंसान को बहका सके।
4. अगर तुम्हें अपने दुश्मनों से अपने जायज़ हक़ के लिए झगड़ना पड़े तो भी इंसाफ़ को अपने हाथ से न जाने दो।
5. जो शख़्स वादा ख़िलाफ़ है वह सारी क़ौम के लिए शर्मिन्दगी की वजह है।
6. मैं दुनिया में शान्ति क़ायम करने वालों के साथ हूँ।
7. ज़रतशत के धर्म के तीन बुनियादी उसूल हैं (i) अच्छी बोल चाल (ii) अच्छी सोच (iii) नेक काम (अच्छा चरित्र)

मानी

(215 ई० ता 273 ई०)

ईरानी फलसफी (विज्ञानी) और धर्म गुरु, मानकिज़्म धर्म का संस्थापक, सात किताबें लिखी जिन में "शाहपुरगान" प्रसिद्ध है। उस ने तस्वीरों के साथ एक किताब भी लिखी जिस का नाम "ज़ंग" या "अरज़ंग" था।

1. जानवरों से प्यार करो और उन पर जुल्म मत करो।
2. पवित्रता इख़्तियार करो।
3. इंसान दौलत, औरत और दुनियावी कामना से प्रहेज़ करे रोज़ा रखे और अपनी दौलत ख़ैरात करे।
4. बेगुनाह इंसान को न सताओ, इस से तुम भी दुखी होगे।
5. लालसा छोड़ दो।
6. अमानत में ख़यानत न करो, इस से तुम बेइज़्ज़त हो जाओगे।
7. झूट मत बोलो इस से तुम्हारा वक़ार (क़द्र) घट जाएगा।
8. कारोबार में किसी को धोका न दो और ईमानदारी से काम करो।

भगत कबीर

(1456 बकरमी ता 1575 बकरमी)

एक विचारक और बुज़ुर्ग, जिन्हें मुसलमान और हिन्दू दोनों बुज़ुर्ग मानते हैं। इन की उपासना करने वाले "कबीर पंथी" कहलाते हैं।

1. खुदा की मुहब्बत और इंसान दोस्ती में मुक्ति का ज़रिया है।
2. किसी पर ज़बरदस्ती करना जुल्म है, ऐसा मत करो। ऐसा करने वालों को जवाब देना पड़ेगा।
3. दक्षिण की तरफ़ भी और पच्छिम की तरफ़ भी हर जगह खुदा की कुदरत है, तुम अपने दिल में उस की तलाश करो, हर जगह वह मौजूद है।
4. जिस शख़्स को जिस चीज़ की धुन होती है, उस का उस की तरफ़ ही ध्यान रहता है और वह दूसरी तरफ़ ध्यान नहीं देता।
5. खुदा ने नूर पैदा कर के अपनी पूरी कुदरत से सारी मानवजाति बनाई और एक ही नूर से बनाई, ऐसे में हम किसी को कमतर या बड़ा किस तरह कह सकते हैं।

भरतरी हरी

एक शायर और नुजूमी। प्रसिद्ध पुस्तकें यह हैं। "सरंगरस्टिक" और "वाकीह पदीह"। अल्लामा इकबाल ने उस के एक शेअर का अनुवाद यूँ किया है।

फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर
मर्दे नादाँ पर कलामे नर्म व नाज़ुक बेअसर

1. जिस तरह चाँद अपने आप ही चाँदनी फैला देता है, सूरज खुद बखुद कंवल का फूल खिला देता है। उसी तरह नेक इंसान भी अपने आप दूसरों की भलाई के काम करता है।
2. अच्छी औरत वह है जिस से आराम मिले, अच्छा दोस्त वह है जिस पर भरोसा हो, अच्छा बेटा वह है जो माँ बाप का आज्ञा पालन करने वाला हो।
3. दुनिया को नष्ट होने वाला समझ कर दूसरों की भलाई में लग जा।
4. दौलत सिर्फ़ अपनी रक्षा और मुसीबत दूर करंने के लिए जमा करनी चाहिए।
5. बुद्धिमान के साथ ख़तरे में कूद जाना, बेवकूफ़ के साथ सैर पर निकल जाने से बेहतर है।
6. बग़ैर इल्म वाले लोग, बग़ैर हुनर और ख़ूबी वाले लोग और वह लोग जिन्हों ने रूहानी तरक़्क़ी भी न की, ज़मीन पर बोझ हैं और वह सिर्फ़ आम आदमी हैं।

तुलसी दास

(1532 ई० ता 1623 ई०)

हिन्दू विचारक, रामायण का लेखक, जो हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक है। दूसरी पुस्तकों में "राम गीता वली" और कोता वली" प्रसिद्ध हैं।

1. मुसीबत सब से बेहतरीन कसौटी है जिस पर दोस्त यार परखे जा सकते हैं।
2. तुलसी अपने राम को याद कर चाहे दिल लगा कर या बग़ैर दिल लगा के फ़ायदा ज़रूर होगा। जिस तरह ज़मीन में से उलटे सीधे बीज भी उग आते हैं।
3. अगर हम खुद भी दूसरों को की जाने वाली पदुपदेशों पर अमल करें तो कुछ न कुछ बन जाएँगे।
4. अस्तित्व के चक्कर में पड़ कर इंसान सब को भुला देता है।
5. ग़रीब की आह खुदा से भी सही नहीं जाती क्यों कि मुर्दा खाल के फूंकने से लोहा भी पिघल जाता है।

केखुसरू

ईरान के क्यानी ख़ानदान का प्रसिद्ध शासक। रुस्तम उस की फौज का मुख्य सिपाही था।

1. रोज़ादार, मरीज़, मुसाफ़िर और क़र्ज़दार निर्धन को बुरी बातों से माज़ूर समझो।
2. उपाय को हाथ से मत छोड़ो और बुद्धिमानी को काम में लाओ।
3. अपनी परेशानी किसी के सामने बयान न कर, क्यों कि इस से दुश्मन ख़ुश और दोस्त रंजीदा होंगे।
4. माल व दौलत को जहाँ तक मुम्किन हो अज़ीज़ रखो और मुनासिब मौक़ा पर इस्तेमाल कर के दीन व दुनिया में फ़ायदा हासिल करो।
5. बग़ैर सोचे समझे कोई काम न करो वरना बाद में परेशानी और शर्मिन्दगी होगी।
6. ताक़त के बावजूद नेकी न करने वाला हमेशा रंज में रहेगा।
7. बुद्धिमान वह है जो घटनाओं और परेशानी में भी अपने दिल को हिलने न दे और अक़्ल से उस का उपाय करे।
8. जो कोई ऐसा दोस्त तलाश करेगा जिस में कोई ऐब न हो वह हमेशा दोस्त से महरूम रहेगा।
9. अक़्ल व बुद्धी के दरख़्त का मेवा नेक काम करना है जो इसे समझता है मगर अमल नहीं करता उस की मिसाल उस बीमार की तरह है जो परहेज़ी चीज़ों के नुक़सान को जानता है मगर उन्हीं को खाता है और नष्ट होता है।

विलियम शेक्सपियर

(1564 इ० ता 1616 ई०)

अंगरेज़ ड्रामा बनाने वाला और शायर। इसे दुनिया का सब से बड़ा ड्रामा बनाने वाला माना जाता है। मैबेकथ, रुमियो ज्योलट, मर्चन्ट आफ़ वैन्स, हैमलट, इस के प्रसिद्ध ड्रामे हैं।

1. ज़िन्दा दिल सारा दिन काम कर के नहीं थकता जबकि मुर्दा दिल एक घंटे में थक जाता है। (यानी उदास दिल वाला इंसान ज़रा सा काम कर के उकता जाता है)
2. जिस चीज़ को ठीक करने के गुण न हो, उसे ख़राब मत करो।
3. जब हुस्न बोलता है तो बड़े-बड़े विद्यावान और बुद्धिमान गूँगे हो जाते हैं।
4. दोस्त वह है जो दुख दर्द में साथ दे।
5. अगर अपना चरित्र ऊँचा और मज़बूत करना हो तो कामनाओं को दबा दो और मुसीबतों को बरदाश्त करो।
6. बुद्धिमान इंसान कभी भी तकलीफ़ों पर बैठ कर रोने के बजाए तकलीफ़ों को दूर करने के उपाय में लग जाता है।
7. औरत इंसान की सब से बड़ी कमज़ोरी है।

8. औरत में घमंड हुस्न की वजह से होता है। उस की नेकी उस की तारीफ़ करने वाले पैदा करती है और उस की वफ़ा उसे देवताई सूरत में ज़ाहिर कर देती है।
9. हद दर्जे की मीठी मुहब्बत जिस समय अपना स्वभाव बदलती है तो वह बहुत कड़वी और ख़तरनाक नफ़रत की सूरत इख़्तियार कर लेती है।
10. दोस्ती इश्क़ के अलावा तमाम व्यवहार में वफ़ादारी का सुबूत देती है।
11. जो लोग इश्क़ में डूबे हुए हों उन्हें सिर्फ़ अपनी आँखों और अपने हाथों और अपने कानों पर भरोसा करना चाहिए और किसी दूसरे शख़्स पर भरोसा नहीं करना चाहिए।

❖ तुम अपनी ज़मीन से फ़सल काटो तो खेतों के कोने कोने पूरा मत काटो और कटाई के दौरान जो बालें गिर जाएँ उन्हें मत चुनो, और अपने अंगूरों के बाग़ से हर दाना मत तोड़ लो और जो दाने गिरें उन्हें मत जमा करो बल्कि उन्हें ग़रीबों और मुसाफ़िरों के लिए छोड़ दो।

(पवित्र इंजील)

राजर बैकन

(1214 ई० ता 1294 ई०)

अंगरेज़ फ़लसफ़ी (विज्ञानी) राहिब, लातीनी ज़ुबान में कई किताबें लिखीं जिन में "आन मीरर" प्रसिद्ध है।

1. अगर तुम हंसते हो तो सारी दुनिया तुम्हारे साथ हंसेगी लेकिन रोते वक़्त तुम्हें अकेला ही रोना पड़ेगा।
2. वह जो अपना तमाम माल व दौलत क़िसमत आज़माई और हुस्ने इत्तिफ़ाक़ के भरोसा पर लगाता है ज़्यादा तर वह मुहताज और कंगाल हो जाता है।
3. बड़ा बनने के लिए पहले छोटा बनों क्यों कि बड़ी-बड़ी इमारतों की बुनियाद छोटी-छोटी ईंटों से बनी होती है।
4. दूसरों पर भरोसा करने वाले कम ही कामयाब होते है।
5. किसी के गुस्से में कहे हुए शब्द मत भूलो।
6. ज्ञान से आदमी का डर और दीवानगी दूर हो जाती है।
7. बेकार बोलने से ख़ामोश रहना बेहतर है।
8. सब से ज़्यादा मालदार वह है जो न तो क़र्ज़ ले और न ही खुशामद करे।
9. दौलत ख़र्च करने के लिए मिलती है जो ख़र्च न करे वह दौलत पाने का हक़दार नहीं है।
10. भूकों और फ़ाक़ाकशों की साज़िश बहुत बुरी होती है।
11. जो लोग फ़ायदा में किसी को साझी नहीं करते उन के नुक़सानात में भी कोई साझी नहीं होता।

12. कामियाबी सिर्फ़ एक बार मिलती है जब कि नाकामियाँ बार बार हमला करती हैं।
13. मशवरा लेना बुरी बात नहीं मगर उस मशवरे पर बिना सोचे समझे अमल करना बुरा होता है।
14. हर अक़्लमंद शख़्स ज़रूरी नहीं कि अमीर भी हो, अलबत्ता वह नेक ज़रूर होगा।
15. बदला और कीना की याद दिल में न रख, क्यों कि इस से ज़ख़्म हरे रहते है।
16. जाहिल क़ौम कभी भी तरक़्क़ी नहीं कर सकती।
17. किसी चीज़ को हासिल करने के लिए कभी भी हिम्मत न हारो बल्कि लगातार असफ़लता के बाद भी कोशिश जारी रखो। आख़िरकार सफ़लता तुम्हारे क़दम चूमेगी।
18. ज़रूरत का वादा कभी भी पूरा नहीं होता।
19. अपनी हमदर्दी के घेरे को तंग मत करो और ग़ैरों से बिला वजह नफ़रत न करो।
20. जो शख़्स फुर्सत और संजीदगी से ज़िन्दगी गुज़ारना चाहता है उसे लाज़िम है कि वह अपनी आधी आमदनी ख़र्च करे।
21. दस में से नौ बुराइयाँ और तकलीफ़ें सिर्फ़ सुस्ती से पैदा होती है।
22. उस शख़्स से बचो जो अपनी बुराइयों को दूसरों के सामने घमंड के साथ बयान करता है।
23. जो ज़्यादा पूछता है वह ज़्यादा सीखता है।

वाल्टेयर

(1694 ई० ता 1778 ई०)

फ्रान्सीसी फलसफी (विज्ञानी) साहित्यकार, जो उम्र भर धार्मिक पक्षपात के विपरीत लिखता रहा। नाविल "कानदेव" प्रसिद्ध पुस्तक है।

1. हर असफ़लता के बाद सफ़लता हासिल होती है। शर्त यह है कि असफ़लता के बाद निराश न हुआ जाए।
2. नेकी करना मेरी इबादत और खुदा के आगे झुकना मेरा धर्म है।
3. बेकार मत बैठो इस से ज़िन्दगी की मुश्किलें बढ़ती हैं।
4. नेकी करने का मौक़ा एक दफ़ा और बुराई करने का सौ दफ़ा मिलता है।
5. मुझे मेरे दोस्तों से बचाओ दुश्मनों से बचने का इन्तिज़ाम मैं खुद कर लूँगा।
6. सिर्फ़ बुद्धिमान आदमी दया के क़ाबिल हालत में ज़िन्दगी बसर करता है।
7. वह ज्ञान बेकार है जो इंसान को काम करना तो सिखा दे लेकिन ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा न सिखाए।
8. मेहनत से आप तीन चीज़ों से बचे रहते हैं। (i) बेमज़ा (ii) बदी (iii) दूसरे के आगे हाथ फैलाना।

जान मिलटन

(1608 ई० ता 1674 ई०)

अंगरेज़ शायर, जो उम्र के आख़िरी हिस्से में अंधा हो गया था। "पैराडाईज़लोस्ट" (फ़िरदौस गुमशुदा) प्रसिद्ध नज़्म है।

1. मुसीबत का बोझ अच्छे ढंग से उठाने वाला ही सब से बेहतर काम कर सकता है।
2. ज़िन्दगी की बेहतरीन पूंजी अच्छी पुस्तक है।
3. गया वक़्त फिर हाथ नहीं आता क्यों कि वक़्त तेज़ी से भागता है।
4. दुश्मन पर मुहब्बत से विजय पाओ, क्यों कि ताक़त से विजय पाना ना मुकम्मल है।
5. औरत के आँसुओं का बन्द करना समुन्द्र के भयानक तूफ़ान को रोकने से ज़्यादा मुश्किल है।
6. पहले गुनाह करने पर मज़ा मालूम होता है। फिर वह आसान हो जाता है। फिर उस से ख़ुशी होने लगती है। फिर बार-बार किया जाता है फिर वह आदत बन जाता है। फिर आदमी गुसताख़ बन जाता है और कभी न पछताने का फ़ैसला कर लेता है और फिर वह तबाह हो

जाता है।

7. जंगी विजय से ज़्यादा अहम शान्ति की विजय है।
8. जहाँ भरोसे के बीज का पालन पोषण हो वहीं खुशियाँ पलती हैं।
9. मौत सोने की वह चाबी है जो जावेदाँ (हमेशा रहने वाला) नामी महल का दरवाज़ा खोल देती है।
10. पुराना तजुर्बा ही नये निर्माण का आधार होता है।
11. उस जन्नत से जिस में ऊँच नीच हो वह दोज़ख़ बेहतर है जिस में लोगों के साथ बराबरी का क़ायदा हो।
12. औरत सब से अच्छा और सब से आख़िरी आसमानी तुहफ़ा है।
13. दुनिया में अच्छी बीवी मर्दों के लिए सब से बड़ी नेमत है।

❖ अच्छा चरित्र, बुराइयों से बचने का नाम नहीं बल्कि ज़ेह्न मे बुराई करने की ख़्वाहिश तक न पैदा होने का नाम है।

(बर्नाडशा)

❖ कंजूसी, तबाह कर देती है और सदा रहने वाला ग़म देती है।

(चार्लस डिकनिज़)

हरबर्ट स्पेन्सर

(1820 ई० ता 1963 ई०)

बरतानवी फलसफी व शायर, प्रसिद्ध पुस्तक "रेकटर बेमरटन" है।

1. दुनिया में सब से आसान काम दूसरों के अन्दर कमी निकालना है और सब से मुश्किल काम अपना सुधार है।
2. सेहत के क़ानून की अवज्ञा शारीरिक गुनाह है।
3. ज़िन्दगी में सफ़लता की शर्त संजीदा, साबिर और मेहनती होना है।
4. लायक़ आदमियों का हक़ मार कर के नालायक़ आदमियों का पालन पोषण करना इंसाफ़ के गले पर छुरी फेरना है।
5. दूसरों का आदर करोगे तो कोई दूसरा तुम्हारा आदर करेगा।
6. दूसरों पर भरोसा न करो बल्कि अपनी मदद आप करो।
7. जो काम तुम खुद कर सकते हो, उस के लिए दूसरों से मदद मत मांगो।
8. बेकार लोगों के दिल शैतान का कारख़ाना बन जाते हैं।
9. इंसान का बेहतरीन अध्यापक तजुर्बा है और ज़िन्दगी की ठोकरें उस की शिक्षा का ज़रिया हैं।

10. दोस्त को अपनी बातों की उतनी ही सूचना दो कि अगर दुशमन हो जाए तो नुक़सान न पहुंचाए।
11. शान्ति चाहते हो तो कान और आँख इस्तेमाल करो लेकिन जुबान बन्द रखो।
12. जहाँ दवा की ज़रूरत हो वहाँ दुख और रोना काम नहीं दे सकते।
13. अक़्लमंद वक़्त की क़द्र उस की मौजूदगी में करते हैं और नादान वक़्त खो कर पछताते हैं।
14. ईमानदारी, वक़्त की पाबंदी, सब्र और नशाआवर चीज़ों से बच कर ही दौलत हासिल होती है और अगर यह इत्तफ़ाक़ से मिल जाए तो ज़्यादा समय तक नहीं ठहरती।
15. जिस ख़राबी को बदलना तुम्हारी कुव्वत से बाहर है उस के लिए फ़िक्र बेकार है।
16. जिस शख़्स ने अपनी औलाद के लिए दौलत छोड़ी वह क़ाबिले तारीफ़ है, लेकिन वह शख़्स जिस ने अपनी औलाद को रूपया कमाना और बचाना सिखाया वह ज़्यादा क़ाबिले तारीफ़ है।
17. जीवन क्या है? सिर्फ़ वक़्त! अगर हम वक़्त बेकार करते हैं तो गोया जीवन बरबाद करते हैं।
18. बुरी आदात की ताक़त का अंदाज़ा तब होता है जब उन्हें छोड़ने की कोशिश की जाती है।

एमरसन

(1803 ई॰ ता 1882 ई॰)

अमरीकी साहित्यकार और विचारक।

1. इंसान का बेहतरीन साथी और दोस्त पुस्तकें हैं।
2. कामियाबी का सब से बड़ा राज़ खुद पर भरोसा है।
3. अच्छी सेहत इंसान की पहली बड़ी दौलत है।
4. ख़्याल से ज़्यादा मज़बूत चीज़ पूरे संसार में नहीं।
5. जो आदमी इरादा कर ले उस के लिए कुछ भी ना मुम्किन नहीं है।
6. हर नेक आदमी अपनी जगह खुद बना लेता है।
7. स्वस्थ शरीर सब से बड़ी दौलत है।
8. अक़्ल की हद तो हो सकती है लेकिन बेअक़ली की नहीं।
9. ख़ूबसूरती को अपने अन्दर तलाश करो, यह तुम्हें और कहीं नहीं मिलेगी।
10. जितनी मेहनत से लोग जहन्नम में जाते हैं, उस से आध ी मेहनत से जन्नत में जा सकते हैं।
11. सुख और खुशी ऐसे इत्र हैं जिन्हें जितना ज़्यादा आप दूसरों पर छिड़केंगे उतनी ही ज़्यादा खुश्बू आप के अन्दर से आएगी।
12. पुस्तकों के अध्ययन से इंसान का भविष्य सुधरता है ।
13. सच्चाई बदलने वाली है जहाँ यह बढ़ती है वहाँ बदलती रहती है।

बाइरन

(1788 ई० ता 1824 ई०)

रूमानी गीतों के लिए प्रसिद्ध अंगरेज़ गीतकार। पूरा नाम "लार्डजार्ज ग्गर्डन बाइरन" था।

1. नफ़रत दिल का पागलपन है।
2. इंसान का जीवन आँसुओं और मुसकुराहटों पर आधारित है और इंसान उन के बीच पिन्डोलियम की तरह लटक रहा है।
3. ज़ुल्म करने के बजाए मज़लूम की मदद करने से ज़्यादा शुहरत मिलती है।
4. सफ़लता व कामियाबी बग़ैर कोशिश के नहीं मिलती।
5. अगर मनोभाव ही नाकामी का हो तो सफ़लता कभी भी हासिल नहीं हो सकती।
6. ख़ुलूस के बग़ैर दिल उस सीप की तरह है जिस में मोती न हो।
7. बेवकूफ़ की हंसी वह अकेली चीज़ है जो तमाम संसार को चक्कर में डाल देती है।
8. समाज में दो प्रकार के लोग हैं, सताने वाले और सताए हुए इन के मिलने से समाज बनता है।
9. किसी चीज़ को बनाने में जो वक़्त ख़र्च होता है उसे बिगाड़ने में उस वक़्त का हज़ारवाँ हिस्सा लगता है।

आस्कर वाइल्ड

(1854 ई० ता 1900 ई०)

एंगलू आइरश साहित्यकार और गीतकार, फ्रान्सीसी भाषा में प्रसिद्ध "अलमिया सलूमी" लिखा।

1. सदुपदेश (नसीहत) को सुनो और सुन कर आगे किसी और को सुना दो। इस से सदुपदेश का हक़ अदा हो जाएगा।
2. मैं जानकार अच्छे चरित्र के, दोस्त अच्छी शक्ल व सूरत के और दुश्मन बेहतरीन दिमाग़ के निर्वाचित करता हूँ।
3. जुमहूरियत की सादा और आसान तारीफ़, लोगों के डंडों को लोगों के लिए, लोगों की पीठ पर तोड़ना है।
4. अच्छा वस्त्र पहन कर गंवार और जाहिल लोग भी तमीज़दार कहला सकते हैं, तमीज़दार हो नहीं सकते।
5. सिर्फ़ ख़ामोशी के अर्थ को न समझो बल्कि ख़ामोशी कब इख़्तियार करना चाहिए यह भी जानना चाहिए।
6. अगर तुम चाहो तो अपने ख़्यालात बदल कर अपनी ज़िन्दगी बेहतर बना सकते हो।
7. दोस्त की नाकामी पर दुखित होना इतना मुश्किल नहीं जितना उस की कामियाबी पर खुश होना मुश्किल है।

बिन्जमन फ़रनीकलन

(1706 ई० ता 1790 ई०)

प्रसिद्ध अमरीकी फ़लासफ़र (विज्ञानी), सियासतदाँ, पतंग उड़ा कर आसमानी बिजली के बारे में जाँच पड़ताल का तजुर्बा उन्हीं से संबंधित है। "पूररिचर्ड एलीमिनेक" प्रसिद्ध पुस्तक है।

1. नेकी का आरंभ मुश्किल लेकिन फल बेहतर होता है जबकि बदी का आरंभ मज़ेदार और फल तकलीफ़देह होता है।
2. ज़्यादा दौलत की लालच न करो। ज़िन्दगी और सेहत थोड़ी सी आमदनी पर भी क़ायम रखी जा सकती है।
3. बेकारी इंसान के गुणों को ज़ंगआलूद कर देती है। इस लिए काम करते रहो।
4. घमंड मत करो क्यों कि घमंड के बराबर कोई चाहत ऐसी नहीं जिस का सुधार मुश्किल हो।
5. नेक नियती की कोशिश करो। इस से तुम्हारा जीवन खुशहाल हो जाएगा।
6. ज़ुबान को क़ाबू में रखो क्योंकि लापरवाही से निकल जाने वाली बात वापस नहीं आती।
7. मेहनती लोगों को कभी भूका नहीं रहना पड़ता।
8. संतुष्ट और खुशहाल रहना चाहते हो तो सच्चाई और ईमानदारी इख़्तियार करो।

9. अपना काम दिल लगा कर करो, यह कामियाबी की कुंजी है।
10. कोई भी इंसान ऐब से ख़ाली नहीं। अगर किसी के चाल चलन में ज़रा भी ऐब न हो तो वह सारे ज़माने का डाह (रश्क किया गया) बन जाए। और लोग उस से नफ़रत करने लगें।
11. बुरे काम इस लिए नुक़सानदेह नहीं कि वह वर्जित हैं बल्कि वर्जित इस लिए हैं कि वह नुक़सानदेह हैं।
12. बेहूदा बातें मत करो और बेकार बातों से बचो।
13. जो कुंजी इस्तेमाल की जाती है वह साफ़ और चमकदार रहती है यानी इंसान को हमेशा काम करते रहना चाहिए।
14. तजुर्बा एक अच्छा अध्यापक है लेकिन उस की फ़ीस बहुत ज़्यादा है इसलिए दूसरों के तजुर्बात से फ़ायदा उठाओ।
15. ज़्यादा खाना कम अक़्ल बना देता है।
16. अगर तुम धनी बनना चाहते हो तो जितना कमाओ उस से कम ख़र्च करो।
17. हर चीज़ सिर्फ़ अपने स्थान और समय के लिहाज़ से ख़ूबसूरत और बदसूरत कहलाती है।

❖❖❖❖

❖ अपनी संतान को ईमानदारी का पहला सबक़ देना ही उन की शिक्षा व सुधार का आरंभ है (रसकन)

❖ अपनी ख़ुशी के लिए दूसरों की ख़ुशी को ख़ाक मे न मिलाओ। (बरटरंडरसिल)

हन्री डेविड थोरियो

(1817 ई० ता 1862 ई०)

अमरीकी विज्ञानी व साहित्यकार, प्रसिद्ध रचना "वालडन" है।

1. सिर्फ़ नेक ही न बनों बल्कि नेकी भी किया करो।
2. हुस्न में सादगी, हुस्न को चार चाँद लगा देती है।
3. बेहतरीन राज्य वह है जो सेवा करे राज न करे।
4. ऐसी नेकी करो जिस से ज़्यादा लोगों को फ़ायदा पहुंचे।
5. इंसान अपनी कामना का ख़ुद पैदा करने वाला है।
6. अगर क़ानून अख़लाक़ के विपरीत हो तो वह कोई औचित्य नहीं रखता चाहे उसे ज़्यादा लोगों का सहयोग हासिल हो।
7. कहानी की लम्बाई उस का गुण नहीं होती बल्कि गुण तो यह है कि वह कितने ज़्यादा समय तक ज़ौक़ व शौक़ से पढ़ी जाती है।

❖❖❖

- ❖ जोश और होश बहुत कम इकट्ठा होते हैं लेकिन जिस में यह दोनों गुण जमा हों उस से कभी ग़लती नहीं होती।
- ❖ ख़ूबसूरती की तलाश में हम पूरी दुनिया का चक्कर लगा लें लेकिन वह अगर हमारे अन्दर नहीं है तो कहीं भी नहीं मिलेगी।

डाक्टर समोइल जान्सन

(1709 ई० ता 1784 ई०)

अंगरेज़ साहित्यकार, एक अंगरेज़ी वर्णमाला के सम्पादक थे और एक नाविल लिखा। "RASSELAS"

1. अच्छी चीज़ को हासिल कर लेना कोई ख़ूबी नहीं। ख़ूबी उस चीज़ को सही तौर से प्रयोग करने में है।
2. सब से बहादुर वह है जो बुरा काम करने से डरे।
3. मज़बूत संकल्प रखने वाले लोग नाकामी का मुँह कम ही देखते हैं।
4. ख़ूबसूरत औरत देखने से आँख और नेक दिल औरत देखने से दिल खुश होता है।
5. मुश्किल एक ऐसा बहाना है जिसे इतिहास कभी नहीं मानता।
6. अच्छा आदमी वह है जिस के कार्य अच्छे हों। अच्छी अच्छी बातें करने वाले कभी-कभी बदकार भी होते हैं।
7. इंसान का चरित्र इस से मालूम होता है कि वह किस चीज़ से खुश होता है।
8. सफ़लता उन्हीं को मिलती है जो उस पर विश्वास रखते हैं।
9. आदत की ज़ंजीरें देखने में मामूली नज़र आती हैं लेकिन धीरे धीरे इतनी मज़बूत हो जाती हैं कि तमाम ज़िन्दगी तोड़े नहीं टुटतीं।

राबिन्द्रनाथ टेगौर

(1861ई० ता 1941 ई०)

बंगला भाषा के बड़े शायर, बर्रे सग़ीर में नौबल पुरस्कार हासिल करने वाले पहले व्यक्ति। यह पुरस्कार पुस्तक "गीताअंजली" पर हासिल किया।

1. अगर तुम ग़लतियों को रोकने के लिए दरवाज़े बन्द कर दोगे तो सच भी बाहर रह जाएगा।
2. दिल का सुकून सिर्फ़ और सिर्फ़ सच्चाई से मिलता है।
3. बुराई के बदले में नेकी कर उसी तरह जिस तरह धूल खुद तिरस्कार उठा लेती है और बदले में फूलों का तोहफ़ा देती है।
4. हक़ जताने से कभी भी हक़ साबित नहीं होती।
5. वक़्त चेनजिंग (बदलाव) का पूंजी है।
6. किसी को कमतर और हक़ीर (तच्छ) मत जानों वरना खुद भी कमतर और हक़ीर बन जाओगे।
7. वक़्त और उम्र गंवाने के बाद तजुर्बा हासिल होता है यह मूफ़त में नहीं मिलता है।

8. बुद्धिमान बनना चाहते हो तो कम पढ़ो, ज़्यादा सोचो, कम बालो और ज़्यादा सुनो।
9. सज़ा देने का हक़ सिर्फ़ उसे है जो सज़ा देने वाले से मुहब्बत करता है।
10. ठोकरें, सिर्फ़ धर्ती से धूल उड़ाती हैं उन से फ़सल नहीं उगातीं।
11. जब मैं ख़ुद पर हंसता हूँ तो मेरे दिल का बोझ हल्का हो जाता है।
12. सदुपदेश तो हर कोई कर सकता है लेकिन दूसरे का सुधार करना मुश्किल है।
13. दौलत सिर्फ़ मेहनत, कम ख़र्ची और बुद्धी से हासिल होती है।

लियू टाल्सटाई

(1828 ई० ता 1910 ई०)

रूसी विज्ञानी व नाविल के लेखक, कई नाविल लिखे, जिन में "वार ऐन्ड पीस" और "ऐना करनैना" प्रसिद्ध हैं।

1. किसी का दिल मत दुखाओ क्योंकि तुम्हारा भी कोई दिल दुखा सकता है।
2. चरित्र मनुष्य का आइना है।
3. ईमान ताक़त और जीवन है।
4. बुरी पुस्तकें ऐसा ज़हर हैं जो शरीर को नहीं रूह को मार देती हैं।
5. चापलोस इस लिए आप की चापलोसी करता है कि वह आप को बेवक़ूफ़ समझता है जबकि आप यह सुन कर ख़ुश होते हैं।
6. विश्वास ही जीवन को हरकत देने वाली क़ुव्वत है।
7. जीवन का असल मक़सद ख़ुदाई हुकूमत का क़याम है यह सिर्फ़ ईमानदारी और सच्चाई के अपनाने से हासिल होता है।
8. फ़न, फ़नकार के एहसासात के हसीन अमल का बदलना है फ़न कोई हाथ का काम नहीं है।

मत भूल

❖ ऐ ख़ूबसूरत वस्त्र के लालची, कफ़न को याद रख।

❖ बंगला नुमा मकान के दीवाने, क़ब्र का गढ़ा मत भूल।

❖ ऐ उम्दा ग़िज़ा के शौक़ीन, कीड़े मकोड़ों की ख़ूराक बनना याद रख।

❖ ईमान की दौलत से दुनिया की दौलत को बेहतर समझने वाले, याद रख, मौत के वक़्त हर चीज़ तुझ से ज़बरदस्ती छीन ली जाएगी।

❖ ख़ुदा के वास्ते दुनिया की मुहब्बत दिल से निकाल इस से पहले कि तुझे दुनिया से निकाल कर क़ब्र में डाल दिया जाए।

❖ क्यों कि जब मौत का वक़्त आता है तो न ही एक घड़ी पीछे होता है और न ही एक घड़ी आगे। (अल कुरआन)

ज़रूर करो

❖ हर हालत में सदुपदेश (नसीहत)

❖ जवानी में पूजा

❖ माँ बाप की सेवा

❖ दस्तरख़्वान को बड़ा

❖ दान और ख़ैरात

❖ सच्चे दोस्त की तलाश

❖ हर बड़े का आदर

❖ आख़िरत हासिल करने की कोशिश

नहीं चलती

- ❖ जाहिलों के सामने अक़्लमंद की दलील (बहस)
- ❖ मालदारों की बैठक में ग़रीब की बात
- ❖ ख़्यालात की दुनिया में किसी की हुकूमत
- ❖ ज़ालिम के सामने कोई बहस
- ❖ मौत के सामने कोई हिकमत
- ❖ बेईमान और झगड़ालू की दुकान
- ❖ भाषण के आगे कोई उपाय

दोस्त की मदद

- ❖ न कहे और कर दे यह गुण जवाँ मर्दों के हैं।
- ❖ कहे और न करे यह गुण कपटाचारी के हैं।
- ❖ कहे और कर दे यह गुण सौदागरों के हैं।
- ❖ न कहे और न किसी को करने दे, यह गुण कम हिम्मतों के हैं।
- ❖ न करे और न किसी को करने दे, यह गुण कमीनों के हैं।
- ❖ थोड़ा करे और बहुत एहसान जताए यह गुण कमीनों के हैं।
- ❖ बहुत करे और भूल जाए यह गुण महान लोगों के हैं।

बेवकूफ़ी की निशानी है

- ❖ बग़ैर नेकी और इबादत के आख़िरत में सवाब व जन्नत की उम्मीद।
- ❖ खुद बेवफ़ाई की आदत होते हुए दूसरों से वफ़ा की उम्मीद।
- ❖ बुरा अख़्लाक़ या कंजूसी के होते हुए सच्चा दोस्त मिलने

की उम्मीद।

❖ आराम की चाहत और सुस्ती के साथ मुराद पाने की उम्मीद।

❖ बीवी से रोज़ लड़ने के बावजूद घर में चैन व राहत की उम्मीद।

❖ औलाद को धार्मिक शिक्षा व प्रशिक्षण न देने के बावजूद आज्ञा पालन की उम्मीद।

❖ बीमारी में परहेज़ न करने के साथ तन्दुरूस्ती की उम्मीद।

बेहतर है

❖ बदकार और बुरे आदमी की संगति से साँप की संगति।

❖ झगड़ा मोल लेने से ग़म का खा लेना।

❖ बेग़ैरती की ज़िन्दगी से इज़्ज़त की मौत।

❖ बेमौक़ा बोलने की आदत से गूँगा होना।

❖ हराम के माल की मालदारी से ग़रीबी।

❖ छिछोरे आदमी की मदद और हदिया से फ़ाक़ा।

❖ डर व अपमान के हलवे से आज़ादी की ख़ुश्क रोटी।

बेहतरीन नेकी और शराफ़त है

❖ क़ाबू पा कर माफ़ करना।

❖ बीवी बच्चों वाले निर्धन की पोशीदा तौर से मदद।

❖ क़र्ज़ (जिस को कोई न जानता हो) और हक़ को अदा कर देना।

- ❖ हक़ पर होते हुए झगड़ा मिटाने के लिए ख़ामोश हो जाना।
- ❖ कमज़ोर और मज़लूम की हिमायत करना।
- ❖ जहाँ कोई न कह सके और ज़रूरत हो वहाँ हक़ बात कह देना।
- ❖ बुराई पाने के बावजूद रिश्तादारों के साथ एहसान व सुलूक करते रहना।

मुंतज़िर रहे

- ❖ ज़्यादा खाने वाला बीमारी का
- ❖ बदचलन (दुराचारी) यारों वाला बरबादी का
- ❖ चुगुलख़ोरी करने वाला ज़िल्लत व रूस्वाई का
- ❖ माँ बाप की आज्ञा पालन न करने वाला अपनी सनतान की आज्ञा पालन न करने और ग़रीबी का।
- ❖ ससुर और सास से बुरा व्यवहार करने वाला अपने दामाद का।
- ❖ ज़ुल्म करने वाला अपनी बरबादी का
- ❖ पड़ोसी को तकलीफ़ पहुंचाने वाला जल्द ख़ुदा के क़ह्र व अज़ाब का।

ज़ाहिर मत कर

- ❖ किसी का ऐब
- ❖ दिल का भेद
- ❖ अमानत बात
- ❖ पूरी ताक़त

- सफ़र करने की दिशा
- अपनी तिजारत
- ज़्यादा ज़रूरत

दौलत

मुसलमानों के लिए ऐसी है जैसे कशती के लिए पानी।
पानी के लिए लाज़िम है कि कशती से बाहर रहे।
अन्दर न आए, बाहर रहेगा तो नाव को तैराएगा, अन्दर आएगा तो डुबो देगा।
इसी तरह दौलत की मुहब्बत
इंसान के दिल से बाहर रहे
तो अल्लाह का फ़ज़्ल, और दिल में घुस आए
तो अल्लाह का अज़ाब

कुबूल कर ले

- नसीहत की बात चाहे कड़वी हो
- भाई का आपत्ति चाहे दिल न माने
- दोस्त का हदिया चाहे हक़ीर हो
- ग़रीब की दावत चाहे तकलीफ़ हो
- माँ बाप का हुक्म चाहे नागवार हो
- अपनी ग़लती चाहे ज़िल्लत हो
- नेक बीवी की मुहब्बत चाहे बदसूरत हो

आज़माया जाता है

- बहादुर मुक़ाबिले के वक़्त

- ❖ मुस्तक़िल मिज़ाज मुसीबत के वक़्त
- ❖ ईमानदार ग़रीबी के वक़्त
- ❖ औरत की मुहब्बत फ़ाक़ा के वक़्त
- ❖ दोस्त ज़रूरत के वक़्त
- ❖ सब्र करने वाला गुस्से के वक़्त
- ❖ शरीफ़ संबंध टूटने के वक़्त

हार मान ले

- ❖ ज्ञान व हुनर को ज़ाहिर करने में उसताद से
- ❖ जुबान चलाने में औरत से
- ❖ बड़ी आवाज़ से बोलने में गधे से
- ❖ बहस करने में जाहिल से
- ❖ खाने पीने में साथी से
- ❖ माल ख़र्च करने में शेख़ीख़ोर से

दोस्ती मत कर

- ❖ गर्ज़मंद और लालची से
- ❖ बदकार और मक्कार से
- ❖ दोस्त के दुश्मन और दुश्मन के दोस्त से
- ❖ छिछोरे और शेख़ीख़ोर से
- ❖ अंजान और कंजूस से
- ❖ बेवकूफ़ और झूटी गवाही देने वाले से
- ❖ जिस शख़्स से माँ बाप मना करें

दूर भाग

❖ बुरी संगति से
❖ तुहमत व इल्ज़ाम की जगह से
❖ झगड़े और मुक़द्दमाबाज़ी से
❖ सम्धियाना के पड़ोस से
❖ नशाबाज़ों की मजलिस से
❖ ग़ीबत करने और सुनने से
❖ गंदे नाविलों और रिसालों (पत्रिका) से
❖ अमीर से, जब भूका हो जाए
❖ कमीन से जब अमीर हो जाए

मत भूल

❖ अपनी मौत को
❖ खुदा को
❖ दूसरे के क़र्ज़ को
❖ अपने वादे को
❖ माँ बाप के उपदेश को
❖ ज़िन्दगी के सही मक़सद को
❖ रिश्तेदारों और दया को

दोस्ती के क़ाबिल है

❖ दूसरों का ऐब छुपाने वाला
❖ क्षमायाचना को क़ुबूल करने वाला

- ❖ एहसान कर के भूल जाने वाला
- ❖ अक़्लमंद जो अक़्ल व हिकमत की बातें सिखाता हो
- ❖ वह नेक शख़्स जिस के दिल में दुनिया की मुहब्बत न हो और मालदारों के दरवाज़ों के चक्कर न काटता हो।
- ❖ जो बेग़र्ज़ हो और अल्लाह के लिए दोस्ती रखता हो।
- ❖ जो कभी झूठ न बोलता हो और माँ बाप का आज्ञा पालन करने वाला हो।

न दे

- ❖ पड़ोसी को तकलीफ़
- ❖ बीवी को ताना
- ❖ किसी को ग़लत मशवरा
- ❖ बिला इजाज़त दूसरे की चीज़
- ❖ माल के पीछे इज़्ज़त
- ❖ औरत को ज़्यादा आज़ादी
- ❖ बग़ैर सोचे समझे जवाब

बयान मत कर

- ❖ बग़ैर जाँच पड़ताल की बात
- ❖ ख़ुदग़र्ज़ के सामने अपनी मुसीबत
- ❖ हासिद (जलन रखने वाला) के सामने अपनी आमदनी
- ❖ किसी के सामने अपनी बेहयाई के क़िस्से
- ❖ कमज़ोर के सामने उस की कमज़ोरी
- ❖ बीवी के सामने ग़ैर औरत की तारीफ़

❖ अपनी ज़ुबान से अपनी ख़ूबियाँ

मत बढ़ा

❖ बात

❖ क़र्ज़

❖ ऐश व आराम का सामान

❖ ज़्यादा लोगों से बेतकल्लुफ़ी

❖ बुरे कामों का बोझ

❖ पड़ोसी से दुश्मनी

❖ आमदनी से ज़्यादा ख़र्च

दूर रहेगा

❖ बुरे मिज़ाज वाला मुहब्बत से

❖ बेईमान इ़ज़्ज़त से

❖ बे औलाद ख़ुश नसीबी से

❖ लालची इतमीनान से

❖ कंजूस सच्चे दोस्त से

❖ आराम चाहने वाला तरक़्क़ी से

❖ दौलत जमा करने वाला दिल के चैन से

मत मार

❖ माँ का दिल

❖ किसी का दिल

❖ बच्चे के चेहरे और सिर पर

❖ दूसरे के बच्चे को

❖ पड़ोसी के पालतू जानवर को

मत कर

❖ बग़ैर तजुर्बा के किसी पर भरोसा

❖ बग़ैर मशवरा के कोई काम

❖ किसी पर ज़ुल्म

❖ ज़िना (हराम कारी)

❖ हक़ बात कहने से परहेज़

❖ किसी की बुराई की तलाश

❖ रिश्तेदारों से रिश्ता तोड़ना

❖ पीठ पीछे बुराई

❖ ख़ूब सोचे समझे बग़ैर औरत के कहने पर अमल से

❖ ज़रूरतमंद रिश्तेदार को नाउम्मीद करने से

आती है

❖ फ़ुज़ूलख़र्ची करने से ग़रीबी

❖ मेहनत व ईमानदारी और कम ख़र्ची से दौलत

❖ बेअदबी करने से बदनसीबी

❖ यतीम का, विधवा का और परिचित आदमी का माल नाहक़ खाने सेबरबादी

❖ बड़ों की संगति में बैठने से अदब व अक़्ल

❖ ग़ीबत करने और सुनने से बीमारी

❖ मुसीबत व तकलीफ़ में सब्र करने और शुक्र करने से चैन व सुकून।
❖ झूठ बोलने से रोज़ी में कमी

मत ठुकरा

❖ माँ बाप की मुहब्बत
❖ मिलती हुई रोज़ी
❖ खाने पीने की चीज़ें
❖ छोटी से छोटी नेमत्त
❖ बहेन की मुहब्बत
❖ अपने भला चाहने वालों की बात

शिकायत मत कर

❖ अपनी क़िस्मत की और ज़माने की
❖ औलाद के सामने अपने बड़ों की
❖ अपना ज़ाती मकान होते हुए मकान की तंगी की
❖ कभी भूल कर भी माँ बाप और उसताद की
❖ ग़ैर के सामने अपने दोस्त की
❖ बीवी के सामने अपने दोस्त की
❖ चले जाने के बाद अपने मेहमान की

नहीं खाता

❖ शेर घास, अगरचे भूका मर जाए
❖ बहादुर पीठ पर वार, अगरचे जान चली जाए।

- ❖ ऊँचे ख़ानदान वाला शरीफ़ आदमी रिशवत, अगरचे बहुत बड़ी हो।
- ❖ अक़्लमंद बग़ैर भूक के खाना, अगरचे बहुत लज़ीज़ हो।
- ❖ समझदार आदमी किसी का दिमाग़, अगरचे ख़ाली हो।
- ❖ नेक आदमी नाहक़ पराया माल, अगरचे किसी को ख़बर न हो।
- ❖ बुलंद हिम्मत बेग़ैरती की रोटी, अगरचे आसान हो।

इन से भेद मत कह

- ❖ जिस के ख़िलाफ़ कभी तूने फ़ैसला दिया हो।
- ❖ जिस की भलाई तेरी बुराई में हो।
- ❖ जिस को आज़माया न हो।
- ❖ जिस की तबीयत में शरारत हो।
- ❖ जो तेरी तरफ़ से निराश हो गया हो।
- ❖ जो तेरे दुश्मन के पास बैठता हो।
- ❖ जो औरत या लड़का हो।

मत चला

- ❖ बड़ों के सामने ज़ुबान।
- ❖ बात करते में आँखें और हाथ।
- ❖ जान कर खोटा सिक्का।
- ❖ मुहल्ले और बाज़ार में तेज़ सवारी।
- ❖ अपनी तरफ़ से कोई बुरी रस्म।
- ❖ दूसरों के बीच अपनी बात।
- ❖ कभी किसी को ग़लत रास्ता पर।

सात लोग

क़यामत के दिन सात लोग अर्श के साया के नीचे होंगे कि उस दिन कोई और साया नहीं होगा।

(i) न्यायवान शासक (ii) छुपा कर दान करने वाला (iii) नेक नवजवान (iv) मस्जिद से दिल लगाने वाला (v) तनहाई में खुदा का डर रखने वाला (vi) अल्लाह के लिए दोस्ती रखने वाला (vii) ख़ूबसूरत औरत के कहने पर सिर्फ़ खुदा के डर की वजह से ज़िना से बचने वाला।

8 चीज़ें

आठ चीज़ें ऐसी हैं जो सेर नहीं होती हैं।

(i) ज़मीन बारिश से (ii) ज्ञानी, ज्ञान से (iii) दरिया, पानी से (iv) औरत, मर्द से (v) आँख, देखने से (vi) मांगले वाला, मांगने से (vii) आग, लकड़ियों से (viii) लालची, माल के जमा करने से।

9 आदतें

हक़्तआला को 9 लोगों से जुड़ी हुई 9 आदतें निहायत नापसन्द हैं।

(i) कंजूस मालदारों से (ii) लालच, ज्ञानियों से (iii) घमंड, फ़क़ीरों से (iv) दिखावा, नेकों से (v) बेशर्मी, औरतों से (vi) दुनिया की मुहब्बत, बूढ़ों से (vii) काहिली, नवजवानों से (viii) जुल्म, हुकमरानों से (ix)

नामर्दी, धर्म योद्धा से।

10 ख़तरनाक ग़लतियाँ

1. राज़ की बात किसी दूसरे को बता कर उस से किसी और को न कहने की प्रार्थना करना।
2. अपनी आमदनी से बढ़ कर ख़र्च करना और ख़ुशहाली की उम्मीद रखना।
3. मुश्किल वक़्त में लोगों के काम न आना और उन से हमदर्दी की उम्मीद रखना।
4. ख़ुद को सब से ज़्यादा अक़्लमंद और बेहतर समझना।
5. माँ बाप का आज्ञापालन और सेवा न करना और अपनी औलाद से इस की उम्मीद रखना।
6. यह ख़्याल करना कि तन्दुरूस्ती, दौलत और ख़ूबसूरती हमेशा रहेगी।
7. जिसे एक बार आज़माया हो उसे दोबारा आज़माना।
8. बेकारी में ख़्याली पुलाव पकाना और मस्त रहना।
9. इस ख़्याल से ऐब करना कि दो-चार बार कर के छोड़ दूंगा।
10. हर किसी से बदी करना और ख़ुद आराम में रहने की उम्मीद करना।

4 चीज़ें

कभी भी इन चार चीज़ों को थोड़ा न समझो।

(i) क़र्ज़ (ii) मर्ज़ (iii) दुश्मनी (iv) आग

ज्ञान

हज़रत अली से किसी ने पूछा कि हम दस आदमी हैं। हमारा सवाल तो एक ही है हम जवाब अलग अलग चाहते हैं और सवाल यह है। "ज्ञान बेहतर है या माल" हज़रत अली ने जवाब दिया।

❖ ज्ञान बेहतर है।

1. क्यों कि ज्ञान अम्बिया की मीरास है और माल फ़िरऔन व क़ारून का तरका है।
2. क्यों कि ज्ञान हरदिल अज़ीज़ होने का कारण है और माल से बेशुमार दुश्मन पैदा हो जाते हैं।
3. क्यों कि ज्ञान को चोरी का कोई डर नहीं जबकि माल को हर वक़्त डर है।
4. क्यों कि ज्ञान जितना पुराना हो उसे कोई नुक़सान नहीं और माल देर तक पड़ा रहे तो पुराना हो जाता है।
5. क्यों कि ज्ञान वाला इज़्ज़तदार कहलता है और मालदार कभी कंजूस भी कहलाता है।
6. क्यों कि ज्ञान ख़र्च करने से बढ़ता है और माल ख़र्च करने से घटता है।
7. क्यों कि क़यामत के दिन ज्ञान पर कोई हिसाब न होगा और माल का हिसाब देना होगा।
8. क्यों कि ज्ञान से दिल रौशन होता है और माल से कभी दिल सियाह भी हो जाता है।
9. क्यों कि ज्ञान तेरी हिफ़ाज़त करता है और माल की तुझे

हिफ़ाज़त करनी पड़ती है।

10. क्यों कि ज्ञान की ज़्यादती से आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया" मा अबदनाका हक़्क़ा इबादतिका" कहा और माल की ज़्यादती से फ़िरऔन ने खुदाई का दावा किया।

दस चीज़ें

दस चीज़ें अपने मुक़ाबिल दस चीज़ों को खा जाती हैं।

1. तौबा, गुनाहों को खा जाती है
2. झूठ रोज़ी को खा जाता है
3. बुराई, अमल को खा जाती है
4. ग़म, उम्र को खा जाता है
5. दान बला को खा जाता है
6. गुस्सा अक़्ल को खा जाता है
7. शर्म, दानशीलता को खा जाती है
8. नेकी, बदी को खा जाती है
9. जुल्म इंसाफ़ को खा जाता है
10. घमंड ज्ञान को खा जाता है

तौबा की क़िस्में

तौबा की छः क़िस्में हैं

1. दिल व ज़ुबान से तौबा करना
2. आँख की तौबा
3. कान की तौबा
4. हाथ की तौबा
5. पाँव की तौबा
6. अस्तित्व की तौबा

सब से ज़्यादा कौन?

प्रश्नः आदमियों में सब से ज़्यादा अक़्लमंद कौन है?
उत्तरः गुनाहों को छोड़ने वाला।
प्रश्नः आदमियों में सब से ज़्यादा होशयार कौन है?
उत्तरः जो किसी चीज़ से परेशान न हो।
प्रश्नः आदमियों में सब से ज़्यादा धनी कौन है?
उत्तरः कम ख़र्च करने वाला।
प्रश्नः आदमियों में सब से ज़्यादा मोहताज कौन है?
उत्तरः कम ख़र्ची को छोड़ने वाला।

मुम्किन नहीं कि

❖ जैसी संगति में बैठे वैसा ही न बने।
❖ हर काम में जल्दी करे और नुक़सान न अठाए।
❖ दुनिया से दिल लगाए और पछतावा न हो।
❖ हिम्मत व हौसला को आदत बनाए और मुराद को न पहुंचे।
❖ ज़्यादा बातें करे और नुक़सान न उठाए।
❖ औरतों की संगति में बैठे और रूसवा न हो।
❖ दूसरों के झगड़ों में पड़े और फिर आफ़त न आए।

ऐ नफ़्स!

ऐ नफ़्सः अल्लाह तआला के दिए पर खुश रह, वरना कोई नया मालिक तलाश कर ले जो इस से भी ज़्यादा दे।

ऐ नफ़्सः अल्लाह तआला ने जिन बातों से मना किया है, उन

से दूर रह, वरना उस की हुकूमत से बाहर चला जा।

ऐ नफ़्सः अगर तू गुनाह पर आमादा है तो ऐसी जगह तलाश कर जहाँ अल्लाह तआला तुझे देख न सके वरना गुनाह से दूर रह।

ऐ नफ़्सः अल्लाह तआला की इबादत करता रह, वरना उस की दी हुई रोज़ी न खा।

ऐ नफ़्सः अल्लाह की मानवजाति के साथ अच्छे अख़लाक़ और मुहब्बत से पेश आ, वरना अपनी जुबान बन्द रख और किसी से संबंध न रख।

वही अव्वल, वही आख़िर

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान

5 बातें

रसूले अकरम स० ने फ़रमाया। "क़यामत के दिन इंसान के क़दम अपनी जगह से हट न सकेंगे जब तक उस से पाँच बातों के बारे में पूछ ताछ न कर ली जाएगी।

(i) उर्म किन कामों में गुज़ारी?

(ii) जवानी की ताक़तें कहाँ ख़र्च हुईं?

(iii) माल कहाँ से कमाया?

(iv) माल कहाँ ख़र्च किया?

(v) जो ज्ञान उसे हासिल हुआ उस पर कहाँ तक अमल किया?

5 चीज़ों को 5 चीज़ों से पहले ग़नीमत जानों

रसूले मक़बूल स० ने फ़रमाया। 5 चीज़ों को 5 चीज़ों से पहले ग़नीमत जानों।

(i) जवानी, बुढ़ापे से पहले

(ii) सेहत, बीमारी से पहले

(iii) ख़ुशहाली, ग़रीबी से पहले

(iv) फ़राग़त मशग़ूलियत से पहले

(v) ज़िन्दगी, मौत से पहले

दान है

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:-
एक बार सुबहानल्लाह कह देना दान है।
एक बार अल्लाहुअकबर कह देना दान है।
एक बार अलहमदुलिल्लाह कह देना दान है।
एक बार लाइलाहा इल्लल्लाह कह देना दान है।
भलाई का हुक्म देना दान है।
बुराई से रोकना दान है।

4 चीज़ें

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। "जिसे चार चीज़ें मिल गईं उसे दुनिया व आख़िरत की भलाई हासिल हो गई।

(i) शुक्र गुज़ार दिल
(ii) ख़ुदा को याद करने वाली ज़ुबान
(iii) मुसीबत पर सब्र करने वाला बदन
(iv) ऐसी बीवी जो अपनी जान और शौहर के माल में ख़यानत नहीं करती।

तीन काम

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। "जब इंसान मर जाता है तो उस के अमल ख़त्म हो जाते हैं मगर तीन क़िस्म के अमल बाक़ी रहते हैं।

(i) सदक़ए जारिया (दान व ख़ैरात की ऐसी शक्ल जिस से लोग लम्बे समय तक फ़ायदा उठाते रहें।)

(ii) ऐसा ज्ञान जिस से फ़ायदा उठाया जाता रहे।

(iii) ऐसी नेक औलाद जो उस के लिए दुआ करती रहे।

दो आँखें

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। "दो आँखें ऐसी हैं जो जहन्नम की आग से सुरक्षित रहेंगी।"

(1) वह आँख जिस में ख़ुदा के डर से आँसू आ जाए।

(2) वह आँख जो रात भर अल्लाह की राह में पहरा दे।

तीन बातें

हुज़ूरे अकरम का इरशाद है। "तीन बातों की गिनती ईमानी अख़लाक़ में होती है।

(i) जब गुस्सा आए तो इंसान हार कर ग़लती में न डूब जाए।

(ii) जब ख़ुशी हो तो ख़ुशी की ज़्यादती उसे हक़ के रास्ते से भटका न दे।

(iii) जब क़ुदरत व अधिकार पाए तो वह चीज़ न ले जिस पर उस का कोई हक़ नहीं है।

निजात और हलाकत

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। "तीन बातें निजात देने वाली हैं और तीन हलाकत में डालने वाली। निजात देने वाली बातें यह हैं।

(i) खुले और छुपे अल्लाह से डरना।

(ii) ख़ुशी और नाख़ुशी (हर सूरत में) हक़ बात कहना।

(iii) ग़रीबी हो या ख़ुशहाली (हर हालत में) बराबरी की राह

पर चलना।

हलाकत में डालने वाली तीन बातें यह हैं।

(i) ऐसी ख़्वाहिश जिस का इंसान पालन करने वाला और ग़ुलाम बन कर रह जाए।

(ii) ऐसी लालच जिसे पेशवा मान लिया जाए।

(iii) सिर्फ़ अपनी राय मानना (फ़रमाया यह तीसरी बात इन तीनों में ज़्यादा ख़तरनाक है)

माँ बाप से भलाई

आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है। "माँ बाप की मृत्यु के बाद उन से भलाई की चार सूरतें हो सकती हैं।

(i) उन के लिए दुआ व इस्तिग़फ़ार

(ii) उन के किए हुए प्रतिज्ञा (वसिय्यत, वादा) को पूरा करना

(iii) उन के दोस्तों और मिलने वालों से अदब व एहतराम से पेश आना।

(iv) उस रिश्ते को मिलाना जो उन की तरफ़ से तुम्हारे साथ संबंध रखता हो, (यानी चचा, फूफी, मामू, ख़ाला, ऐसे रिश्तों का पूरा पूरा लिहाज़ करना)

तीन गुनाह

आँहज़रत स० ने फ़रमाया। "अल्लाह तआला जिस गुनाह को चाहता है (सज़ा के वास्ते) क़यामत तक के लिए छोड़ देता है मगर तीन क़िस्म के गुनाह ऐसे हैं जिन की इंसान को मौत से पहले सज़ा भुगतनी पड़ती है।

(i) बग़ावत, सरकशी (ii) माँ बाप का आज्ञा पालन न करना (iii) रिश्तों को तोड़ना

कपटाचारी हैं

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है। "जिस में चार बातें पाई जाएँ वह खरा कपटाचारी है और जिस में उन में से एक बात पाई जाए तो उस में कपट की एक निशानी है, यहाँ तक कि वह उस को छोड़ दे।

(i) जब उस के पास अमानत रखी जाए तो ख़्यानत व बेईमानी करे।

(ii) जब बात करे तो झूट बोले

(iii) जब अहद व वादा करे तो तोड़ डाले

(iv) जब किसी से झगड़ा हो तो गंदी बातें और गाली देने पर उतर आए।

पाक कर

उम्मे मअबद से रिवायत है मैं ने रसूले अकरम स० को फ़रमाते हुए सुना।

"ऐ मेरे अल्लाह! मेरे दिल को मतभेद (बिगाड़) से, मेरे कामों को दिखावा से, मेरी जुबान को झूट से, और मेरी आँख को ख़यानत से पाक कर। यक़ीनन तू आँखों की ख़यानत और दिलों के भेद को जानता है।